



प्रारंभिक इस्लामी स्रोत और प्रामाणिकता की
समस्या इस्लामी प्रारंभिक स्रोतों की प्रामाणिकता का
प्रश्न – एक आलोचनात्मक, पांडुलिपीय और
इतिहासलेखनात्मक अध्ययन



भूमिका / लेखक का वक्तव्य

यह पुस्तक इस्लाम के आरंभिक स्रोतों पर कई वर्षों तक चली निरंतर, पद्धतिगत और आलोचनात्मक शोध का परिणाम है। इसे लिखने का उद्देश्य न तो उत्तेजना पैदा करना है, न किसी की आस्था को ठेस पहुँचाना, और न ही धार्मिक परंपराओं को ध्वस्त करना; बल्कि ऐतिहासिक दावों की जाँच उन्हीं मानकों पर करना है जो अन्य सभी सभ्यताओं, धर्मों और पाठ्य परंपराओं पर लागू किए जाते हैं।

इस्लामी परंपरा स्वयं को अद्वितीय रूप से संरक्षित, निरंतर और ईश्वरीय संरक्षण में सुरक्षित बताती है। किंतु ऐसे दावे मूलतः ऐतिहासिक दावे हैं—और इतिहास न तो विरासत, न श्रद्धा, और न ही सर्वसम्मति पर चलता है, बल्कि प्रमाणों पर आधारित होता है। जब कुरआन, सीरत साहित्य, हदीस संकलन, विधिक स्कूल और सत्ता-सिद्धांतों की जाँच आधुनिक इतिहासलेखन की पद्धतियों से की जाती है, तो एक भिन्न चित्र उभरता है: क्रमिक गठन, पश्चात् कैननाइज़ेशन, राज्य-प्रायोजन, और कथात्मक समेकन—जो मुख्यतः अब्बासी काल में घटित हुआ।

यह अध्ययन जानबूझकर आस्था-मूल्य को ऐतिहासिक सत्यापन से अलग करता है। कोई पाठ आस्थावानों के लिए धार्मिक महत्व रख सकता है, और फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से जटिल, मध्यस्थित और अपारदर्शी हो सकता है। भक्ति को दस्तावेज़ी साक्ष्य के साथ गड्ढमड्ड करना विद्वत्ता का त्याग है।

इस पुस्तक का केंद्रीय प्रतिपादन सरल किंतु दूरगामी है:

इस्लाम के मूलभूत ग्रंथ और संस्थाएँ परंपरागत दावों की तुलना में कहीं बाद में, और निरंतर ईश्वरीय संप्रेषण के बजाय मानवीय ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के माध्यम से अपने अंतिम, प्राधिकृत रूप तक पहुँचीं।

यह अध्ययन पांडुलिपि साक्ष्यों, गैर-मुस्लिम समकालीन स्रोतों, आंतरिक पाठ्य विश्लेषण, तथा कुरआनी अध्ययन, प्रारंभिक इस्लामी इतिहास और इतिहासलेखन के अग्रणी आधुनिक विद्वानों के निष्कर्षों पर आधारित है। यह पाठकों से यह नहीं पूछता कि उन्हें क्या विश्वास करना चाहिए—बल्कि यह प्रश्न करता है कि क्या प्रचलित दावे आलोचनात्मक परीक्षण पर खरे उतरते हैं।

यदि यहाँ प्रस्तुत निष्कर्ष असहज लगें, तो वह असहजता शत्रुता से नहीं, बल्कि ईमानदारी से उत्पन्न होती है। इतिहास भक्ति के आगे नहीं झुकता, और विद्वत्ता परंपरा के आगे समर्पण नहीं करती-

प्रारंभिक इस्लामी स्रोत और प्रामाणिकता की समस्या

इस्लामी प्रारंभिक स्रोतों की प्रामाणिकता का प्रश्न —

एक आलोचनात्मक, पांडुलिपीय और इतिहासलेखनात्मक अध्ययन



परिचयात्मक अध्याय

(पृष्ठभूमि, मूल समस्या और अनुसंधान की पद्धति)

इस्लामी इतिहास और कुरआन के ग्रंथों को प्रचलित धार्मिक विमर्श ने सदियों से एक ऐसी “स्वीकृत सत्यता” के रूप में प्रस्तुत किया है, जिस पर प्रश्न उठाना न केवल अप्रिय बल्कि अक्सर असहनीय माना गया। इस दृष्टिकोण के अनुसार, इस्लाम सातवीं शताब्दी में एक पूर्ण, स्पष्ट और प्रारंभ से ही संगठित दिव्य धर्म के रूप में प्रकट हुआ, और उसकी शिक्षाएँ, ग्रंथ तथा ऐतिहासिक परंपराएँ बिना किसी व्यवधान के शब्दशः हम तक पहुँचीं।

इसके विपरीत, आधुनिक अकादमिक शोध—विशेषतः पाठालोचन, पांडुलिपि अध्ययन, तुलनात्मक इतिहास और गैर-इस्लामी समकालीन स्रोतों के प्रकाश में—इस विरासत में मिली धारणा की पुनः जाँच और समीक्षा की तीव्र आवश्यकता महसूस करता है।

हाल के दशकों में अनेक गंभीर विद्वानों और विशेषज्ञों ने संकेत किया है कि इस्लामी परंपराओं का एक बड़ा भाग—विशेषकर कुरआन का संकलन, सीरत और मगाज़ी की संरचना, हदीस-संग्रहों का क्रम, तथा फ़िक्ही और कलामी प्रणालियों का गठन—दूसरी और तीसरी हिजरी शताब्दी में, विशेष रूप से अब्बासी काल में, व्यवस्थित और सुदृढ़ हुआ।

राज्य संरक्षण, शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, आधिकारिक इतिहास-लेखन और धार्मिक विमर्श की एकरूपता ने इस प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका निभाई। इस जटिल स्थिति में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि यदि यह संकलनात्मक और विमर्शात्मक प्रक्रिया न हुई होती, तो क्या इस्लाम अपनी वर्तमान, सर्वव्यापी और संगठित अवस्था में सुरक्षित रह पाता?

इस लेख का उद्देश्य किसी आस्था का खंडन या अपमान नहीं, बल्कि इस्लाम के आरंभिक इतिहास को पुष्टि-प्रधान दृष्टि के बजाय आलोचनात्मक दृष्टि से समझना है। अर्थात् स्रोतों की प्रकृति, कालगत दूरी, पांडुलिपियों की स्थिति, समकालीन गैर-इस्लामी प्रमाण और राज्य-राजनीति के प्रभावों को सामने रखकर एक निष्पक्ष अकादमिक समीक्षा प्रस्तुत करना—ताकि पाठक स्वयं प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाल सके।

क्रिस्त (1) — शोध-सार + भूमिका

शोध-सार

मुस्लिम विरासत में कुरआन को सामान्यतः एक पूर्ण, सुव्यवस्थित, संरक्षित, संदेह से परे और इतिहासातीत ग्रंथ मान लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप अनुसंधान का दायरा उसकी ऐतिहासिक संरचना, संकलन के विकासात्मक चरणों और भौतिक साक्ष्यों के बजाय आस्थात्मक, मतवादी, इस्नादी, फ़िक्ही और कलामी प्रतिरक्षा तक सीमित रहा।

इसके विपरीत, आधुनिक काल के निष्पक्ष विद्वानों—जैसे जॉन वान्सब्रॉ, पैट्रीशिया क्रोन, फ्रेड डोनर, फ्रांस्वा डेरेश और गेरड पुएँ—ने राजनीतिक दबाव, धार्मिक फ़तवों, तकफ़ीरी परंपराओं और मृत्यु-भय की परवाह किए बिना कुरआन को एक ऐतिहासिक और पुरातात्विक ग्रंथ के रूप में स्वतंत्र रूप से

परखा। उन्होंने इसकी पांडुलिपियों, लिपि-शैलियों, पाठ्य भिन्नताओं, समकालीन गैर-इस्लामी स्रोतों और पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर अनेक प्रश्नों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया।

इस आधुनिक शोध के कारण पहली बार यह संभावना बनी कि कुरआन के वर्तमान पाठ को उसकी प्रारंभिक रूपों, संकलनात्मक चरणों और ऐतिहासिक आशयों के साथ तुलनात्मक रूप से जाँचा जाए।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि पिछले आधे शतक में हुई अकादमिक कोशिशें, पद्धतिगत सिद्धांतों और विशेषज्ञ दृष्टिकोण के लिहाज़ से, इस्लामी विरासत के दीर्घकालीन विद्वत्-संचय की तुलना में अधिक आलोचनात्मक, स्वस्थ और इतिहास-सम्मत सिद्ध हुई हैं—और यही अंतर इस लेख की आधारभूमि और प्रेरणा है।

यह शोध इस्लामी स्रोतों के प्रारंभिक काल की वास्तविकता को समझने के लिए किया गया है।

इस्लाम से संबंधित अनेक प्राचीन लिखित ग्रंथों का अभाव, आरंभिक हस्तलिखित प्रमाणों की कमी, पुरातात्विक संकेतों का न होना, और बहुत बाद के काल में इस्लामी परंपराओं का संकलन—इन सबने इस प्रश्न को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है कि क्या इस्लामी स्रोत अपनी कथित प्रारंभिक अवधि से वास्तव में सुरक्षित रूप में चले आ रहे हैं?

इस किस्त में विशेष रूप से उन मूल इस्लामी ग्रंथों की समीक्षा की गई है जिन्हें परंपरा में “अनिवार्य अंग” माना जाता है, जैसे:

- इमाम अनस बिन मालिक की *मुवता*
- मुहम्मद बिन उमर अल-वाकिदी की *किताब अल-मगाज़ी*
- मुहम्मद बिन इसहाक बिन यसार की *सीरत रसूलुल्लाह*

शोध से यह स्पष्ट होता है कि इन पुस्तकों में से किसी की भी मूल हस्तलिखित (ऑटोग्राफ) प्रति या तो उपलब्ध नहीं है, या फिर वह कई शताब्दियों बाद की है। इसी प्रकार, इस्लामी इतिहास के पहले डेढ़ सौ वर्षों में एक “गहरा शून्य” पाया जाता है, जिसे बाद की परंपराओं द्वारा “कृत्रिम रूप से” भरा गया। अब्बासी काल में राज्य-प्रायोजन के अंतर्गत जो भी विद्वतापूर्ण, ऐतिहासिक और धार्मिक सामग्री संकलित हुई, वही आज “इस्लाम” या “इस्लामी परंपरा” कहलाती है। इस शोध का उद्देश्य इस संपूर्ण प्रक्रिया को शुद्ध अकादमिक और निष्पक्ष रूप से समझना और स्पष्ट करना है।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि “इस्लामी परंपरा” और “इस्लाम का वास्तविक इतिहास” के बीच एक स्पष्ट अंतर है, और आवश्यकता इस बात की है कि पारंपरिक पुष्टि-प्रधान पद्धतियों के स्थान पर गैर-पारंपरिक आलोचनात्मक पद्धति को अध्ययन का आधार बनाया जाए।

■ मानव इतिहास में लिखित साक्ष्यों की प्रचुरता — जबकि “इस्लाम” के लिखित प्रमाणों का आश्चर्यजनक अभाव

मानव संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अपने अस्तित्व, विचार, धर्म, पर्यावरण, सामाजिक व्यवस्था और न्याय व शासन को लेखन के माध्यम से सुरक्षित रखती है।

इसी लेखन और अभिव्यक्ति को पुरातत्व में *Material Culture* कहा जाता है।

दुनिया की हर प्राचीन सभ्यता—जो वास्तव में अस्तित्व में थी—अपने पीछे लिखित प्रमाण, अभिलेख, भौतिक संकेत, विधि-संहिताएँ, साहित्य, कलाएँ और धार्मिक ग्रंथ छोड़ गई हैं। यही ग्रंथ उन सभ्यताओं के प्राथमिक स्रोत कहलाते हैं।

(1) लगभग 4000 ईसा-पूर्व — सुमेरियन सभ्यता

सुमेरियन सभ्यता को मानव इतिहास की पहली लिखित सभ्यता कहा जाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने बोली को लेखन में परिवर्तित करने की कला विकसित की, जिससे मानव विचार पहली बार समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त हुआ।

लिखित स्रोत (मूल अवस्था में):

- कठोर मिट्टी की लाखों पट्टिकाएँ (Clay Tablets), जो आज
 - ब्रिटिश म्यूज़ियम (लंदन)
 - लूव्र म्यूज़ियम (पेरिस)
 - पर्गामोन म्यूज़ियम (बर्लिन)
 - इराक़ म्यूज़ियम (बग़दाद)
 में सुरक्षित हैं।

क्यूनिफ़ॉर्म लिपि (Cuneiform):

जो प्रारंभ में चित्रात्मक थी, फिर ध्वनि, अर्थ और व्याख्या—तीनों रूपों में विकसित हुई।

धार्मिक और बौद्धिक ग्रंथ:

- देवता तम्मूज़, एनकी और एनलिल से संबंधित
- प्रार्थनाएँ और स्तुतियाँ
- पौराणिक कविताएँ
- सृष्टि-कथाएँ
- *गिलगमेश महाकाव्य* — जिसे मानव जीवन, मृत्यु, मित्रता, शत्रुता और नैतिक संघर्ष पर आधारित विश्व का प्राचीनतम साहित्यिक कृति माना जाता है।

कानूनी स्रोत:

- *उर-नम्मू संहिता* — संसार का पहला लिखित कानून
 - अपराध
 - दंड
 - सामाजिक दायित्व

भौतिक अवशेष:

- जिगुरात — ऊँची धार्मिक इमारतें, जो उपासना और राज्य शक्ति दोनों का प्रतीक थीं।

निष्कर्ष:

✦ सुमेरियन सभ्यता का धर्म, कानून, साहित्य, कला और अर्थव्यवस्था—सब कुछ प्रत्यक्ष लिखित साक्ष्यों से प्रमाणित है।

(2) लगभग 3000 ईसा-पूर्व — मिस्री (फ़राओनी) सभ्यता

मिस्री सभ्यता ने लेखन, वास्तुकला और धर्म को एक अटूट एकता में पिरोया।

लिखित स्रोत:

- हाइरोग्लिफ़िक्स, जो
 - मंदिरों की दीवारों
 - मक़बरों के स्तंभों
 - पिरामिडों की आंतरिक गलियारों
 पर खुदे हुए हैं।

ये अभिलेख राजाओं की विजय, धार्मिक विश्वास और राज्य कानूनों को सुरक्षित रखते हैं।

धार्मिक ग्रंथ:

- *बुक ऑफ़ द डेड* — परलोक, आत्मा की यात्रा और नैतिक मूल्यांकन पर आधारित।

पपीरस ग्रंथ:

- प्रार्थनाएँ
- जादुई और धार्मिक ग्रंथ
- दफ़न विधियों के निर्देश

राजकीय अभिलेख:

- फ़राओनों के आदेश
- घोषणाएँ
- अंतिम उपदेश
- विजयों के रिकॉर्ड

भौतिक साक्ष्य:

- मिस्र के पिरामिड
- वैली ऑफ़ द किंग्स
- कर्नाक और लक्सर के मंदिर

निष्कर्ष:

✦ मिस्री सभ्यता का हर धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक पहलू अपने युग के लिखित प्रमाणों पर आज भी जीवित है।

एक महत्वपूर्ण नोट:

कुरआन (और बाइबल) में वर्णित मूसा, उसके विरोधी फराओन, और यूसुफ — ये तीनों विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के रूप में **प्राचीन मिस्र के लेखन-सिद्ध इतिहास में प्रमाणित नहीं हैं।**

प्राचीन मिस्र एक असाधारण रूप से लेखन-प्रिय सभ्यता थी। इसने अपने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और सामूहिक घटनाओं को शाही पुस्तकों, मंदिरों की दीवारों, पपीरस, सरकारी सूचियों और धार्मिक ग्रंथों में बड़े विस्तार और सुव्यवस्थित ढंग से दर्ज किया है।

इसके बावजूद:

- मिस्र के स्रोतों में इस्राएलियों की सामूहिक दासता का कोई उल्लेख नहीं है।
- न ही “एक्सोडस” (निकासी) का कोई प्रमाण है।
- न समुद्र के फटने या किसी फराओन की सेना के डूबने का कोई प्रमाण है।

साथ ही, “फराओन” एक शाही और पारिवारिक **उपाधि** है, किसी व्यक्तिगत नाम का संकेत नहीं। मिस्र के दर्जनों फराओनों में से आज तक किसी को भी मूसा का समकालीन साबित नहीं किया जा सका।

- यूसुफ के बारे में किसी विदेशी हिब्रू दास का मिस्र का मंत्री बनना या सात साल की अकाल व्यवस्था का कोई स्वतंत्र मिस्री प्रमाण मौजूद नहीं है।

इसलिए, आधुनिक इतिहास और मिस्रशास्त्र के अनुसार:

मूसा, फराओन और यूसुफ ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित व्यक्तित्व नहीं हैं, बल्कि केवल धार्मिक कथा और वर्णित कथानक हैं।

इसके अतिरिक्त, **सूरह य 10:92** **وَنَسُوا** को अक्सर कुरआन का असाधारण ऐतिहासिक और वैज्ञानिक चमत्कार माना जाता है। लेकिन भाषाई और ऐतिहासिक जाँच से यह दावा सिद्ध नहीं होता।

- आयत में **“نَجَّيْكَ بِدَنِكَ”** का अर्थ **जीवित बचाना या सदियों तक शरीर को सुरक्षित रखना** नहीं है, बल्कि डूबने के बाद शव का पानी से बाहर आ जाना भी इसका तात्पर्य हो सकता है।
- कुरआन किसी ममी, किसी विशिष्ट फराओन या भविष्य में मिलने वाले संरक्षित शरीर का कोई स्पष्ट दावा नहीं करता।
- मिस्र में शव का संरक्षित रहना (ममी बनाना) सामान्य दफन रीति थी, यह कोई असाधारण घटना नहीं।
- “मूसा का फराओन” की ऐतिहासिक पहचान मौजूद नहीं है, और जिन ममियों को इससे जोड़ा जाता है, उनमें डूबने के प्रमाण नहीं मिलते।

निष्कर्ष:

इस आयत को ममी की खोज की भविष्यवाणी कहना, **वास्तव में पश्चात व्याख्या है**, न कि कुरआनी पाठ या ऐतिहासिक प्रमाण से सिद्ध कोई चमत्कार।

(3) यूनानी सभ्यता — लगभग 8वीं शताब्दी ईसा-पूर्व से 146 ईसा-पूर्व

यूनानी सभ्यता ने तर्क, दर्शन और इतिहास-लेखन की नींव रखी।

मूल ग्रंथ:

- होमर की *इलियड* और *ओडिसी*
- हेसियोड की *थियोगोनी*
- हेरोडोटस का इतिहास
- थ्यूसीडाइडस की राजनीतिक और सैन्य इतिहास

ये ग्रंथ मूल यूनानी भाषा में, अनेक प्राचीन पांडुलिपियों में, तुलनात्मक रूप से सुरक्षित हैं।

कानूनी और दार्शनिक स्रोत:

- एथेंस के कानून
- सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के संवाद

भौतिक अवशेष:

- मंदिर
- थिएटर
- मूर्तिगृह
- संगमरमर पर खुदे कानून

निष्कर्ष:

✦ यूनानी सभ्यता का इतिहास एक स्वतंत्र, सतत और आत्मालोचनात्मक लिखित परंपरा रखता है।

(4) रोमन साम्राज्य (Roman Empire)

कालावधि: लगभग 753 ईसा-पूर्व 476 ईस्वी तक

रोमन सभ्यता, लिखित कानूनों और राज्य प्रशासन की सबसे उच्च मिसाल है।

लिखित स्रोत:

- **रोमन कानून (Roman Law)**
जो आज भी:
 - यूरोपीय कानूनों
 - आधुनिक न्यायिक और कचहरी व्यवस्था की बुनियाद है।
- **रोमन शाही फ़रमान (Roman Edicts)**
जिन पर सम्राटों के हस्ताक्षर और शाही मुहरें होती थीं।

सरकारी अभिलेख:

- जनगणना
- कर (टैक्स) का हिसाब
- सैन्य भर्ती

- न्यायालयों के फैसले

भौतिक प्रमाण:

- सड़कें
- पुल और मेहराब
- किले और परकोटे
- सरकारी इमारतें

जिन पर सरकारी लेख खुदे हुए हैं।

निष्कर्ष:

❖ रोमन इतिहास लिखित दस्तावेजों की एक निरंतर और अविच्छिन्न शृंखला है।

(5) प्राचीन भारतीय सभ्यता (Ancient Indian Civilization)

कालावधि: लगभग 1500 ईसा-पूर्व से 500 ईसा-पूर्व तक

- शाही अभिलेख (Inscriptions)
- सिक्के (Coins)
- बौद्ध और हिंदू धार्मिक ग्रंथ
- चीनी यात्रियों के विस्तृत विवरण
- राज्य दान-पत्र (ताम्र-पत्र)

गुप्त-उत्तर गुप्त काल के शिलालेख और ताम्र-पत्र

- हर्षवर्धन (606–647 ई.)
- चालुक्य, पल्लव, राष्ट्रकूट शासक

इन अभिलेखों में:

- युद्धों का वर्णन
- कूटनीतिक संबंध
- धार्मिक दान
- विदेशी जातियों का उल्लेख
- सातवीं शताब्दी से पहले के सिक्के आज भी उपलब्ध हैं
- हिंदू, बौद्ध और शाही उपाधियों वाले उत्कीर्ण नमूने
- बौद्ध हस्तलिखित ग्रंथ
- ब्राह्मणीय शास्त्र
- जैन धार्मिक परंपराएँ

निष्कर्ष:

❖ भारतीय वैदिक संस्कृति उन महान सभ्यताओं में से है, जिसने अपने इतिहास को पत्थरों, लोहे और तांबे की पट्टिकाओं पर लेख, चिन्ह और प्रतीकों के माध्यम से अमर किया।

(6) सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization)

कालावधि: लगभग 3800 से 1300 ईसा-पूर्व तक

- मुहरों, पट्टिकाओं, चित्रात्मक चिह्नों, औद्योगिक नक्शों और हस्तशिल्प के रूप में हजारों अवशेष
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो केवल कुछ बिखरे अवशेष नहीं, बल्कि पूरे के पूरे नगर हैं, जो आज भी धरती पर मौजूद हैं।

यही बात उन्हें मानव इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है।

प्राथमिक प्रमाण (Primary Evidence):

- पूर्ण शहरी योजना
- सीधी और व्यवस्थित सड़कें (Grid System)
- आवासीय, व्यापारिक और धार्मिक क्षेत्रों का स्पष्ट विभाजन
- जल निकासी प्रणाली, जो आज के कई आधुनिक शहरों से बेहतर थी
- पकी ईंटें, एकसमान माप, मानकीकृत निर्माण

ये सभी तथ्य इस बात का निर्णायक प्रमाण हैं कि यह सभ्यता कोई मिथक नहीं, बल्कि एक वास्तविक, संगठित और उच्च स्तरीय शहरी सभ्यता थी।

घरेलू जीवन के प्रमाण:

- घरों में स्नानागार
- पानी के कुएँ
- अनाज के भंडार
- चूल्हे, बर्तन, आभूषण, खिलौने, धातु के उपकरण

अर्थात् हमें केवल राजाओं या धार्मिक वर्ग के नहीं, बल्कि आम मनुष्य के दैनिक जीवन का पूरा चित्र मिलता है।

अर्थव्यवस्था और व्यापार के प्रमाण:

- प्रतीकात्मक लेखों वाली मुहरें
- मानकीकृत तौल और माप के उपकरण
- मेसोपोटामिया (सुमेर) से व्यापारिक व सांस्कृतिक संपर्क
- बंदरगाह नगरों के प्रमाण (जैसे लोथल)

इससे स्पष्ट होता है कि सिंधु घाटी सभ्यता अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जुड़ी हुई थी।

धार्मिक और प्रतीकात्मक विचार:

- मुहरों पर पूजा के दृश्य
- उर्वरता (Fertility) के प्रतीक
- पवित्र पशुओं की आकृतियाँ

- महान स्नानागार (Great Bath) — संभवतः धार्मिक शुद्धि के लिए यद्यपि उनका धर्म पूरी तरह पढ़ा नहीं जा सका, लेकिन उसके अस्तित्व के प्रमाण स्पष्ट हैं।

महत्वपूर्ण तुलना:

- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो:
 - अपने धार्मिक संस्थापकों के नाम नहीं बताते
 - देवताओं की कोई पुस्तक नहीं देते
 - अवतारों या पैगम्बरों की जीवनियाँ नहीं सुनाते

निष्कर्ष:

✦ फिर भी, उनके नगरों, गलियों, घरों, नालियों, मुहरों और औज़ारों के रूप में उनका अस्तित्व एक निर्विवाद सत्य है।

(7) अक्कादी, बाबिली और अश्शूरी सभ्यताएँ

कालावधि: लगभग 2500–600 ईसा-पूर्व

- हम्मुराबी की संहिता — पत्थर का स्तंभ (Code of Hammurabi)
- पकी हुई मिट्टी की हज़ारों कीलाक्षर पट्टिकाएँ
- नीनवे, बाबिल और अश्शूर के पुस्तकालय
- खगोलशास्त्र, ज्योतिष, चिकित्सा, जादू, धर्म और इतिहास के लिखित अभिलेख

निष्कर्ष:

✦ इन सभ्यताओं के पास पूर्ण लिखित परंपरा थी — किसी “मौखिक/लिखित शून्य” के बिना।

(8) हित्ती सभ्यता (Hittite Civilization – अनातोलिया)

कालावधि: 1600–1200 ईसा-पूर्व

- शाही संधियाँ (Treaties)
- स्पष्ट, पूर्ण और आसानी से पढ़ी जाने वाली लिखित सामग्री
- कानून और धार्मिक ग्रंथ
- देवताओं के नाम और पौराणिक कथाएँ
- पत्थरों और पट्टिकाओं पर खुदे सरकारी लेख
- हित्ती-मिस्री शांति संधि

(दुनिया की सबसे प्राचीन अंतरराष्ट्रीय संधि)

निष्कर्ष:

✦ हित्तियों की अंतरराष्ट्रीय संधियाँ आज भी अपनी मूल अवस्था में सुरक्षित हैं।

(9) हखामनी फ़ारसी साम्राज्य (Achaemenid Persian Empire)

कालावधि: लगभग 550–330 ईसा-पूर्व

हखामनी साम्राज्य मानव इतिहास का पहला सुव्यवस्थित विश्व साम्राज्य था, जो पूर्व में भारत की सीमाओं से लेकर पश्चिम में यूनान और मिस्र तक फैला हुआ था।

इसकी सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि इसने अपनी राजनीतिक शक्ति, धार्मिक विचार, कानूनी व्यवस्था और शाही अधिकार को लिखित रूप में सुरक्षित किया — और वे अभिलेख आज भी उपलब्ध, अध्ययन योग्य और प्रमाणित हैं।

बेहिस्तून अभिलेख (Behistun Inscription):

- दारियस प्रथम द्वारा लगभग 520 ईसा-पूर्व में खुदवाया गया
- ईरान की चट्टान पर आज भी मौजूद
- इसमें:
 - दारियस की वंशावली
 - उसके शासन का औचित्य
 - विद्रोहों का वर्णन
 - अधीन जातियों की सूची

यह अभिलेख तीन भाषाओं में है:

1. प्राचीन फ़ारसी
2. एलामाइट
3. बाबिली (अक्कादी)

❖ यही अभिलेख बाद में मेसोपोटामियाई लिपि को पढ़ने की कुंजी बना — जैसे रोज़ेटा स्टोन ने मिस्री चित्रलिपि को समझने में मदद की।

शाही फ़रमान और बहुभाषी दस्तावेज़:

- विभिन्न प्रांतों के लिए
- विभिन्न भाषाओं में
- स्थानीय लिपियों के अनुसार जारी किए जाते थे

इससे स्पष्ट होता है कि साम्राज्य के पास:

- संगठित लिखित नौकरशाही
- लेखक, अभिलेखागार और सरकारी रिकॉर्ड मौजूद थे

इसी कारण हमें कर रिकॉर्ड, भूमि आदेश और प्रशासनिक निर्देश भी मिलते हैं।

ज़रथुश्ती धार्मिक परंपरा:

- अवेस्ता की प्रारंभिक नींव
- यद्यपि पूर्ण अवेस्ता बाद में संकलित हुई
- लेकिन:

- अहुरा मज़्दा
- सत्य और असत्य का संघर्ष
- नैतिक उत्तरदायित्व

दारियस और खशयारशा के अभिलेखों में स्पष्ट दिखते हैं।

दारियस बार-बार लिखता है:

“यह साम्राज्य मुझे अहुरा मज़्दा की सहायता से प्राप्त हुआ।”

यह धार्मिक विचार:

- केवल मौखिक नहीं
- बल्कि लिखित रूप में सुरक्षित है।

शाही निर्माण और अभिलेख:

- पर्सेपोलिस
- सूसा
- पासारगाद

इन इमारतों पर:

- राजाओं के नाम
 - निर्माण की तिथियाँ
 - सम्मिलित जातियाँ
 - साम्राज्य की सीमाएँ
- सब कुछ खुदा हुआ है।

ये लेख:

- केवल सजावटी नहीं
- बल्कि राजनीतिक घोषणाएँ और ऐतिहासिक रिकॉर्ड हैं।

शाही सड़कें और मील-पत्थर:

- हजारों किलोमीटर लंबी सड़कें
- दूरी और निगरानी के चिन्ह लिखित रूप में

इससे सिद्ध होता है कि राज्य:

- केवल भूगोल पर नहीं
- बल्कि सूचना और रिकॉर्ड पर भी नियंत्रण रखता था।

अंतिम निष्कर्ष:

♦ हर वह सभ्यता जो वास्तव में अस्तित्व में होती है, वह अपने निशान और पहचान पत्थरों और पकी हुई मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखित रूप में छोड़ जाती है।

(10) प्राचीन इब्रानी / इस्राइली सभ्यता

(Ancient Israelite Civilization)

कालावधि: लगभग 2500 ईसा-पूर्व से 1000 ईसा-पूर्व तक

प्राचीन इस्राइली सभ्यता उन चुनिंदा सभ्यताओं में से है जिनके बारे में **धार्मिक परंपरा, ऐतिहासिक शोध, पुरातत्व और लिखित प्रमाण** — चारों एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं।

इस सभ्यता की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि **इसका धर्म, इसकी शरीअत, इसकी राजसत्ता और इसकी सामूहिक स्मृति** — सब कुछ लिखित रूप में सुरक्षित किया गया।

इब्रानी अभिलेख (Hebrew Inscriptions)

प्राचीन इस्राइली समाज में इब्रानी भाषा केवल पूजा या उपदेश तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका उपयोग होता था:

- सरकारी अभिलेखों में
- स्मारक शिलालेखों में
- प्रशासनिक दस्तावेजों में
- धार्मिक ग्रंथों में

महत्वपूर्ण उदाहरण:

- **सिलोआम अभिलेख (Siloam Inscription)** — यरूशलम में प्राप्त एक इब्रानी शिलालेख, जिसमें जल-सुरंग के निर्माण का वर्णन है।
- **लाखीश पत्र (Lachish Letters)** — सैन्य और प्रशासनिक पत्र, जो राज्य-व्यवस्था की लिखित परंपरा को दर्शाते हैं।
- **सामरिया ऑस्ट्राका** — कर और रसद से संबंधित रिकॉर्ड।

ये सभी प्रमाण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि **प्राचीन इस्राइली समाज एक साक्षर, लिखित समाज था**, न कि केवल मौखिक परंपरा पर आधारित।

मृत सागर के ग्रंथ (Dead Sea Scrolls)

(दूसरी शताब्दी ईसा-पूर्व)

ये ग्रंथ बीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी पुरातात्विक खोजों में गिने जाते हैं।

- ये चर्मपत्र और कागज़ के बंडल:
 - दूसरी शताब्दी ईसा-पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी तक के हैं
- इनमें शामिल हैं:
 - तोराह के लगभग पूर्ण संस्करण
 - नबियों के ग्रंथ
 - दाऊद के भजन
 - धार्मिक कानून
 - सामुदायिक नियम (Community Rule)

महत्वपूर्ण बिंदु:

ये ग्रंथ यह सिद्ध करते हैं कि ओल्ड टेस्टामेंट के ग्रंथ इस्लाम से कम-से-कम 700–1000 वर्ष पहले लिखित रूप में मौजूद थे।

इन ग्रंथों का पाठ समय के साथ काफी हद तक स्थिर भी रहा।

यह एक प्रत्यक्ष प्राथमिक स्रोत (Primary Source) है, जिसे आज भी विश्वभर के शोधकर्ता पढ़ सकते हैं।

राजकीय फ़रमान, संधियाँ और क़ानून

प्राचीन इस्राइली राज्य-व्यवस्था में:

- राजा केवल धार्मिक नेता नहीं था
- बल्कि उसका अधिकार लिखित क़ानूनों और दस्तावेज़ों से बंधा हुआ था

उदाहरण:

- दाऊद और सुलैमान के काल की संधियाँ
- कबीलाई संघ के लिखित नियम
- धार्मिक और नागरिक क़ानूनों का सुव्यवस्थित संकलन

तोराह में स्पष्ट रूप से दर्ज है:

- राजा के अधिकार
- जनता के अधिकार
- न्यायालयों के नियम

इससे स्पष्ट होता है कि इस्राइली धर्म, क़ानून और राजनीति — तीनों एक लिखित संविधान के अधीन थे।

बाइबिल के प्राचीन संस्करण (Old Testament)

- विभिन्न भाषाओं में सुरक्षित:
 - इब्रानी
 - यूनानी (सेप्टुआजेंट)
 - अरामी

महत्वपूर्ण तथ्य:

ये संस्करण:

- अलग-अलग कालों में
- अलग-अलग क्षेत्रों में
- अलग-अलग धार्मिक समूहों में

मिलते हैं, और यही विविधता पाठ्य आलोचना (Textual Criticism) को संभव बनाती है।

धर्म, इतिहास और क़ानून — तीनों की लिखित नींव

प्राचीन इस्राइली सभ्यता में:

- धर्म = पवित्र ग्रंथ
- कानून = शरीअत
- इतिहास = राजाओं की पुस्तकें, इतिहास-ग्रंथ, नबियों के विवरण

ये तीनों क्षेत्र:

- केवल मौखिक परंपरा पर नहीं
- बल्कि लिखित ग्रंथों पर आधारित थे

इसी कारण:

- इस्राइली इतिहास पर शोध संभव है
- मतभेद पाठ के आधार पर सुलझाए जाते हैं
- आस्था के साथ-साथ वैज्ञानिक जांच भी संभव है

निष्कर्ष:

प्राचीन इस्राइली सभ्यता:

- अपने धर्म को लिखित रूप में सुरक्षित कर गई
- अपनी शरीअत और दैवी कानूनों को संकलित कर गई
- अपने इतिहास को ग्रंथों और अभिलेखों में छोड़ गई
- अपने राजकीय कानूनों को प्राथमिक स्रोतों में दर्ज कर गई

इसीलिए आज यह सभ्यता केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि एक पूर्णतः शोधयोग्य ऐतिहासिक वास्तविकता है।

♦ **अंतिम निष्कर्ष:**

जहाँ निरंतर लिखित प्रमाण मौजूद होते हैं, वहाँ इतिहास स्थापित होता है; और जहाँ लेखन अनुपस्थित होता है, वहाँ प्रश्न, शंकाएँ और भ्रम अनिवार्य हो जाते हैं।

(11) प्राचीन चीनी सभ्यता

(Shang – Zhou – Han Civilization)

कालावधि: लगभग 6000 वर्षों पर विस्तृत

चीनी सभ्यता उन गिनी-चुनी सभ्यताओं में से है जिनकी लिखित पहचान न केवल अत्यंत प्राचीन है, बल्कि निरंतर और अविच्छिन्न भी है।

इसकी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक परंपराएँ हजारों वर्षों से लेखन द्वारा सुरक्षित रही हैं।

ऑरेकल बोन अभिलेख (Oracle Bone Inscriptions)

- **काल:** लगभग 1600–1046 ईसा-पूर्व (शांग काल)
- पशुओं की हड्डियाँ और कछुओं के कवच, जिन पर:

- राजाओं के प्रश्न
- देवताओं से भविष्यवाणी
- युद्ध, फ़सल, वर्षा और रोग से संबंधित संकेत लिखे जाते थे।

महत्वपूर्ण तथ्य:

ये लेख उसी काल और उसी क्षेत्र की जीवित भाषा में हैं।

इनमें राजाओं के नाम, तिथियाँ और घटनाएँ दर्ज हैं।

ये चीन के सबसे प्राचीन लिखित प्रमाण हैं, जो आज भी संग्रहालयों और शोध संस्थानों में सुरक्षित हैं।

राजकीय इतिहास (Annals)

झोउ और बाद में हान काल में:

- दरबारी इतिहासकार नियुक्त किए गए
- प्रत्येक राजा के काल के:
 - सामान्य घटनाएँ
 - महत्वपूर्ण निर्णय
 - युद्ध
 - संधियाँ

लिखित रूप में संकलित की गईं।

उदाहरण:

- **Shiji (Records of the Grand Historian)** — सिमा छ्यान की रचना
यह पुस्तक चीन के प्रारंभिक एक हजार वर्षों के इतिहास को एक निरंतर लिखित शृंखला में पिरोती है।

कन्फ्यूशियस और ताओवाद के ग्रंथ

चीनी धर्म, दर्शन, ज्ञान और नैतिकता:

- मौखिक परंपरा पर नहीं
- बल्कि लिखित ग्रंथों पर आधारित रही

मुख्य ग्रंथ:

- Analects of Confucius
- Tao Te Ching
- Book of Rites
- Book of Documents

इन ग्रंथों ने चीनी:

- नैतिकता
- राजनीति
- समाज

- शासन

सब पर गहरा प्रभाव डाला।

महत्वपूर्ण बिंदु:

ये सभी ग्रंथ इस्लाम से कम-से-कम 800–1000 वर्ष पहले लिखे जा चुके थे।

निरंतर सरकारी रिकॉर्ड

चीन में:

- जनगणना
- कर
- न्यायिक फैसले
- शाही आदेश

सभी लिखित रिकॉर्ड का हिस्सा रहे।

इसी कारण चीन के इतिहास में रिक्त स्थान बहुत कम हैं, और जहाँ मतभेद हैं वहाँ पाठ उपलब्ध है।

✦ निष्कर्ष:

चीनी सभ्यता यह सिद्ध करती है कि एक जीवित सभ्यता अपनी सामूहिक स्मृति को लेखन में सुरक्षित रखती है; मौखिक परंपरा कभी उसकी केंद्रीय पहचान नहीं बनती।

(12) माया, एजटेक और इंका सभ्यताएँ — अमेरिका

इन सभ्यताओं का महत्व इस कारण है कि:

- इनके पास वर्णमाला आधारित लिपि नहीं थी
- फिर भी इन्होंने अपने धर्म, समय, इतिहास और सत्ता को सुरक्षित रखने के अनूठे तरीके विकसित किए

(क) माया सभ्यता

माया कोडेक्स (Maya Codices):

- वृक्ष की छाल पर लिखी गई पुस्तकें
- चित्रात्मक और प्रतीकात्मक लिपि में

मुख्य कोडेक्स:

- Dresden Codex
- Madrid Codex
- Paris Codex

इनमें शामिल हैं:

- खगोलीय गणनाएँ
- ग्रह-नक्षत्रों की गति
- कैलेंडर
- धार्मिक अनुष्ठान

- देवताओं की कथाएँ

✦ ये सभी पूर्व-कोलंबियन प्राथमिक स्रोत (Pre-Columbian Primary Sources) हैं।

(ख) एजटेक सभ्यता

- चित्रात्मक पांडुलिपियाँ (Pictorial Codices)
- धार्मिक बलिदान
- देवताओं के लिए चढ़ावे
- राजवंशावली
- युद्ध विजय

सब कुछ चित्रात्मक लेखन में सुरक्षित था।

(ग) इंका सभ्यता

यद्यपि इंका के पास औपचारिक लिपि नहीं थी, फिर भी:

- **क्विपू प्रणाली (Quipu System)** — गांठों वाली रस्सियों के माध्यम से:
 - जनगणना
 - कर संग्रह
 - उत्पादन
 - प्रशासनिक जानकारी
- संरक्षित की जाती थी।

यह वर्णमाला नहीं, लेकिन एक सुव्यवस्थित सूचना प्रणाली थी।

✦ समग्र निष्कर्ष:

माया, एजटेक और इंका सभ्यताएँ यह सिद्ध करती हैं कि **लेखन केवल अक्षरों का नाम नहीं, बल्कि मानव मस्तिष्क स्मृति को सुरक्षित रखने का कोई-न-कोई तरीका अवश्य खोज लेता है।**

(13) एलामाई सभ्यता

(Elamite Civilization — वर्तमान दक्षिण-पश्चिम ईरान)

- **काल:** 2700–539 ईसा-पूर्व
- एलामाई लिपियाँ (Linear Elamite, Cuneiform)
- शाही अभिलेख, संधियाँ, धार्मिक लेख
- सूसा जैसे नगरों में हजारों पट्टिकाएँ आज भी मौजूद

✦ निष्कर्ष:

यह मेसोपोटामिया की समकालीन सभ्यता थी, पूर्ण लिखित परंपरा के साथ।

(14) फोनीशियन सभ्यता

(Phoenician Civilization — तटीय सीरिया व लेबनान)

- **काल:** 1500–300 ईसा-पूर्व
- विश्व की पहली वर्णमाला-आधारित लिपि
- समुद्री व्यापार, संधियाँ, समाधि-अभिलेख
- यही लिपि आगे चलकर यूनानी और लैटिन वर्णमालाओं की आधार बनी

✦ निष्कर्ष:

लेखन के विकास में फोनीशियन सभ्यता ने **पहला निर्णायक और ऐतिहासिक भूमिका** निभाई।

(15) अशूरी सभ्यता

(Assyrian Civilization)

- कालावधि: लगभग **1400–600 ईसा-पूर्व**
- शाही शिलालेख, युद्ध संबंधी वार्षिक अभिलेख
- नीनवे की शाही पुस्तकालय (लाइब्रेरी ऑफ अशुरबनिपाल)
- पकी हुई मिट्टी की **हज़ारों तख्तियाँ**

निष्कर्ष: ✦

राज्य, धर्म, संस्कृति और इतिहास—सब कुछ लिखित रूप में सुरक्षित।

(16) बाबुली सभ्यता

(Babylonian Civilization)

- कालावधि: लगभग **1900–500 ईसा-पूर्व**
- हम्मुराबी की संहिता (Code of Hammurabi)
- खगोलशास्त्र, कानून, धर्म और सामाजिक रीति-रिवाजों पर लिखित ग्रंथ
- दैनिक लेन-देन तक का विधिवत लेखा-जोखा

निष्कर्ष: ✦

यह उन सभ्यताओं में से है जो कानून के इतिहास का एक बुनियादी स्तंभ बनीं।

(17) उरार्तु सभ्यता

(Urartian Civilization — आर्मेनिया व पूर्वी अनातोलिया)

- कालावधि: लगभग **900–600 ईसा-पूर्व**
- शाही शिलालेख, किलों और प्राचीरों पर लिखावट
- धार्मिक और सैन्य अभिलेख

निष्कर्ष: ✦

यद्यपि यह एक छोटी सभ्यता थी, फिर भी इसकी स्पष्ट लिखित पहचान मौजूद है।

(18) नबाती सभ्यता

(Nabataean Civilization — पेट्रा, जॉर्डन)

- कालावधि: लगभग 400 ईसा-पूर्व से 106 ईस्वी
- नबाती-अरामी लेखन
- कब्रों के शिलालेख, संधि-दस्तावेज़, धार्मिक अभिलेख

निष्कर्ष: ✦

यही सभ्यता आधुनिक अरबी लिपि की आधारशिला और विकास की कड़ी बनी—अर्थात् रेगिस्तान में भी लेखन जीवित रहा।

(19) कार्थेजिनी सभ्यता

(Carthaginian Civilization — उत्तरी अफ्रीका)

- कालावधि: लगभग 800–146 ईसा-पूर्व
- फोनीशियन भाषा में शिलालेख
- व्यापारिक संधियों के दस्तावेज़
- धार्मिक अनुष्ठानों पर लिखित अभिलेख

निष्कर्ष: ✦

यह वह सभ्यता है जिसके पास रोम के साथ संघर्ष की लिखित साक्ष्य भी मौजूद हैं।

(20) केल्टिक सभ्यता

(Celtic Civilization — यूरोप)

- कालावधि: लगभग 800–100 ईसा-पूर्व
- ओघम (Ogham) लिपि
- कब्रों के शिलालेख
- क्षेत्रीय रीति-रिवाजों पर लिखे गए अभिलेख

निष्कर्ष: ✦

यद्यपि यह एक विकेन्द्रीकृत सभ्यता थी, फिर भी यहाँ लिखित संस्कृति मौजूद रही।

(21) एत्रुस्कन सभ्यता

(Etruscan Civilization — रोम से पूर्व, इटली)

- कालावधि: लगभग 800–300 ईसा-पूर्व
- धार्मिक अनुष्ठानों पर लेख
- कानूनी विषयों पर शिलालेख
- जिसका रोमन कानून और धर्म पर गहरा प्रभाव पड़ा

निष्कर्ष: ✦

रोम और इटली से भी पहले यह एक लिखित राज्य थी।

(22) अक्सुमी (हबशी) सभ्यता

(Aksumite Civilization — इथियोपिया)

- कालावधि: लगभग 100–900 ईस्वी
- गीइज़ (Ge'ez) लिपि
- शाही सिक्के
- कब्रों के शिलालेख
- धार्मिक ग्रंथों के संकलन

निष्कर्ष: ✦

यह सभ्यता अफ्रीका में एक सशक्त और सुदृढ़ लिखित परंपरा की शुरुआत बनी।

क्रिस्त (2) — अब यहाँ एक महत्वपूर्ण तुलना और केंद्रीय बिंदु ■

दुनिया की इन तमाम सभ्यताओं में एक बात समान रही है कि

इन सभी ने अपने समय का लिखा हुआ **ठोस भौतिक सामग्री** छोड़ा है,

जिसे आज की अकादमिक दुनिया *Primary / Original Sources* कहती है।

जब सबने अपने धर्म, कानून, सामाजिक रीति-रिवाज़ और इतिहास को बाकायदा लिखित रूप में दर्ज किया,

तो **सबसे व्यापक निष्कर्ष** यह सामने आता है:

✦ इन सभी उदाहरणों से यह बात ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि चाहे **वर्णमाला आधारित लेखन** हो या **प्रतीकात्मक चिन्ह**, यही वह सामग्री है जो किसी भी सभ्यता की विशिष्ट पहचान और उसके अस्तित्व का प्रमाण बनती है।

इसलिए प्रश्न केवल इतना नहीं कि

इस्लामी स्रोत बाद में क्यों मिलते हैं?

बल्कि असली प्रश्न यह है:

जब दुनिया की लगभग हर छोटी-बड़ी सभ्यता ने अपने आरंभिक काल और प्रथम चरण के प्रमाण हज़ारों वर्षों तक ठोस रूप में सुरक्षित रखे,

तो **सातवीं शताब्दी**, जो कोई बहुत प्राचीन समय भी नहीं,

उस दौर के अरब धार्मिक और सांस्कृतिक तंत्र के **प्रारंभिक लिखित प्रमाण** आखिर **क्यों नदारद हैं?**

यह प्रश्न

न अपमान है,

न तिरस्कार,

न पक्षपात,

और न ही कोई आरोप —

बल्कि यह इतिहास-विज्ञान की एक बुनियादी और अनिवार्य माँग है।

सातवीं शताब्दी का वह दैवी और वैचारिक तंत्र,

जो स्वयं को

“अंतिम, वैश्विक, सार्वभौमिक और शाश्वत”

बताता है,

अपने शुरुआती डेढ़-दो सौ वर्षों का कोई प्रत्यक्ष लिखित प्रमाण

क्यों नहीं छोड़ सका?

■ अकादमिक सार (One-paragraph Conclusion)

दुनिया की हर प्रसिद्ध सभ्यता अपनी लिखित स्मृतियों के माध्यम से पहचानी जाती है, जबकि

इस्लाम अकेला ऐसा धार्मिक और सभ्यतागत तंत्र है,

जिसका प्रारंभिक इतिहास, कानून, सीरत और धार्मिक ग्रंथ

प्रत्यक्ष समकालीन लिखित साक्ष्यों से पूरी तरह वंचित हैं।

यह शून्य केवल संयोग नहीं,

बल्कि ऐतिहासिक शोध का एक केंद्रीय प्रश्न है।

इस शून्य को केवल आस्था से नहीं,

बल्कि ठोस भौतिक प्रमाणों से भरना चाहिए।

(1) कुरआन मजीद — इस्लाम की मूल-धुरी और पाठ का ऐतिहासिक संकट

इस्लामी परंपरा के अनुसार कुरआन मजीद को

इस्लाम की मूल-धुरी, मार्गदर्शन का स्रोत

और पूरे धार्मिक तंत्र की रीढ़ माना जाता है।

ईमान, शरीअत, इबादत, नैतिकता और कानून —

सब कुछ इसी पाठ पर आधारित समझा जाता है।

इसी कारण यह अपेक्षा पूरी तरह स्वाभाविक है कि

कुरआन का सबसे प्राचीन पाठ,

अन्य वैश्विक धर्मों के ग्रंथों की तरह

अपने मूल, प्रमाणिक और प्रत्यक्ष ऐतिहासिक रूप में सुरक्षित हो।

लेकिन जब कुरआन को

ऐतिहासिक और पाठालोचन की कसौटी पर परखा जाता है,

तो एक अत्यंत गंभीर और चिंताजनक स्थिति सामने आती है।

(1) कुरआन का कोई प्रारंभिक, प्रमाणिक और पूर्ण पांडुलिपि मौजूद नहीं

अन्य धर्मों के विपरीत:

- यहूदियत के पास: ईसा-पूर्व सदियों के **Dead Sea Scrolls**
- ईसाईयत के पास: **Codex Sinaiticus, Codex Vaticanus**
- बौद्ध धर्म के पास: गंधारी भाषा के ग्रंथ
- टेक्सिला, पोथोहार और स्वात से प्राप्त प्राचीन पुस्तकें
- वैदिक धर्म के पास: प्राचीन वैदिक पांडुलिपियाँ
- इनके अतिरिक्त हिंदू धर्म के पास:

उपनिषद, महाकाव्य, पुराण, विधि-ग्रंथ, दार्शनिक सूत्र
और पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित

एक निरंतर, विविध और प्राचीन लिखित परंपरा मौजूद है —

जिसके अनेक मूल पांडुलिपियाँ आज भी उपलब्ध हैं।

लेकिन कुरआन के विषय में यह एक **अखंडनीय सत्य** है कि:

- ✗ न पैगम्बर का कोई निजी मुशहफ सुरक्षित है
- ✗ न हज़रत हफ़सा का मुशहफ़
- ✗ न हज़रत अबू बक्र के काल की संकलन प्रति
- ✗ न हज़रत उस्मान द्वारा जारी मुशहफ़ों में से कोई मूल प्रति
- ✗ न हज़रत अली से संबद्ध कोई प्रमाणिक पांडुलिपि
- ✗ न सातवीं शताब्दी ईस्वी का कोई पूर्ण कुरआन

आज दुनिया के किसी भी संग्रहालय, पुस्तकालय

या निजी संग्रह में

पहली इस्लामी सदी से सीधे जुड़ा हुआ

एक भी पूर्ण कुरआन मौजूद नहीं है।

(2) उपलब्ध सबसे प्राचीन कुरआनी सामग्री: प्रकृति और सीमाएँ

जिस सामग्री को सामान्यतः

“सबसे प्राचीन प्रमाण” के रूप में प्रस्तुत किया जाता है,

वह वास्तव में टुकड़ों, आंशिक पन्नों

और अधूरे व अपूर्ण पांडुलिपियों पर आधारित है:

■ Birmingham Fragments (568–645 ईस्वी)

- केवल कुछ आयतों पर مشتمل
- कोई पूर्ण कुरआन नहीं

- इतिहास-लेखन के अनुसार
चमड़े पर लिखी गई संभवतः बाद की लिखावट

■ सना'आ पेलिम्प्सेस्ट (Şan'ā' Palimpsest)

- पुराने पाठ को मिटाकर और धोकर
दोबारा लिखा गया
- नीचे और ऊपर के पाठों में अंतर और भिन्नताएँ
- यह स्वयं प्रमाण है कि
कुरआन का पाठ परिवर्तन की प्रक्रिया से गुज़रा

■ Parisino–Petropolitanus

- अपूर्ण
- लिपि भिन्न
- कई स्थानों पर शब्दगत और पाठगत अंतर

■ तोपकापी और समरकंद कोडेक्स

- आमतौर पर इन्हें “उस्मानी” कहा जाता है
- लेकिन आधुनिक शोध के अनुसार:
 - ये सभी अब्बासी काल
(8वीं–9वीं शताब्दी) की उपज हैं
 - न ये पूर्ण हैं
 - न अक्षरों और शब्दों में समान
 - और न ही आपस में पूर्ण पाठिय समानता रखते हैं

निष्कर्ष:

ये सभी पांडुलिपियाँ

बहुत बाद के समय की,

अपूर्ण, असमान और परिवर्तित प्रतियाँ हैं —

मूल पाठ का कोई स्पष्ट प्रतिबिंब नहीं।

(3) कुरआन और इस्नाद का मूलभूत अंतर — हदीस बनाम कुरआन

यहाँ एक अत्यंत महत्वपूर्ण

लेकिन प्रायः नज़रअंदाज़ किया गया बिंदु सामने आता है:

- ◆ हदीस के पास व्यवस्थित इस्नादी तंत्र है

हर रिवायत कहती है:

“मुझसे फलाँ ने बयान किया,

उससे फलाँ ने...”

♦ **कुरआन के पास ऐसी कोई**

इस्नादी, क्रमिक श्रृंखला मौजूद नहीं

- न सहाबा ने कुरआन की आयतों के लिए कोई इस्नादी व्यवस्था बनाई
- न ताबेईन ने
- न ताबे-ताबेईन ने
- न ही पहली दो सदियों में किसी ने

इस प्रकार

कुरआन

इस्नादी मौखिक परंपरा के रूप में नहीं,

बल्कि एक **मुसहफ़ी पाठ (Codex)**

के रूप में फैला और हम तक पहुँचा।

(4) “तवातुर” और “अरज़ा-ए-आखिरा”

— बाद के समय की एक आस्थागत रचना

इस्लामी विद्वान सामान्यतः

कुरआन की सुरक्षा

और उसके वर्तमान स्वरूप व क्रम को

तौकीफ़ी (अर्थात् अल्लाह और ज़िब्रील से प्रमाणित)

साबित करने के लिए

दो पारंपरिक अवधारणाएँ प्रस्तुत करते हैं:

■ तवातुर

■ अरज़ा-ए-आखिरा

लेकिन आधुनिक ऐतिहासिक शोध

इनकी पूरी तरह से अस्वीकृति करता है

और स्पष्ट रूप से बताता है कि:

- ये अवधारणाएँ तीसरी और चौथी हिजरी सदी में गढ़ी गईं
- पहली डेढ़ सदी में इनका कोई उल्लेख तक नहीं मिलता
- ये ऐतिहासिक प्रमाण नहीं,
बल्कि आस्था की रक्षात्मक व्याख्याएँ हैं
- ये अवधारणाएँ विशेष रूप से तीसरी और चौथी हिजरी शताब्दी में गढ़ी गईं
- पहली डेढ़ शताब्दी में इनका कहीं कोई उल्लेख तक नहीं मिलता

- ये अवधारणाएँ कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं, बल्कि आस्था के बचाव और औचित्यकरण के तर्क हैं

इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि:

कुरआन की सुरक्षा और संरक्षण का दावा केवल आस्था पर आधारित है, ऐतिहासिक प्रमाण पर नहीं।

(5) यह याद रहे कि कुरआन की एकमात्र और वास्तविक इस्नाद केवल पांडुलिपियाँ हैं — न कि रावियों की श्रृंखला

आधुनिक कुरआनी अनुसंधान (Manuscript Studies) के बाद इस विषय पर लगभग **सहमति (Consensus)** बन चुकी है कि:

✓ कुरआन की मूल और एकमात्र जाँच योग्य प्रमाणिकता = **लिखित पांडुलिपियाँ**

✗ न रावी

✗ न हाफ़िज़

✗ न कारी

✗ न तवातुर

✗ और न ही इस्नादी दावे

लेकिन जब ये पांडुलिपियाँ भी:

- अधूरी और अपूर्ण हों
- आपस में भिन्न और असंगत हों
- और बाद के काल से संबंधित हों

तो **मूल पाठ**, अर्थात्

Original Autograph

तक पहुँचना संभव ही नहीं रह जाता।

(6) अंतिम अकादमिक और ऐतिहासिक निष्कर्ष

कुरआन के किसी भी

प्रारंभिक, पूर्ण और प्रमाणिक **ऑटोग्राफ़**

(Original Autograph) की अनुपस्थिति

उसके अवतरण, संकलन और ऐतिहासिक कथानक को

अनिश्चित और अप्रमाणित बना देती है।

क्योंकि:

जब तक मूल पाठ उपलब्ध न हो,

तब तक वर्तमान पाठ की

उसके मूल ऑटोग्राफ़ से

तुलना और परीक्षण **संभव ही नहीं।**

यह केवल आस्था का प्रश्न नहीं,
बल्कि इतिहास-विज्ञान और पाठालोचन
का एक मूलभूत और केंद्रीय मुद्दा है।

समापन अकादमिक वाक्य (Academic Punchline)

वर्तमान कुरआन

ईमान रखने वालों के लिए

एक प्रमाणिक ग्रंथ हो सकता है,

लेकिन इतिहास की निर्दयी कसौटी पर

उसका पाठ आज भी

बुनियाद-विहीन, असंदर्भित और बीच में लटका हुआ दिखाई देता है।

संदर्भात्मक फुटनोट्स (Footnotes)

1. **John Wansbrough**, *Quranic Studies: Sources and Methods of Scriptural Interpretation*, Oxford University Press, 1977.
↳ कुरआन की संकलन प्रक्रिया, पाठीय विकास और उत्तर-नज़ूल गठन पर एक क्लासिक और मूल शोध।
2. **Patricia Crone & Michael Cook**, *Hagarism: The Making of the Islamic World*, Cambridge University Press, 1977.
↳ प्रारंभिक इस्लामी कथानक और बाद की संपादकीय संरचना पर आलोचनात्मक अध्ययन।
3. **François Déroche**, *The Qur'an: A New Introduction*, Yale University Press, 2014.
↳ कुरआनी पांडुलिपियों, लिपि और पाठीय विविधता पर आधुनिक व प्रमाणिक शोध।
4. **Behnam Sadeghi & Mohsen Goudarzi**,
“San‘ā’ 1 and the Origins of the Qur’an”, *Der Islam*, Vol. 87 (2012).
↳ सना‘आ पेलिम्प्सेस्ट और पाठीय अंतरों पर महत्वपूर्ण आलेख।
5. **Keith Small**, *Textual Criticism and Qur’ān Manuscripts*, Lexington Books, 2011.
↳ कुरआनी पाठों के बीच अंतरों और पांडुलिपीय साक्ष्यों का व्यवस्थित अध्ययन।
6. **Gerd R. Puin**,
“Observations on Early Qur’an Manuscripts in San‘ā’”, *The Qur’an as Text*, Brill, 1996.
↳ सना‘आ पांडुलिपियों में परिवर्तन और अस्थिरता पर शोध।
7. **David Thomas & Barbara Roggema (eds.)**,
Christian-Muslim Relations: A Bibliographical History, Brill.
↳ प्रारंभिक गैर-मुस्लिम स्रोतों में इस्लाम और कुरआन का उल्लेख।
8. **Fred M. Donner**, *Muhammad and the Believers*, Harvard University Press, 2010.
↳ प्रारंभिक इस्लामी आंदोलन और बाद की वैधानिक/आस्थागत संरचना में अंतर।
9. **Arthur Jeffery**, *Materials for the History of the Text of the Qur’ān*, Brill, 1937.
↳ विभिन्न कुरआनी मुशहफ़ों, किराअतों और पाठीय अंतरों का आधारभूत स्रोत।

10. **Nicolai Sinai**, *The Qur'an: A Historical-Critical Introduction*, Edinburgh University Press, 2017.
 ↳ कुरआन के ऐतिहासिक संदर्भ, पाठ और गठन पर आधुनिक आलोचनात्मक अध्ययन।
11. **Yehuda D. Nevo & Judith Koren**, *Crossroads to Islam*, Prometheus Books, 2003.
 ↳ प्रारंभिक इस्लामी इतिहास में लिखित साक्ष्यों की कमी पर चर्चा।
12. **Harald Motzki (ed.)**, *The Biography of Muhammad: The Issue of the Sources*, Brill, 2000.
 ↳ इस्लामी स्रोतों की कालानुक्रमिक देरी और इस्नादी समस्याओं का विश्लेषण।
13. **Shady Hekmat Nasser**, *The Transmission of the Variant Readings of the Qur'ān*, Brill, 2012.
 ↳ किराअत, तवातुर और इस्नादी व्यवस्था की बाद की संरचना।
14. **Jonathan Brown**, *Hadith: Muhammad's Legacy in the Medieval and Modern World*, Oneworld, 2009.
 ↳ हदीस और कुरआन के इस्नादी अंतर पर अकादमिक व्याख्या।
15. **Angelika Neuwirth**, *The Qur'an and Late Antiquity*, Oxford University Press, 2019.
 ↳ कुरआन को Late Antique धार्मिक परिवेश में रखने का आधुनिक अकादमिक प्रयास।

संक्षिप्त अकादमिक टिप्पणी

आधुनिक कुरआनी अध्ययन में अब यह बात व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है कि कुरआन के इतिहास को समझने के लिए

आस्थागत दावों के बजाय पांडुलिपियाँ, लिपि-विज्ञान और पाठ्य प्रमाण ही मूल आधार हैं-

किस्त (3) — हदीस का भंडार ■

❖ **(2) — इस्लाम का दूसरा बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ**

1) सहीह अल-बुखारी — मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी (वफ़ात 256 हिज़्री)

हकीकत:

- इमाम बुखारी के अपने हाथ से लिखा हुआ कोई भी ऑटोग्राफ (autograph) या उनकी ज़िंदगी में तैयार किया गया कोई पूर्ण मूल पांडुलिपि (complete manuscript) आज दुनिया में कहीं भी मौजूद नहीं है।
- आज जो नुस्खे उपलब्ध हैं, वे:
 - तीसरी / चौथी सदी हिज़्री के बाद के हैं
 - इमाम बुखारी के शगिर्दों और बाद के नकलनवीसों (नासिखों) की नकलें हैं
 - विभिन्न रिवायतों पर आधारित हैं
 (जैसे: रिवायत-ए-फ़रबरी, रिवायत-ए-हमवी आदि)

महत्वपूर्ण बिंदु:

- आज की सहीह बुखारी दरअसल इसनादी रिवायत के रूप में हम तक पहुँची है, यानी
रावियों की जंजीर के ज़रिये —
न कि किसी एक सुरक्षित, केंद्रीय मूल पांडुलिपि के माध्यम से।
- नतीजा:
सहीह बुखारी की कोई भी मूल, प्रारंभिक या समकालीन पांडुलिपि मौजूद नहीं है —
और यह एक स्वीकृत और सर्वसम्मत अकादमिक तथ्य है।

2) तारीख-उल-उमम वल-मुलूक — मुहम्मद बिन जरीर अल-तबरी (वफ़ात 310 हिज़्री)

हकीकत:

- इमाम तबरी की तारीख का भी:
 - कोई ऑटोग्राफ (autograph)
 - कोई समकालीन पूर्ण पांडुलिपि
आज उपलब्ध नहीं है।
- जो नुस्खे आज मौजूद हैं:
 - चौथी / पाँचवीं सदी हिज़्री या उससे भी बाद के हैं
 - ये अलग-अलग शहरों (बग़दाद, दमिश्क, काहिरा) में नकल किए गए
 - इनके पाठ (text) में स्पष्ट अंतर और असंगतियाँ पाई जाती हैं

महत्वपूर्ण बिंदु:

- इमाम तबरी स्वयं अपनी किताब में लिखते हैं:
“मैंने वही रिवायतें दर्ज की हैं जो मुझ तक पहुँचीं;
इसलिए उनकी ज़िम्मेदारी रावियों पर है, मुझ पर नहीं।”
- अर्थात् यह किताब:
 - कोई आलोचनात्मक (critical) इतिहास नहीं
 - बल्कि सिर्फ़ रिवायतों का संकलन है
- नतीजा:
तबरी की तारीख की भी कोई मूल हस्तलिखित पांडुलिपि आज दुनिया में कहीं सुरक्षित नहीं है।

3) अस-सीरत-अन-नबविया — अब्दुल मलिक इब्न हिशाम (वफ़ात 218 हिज़्री)

हकीकत:

- इब्न हिशाम की अपनी किताब का भी:
 - कोई ऑटोग्राफ (autograph)

- कोई समकालीन पांडुलिपि आज दुनिया में मौजूद नहीं है।

इसके अलावा:

- इब्न हिशाम की यह किताब दरअसल:
 - इब्न इस्हाक की **खोई हुई सामग्री** की पुनर्रचना है
- इब्न हिशाम स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्होंने:
 - बहुत-सा मूल सामग्री हटा दी
 - जिन बातों को उन्होंने “अशोभनीय या अनुचित” समझा, उन्हें निकाल दिया
 - पाठ को नए अंदाज़ में **दोबारा संपादित** किया

महत्वपूर्ण बिंदु:

- मूल स्रोत (इब्न इस्हाक) **खो चुका है**
- और जो नया पाठ मौजूद है (इब्न हिशाम) वह **संशोधित और संपादित है**
- **नतीजा:**
अस-सीरत-अन-नबविया किसी भी स्थिति में
सीधी प्रारंभिक ऐतिहासिक गवाही नहीं कही जा सकती।

समग्र निष्कर्ष:

इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि इस्लामी इमारत के **तीन मुख्य स्तंभ माने जाने वाले इन विद्वानों की कोई भी मूल हस्तलिखित पुस्तक** आज दुनिया में कहीं उपलब्ध नहीं है।

अकादमिक जगत में इस प्रकार की स्थिति को कहा जाता है:

“द्वितीयक या तृतीयक स्रोत (Secondary / Tertiary Sources)”

— न कि **प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)**

संदर्भ — (Primary Manuscripts & Transmission of Early Islamic Texts)

1) सहीह बुखारी — पांडुलिपियाँ और प्रसारण

1. Jonathan Brown

Hadith: Muhammad's Legacy in the Medieval and Modern World
Oneworld Publications, 2009

► बुखारी की इसनादी परंपरा, शागिर्दों की रिवायतें और ऑटोग्राफ़ की अनुपस्थिति पर स्पष्ट चर्चा।

2. Harald Motzki

The Origins of Islamic Jurisprudence
Brill, 2002

► हदीसी संग्रहों के संकलन के चरणों और बाद की संपादन प्रक्रिया की व्याख्या।

3. G.H.A. Juynboll

The Authenticity of the Tradition Literature
Brill, 1981

► हदीसी साहित्य की प्रामाणिकता और प्रसारण इतिहास पर आलोचनात्मक अध्ययन।

2) तारीख-उल-उमम वल-मुलूक — तबरी

4. Chase F. Robinson

Islamic Historiography
Cambridge University Press, 2003

► तबरी की तारीख, उसके स्रोतों और ऑटोग्राफ़ पांडुलिपियों की अनुपस्थिति पर अकादमिक विश्लेषण।

5. Franz Rosenthal (Translator & Editor)

The History of al-Ṭabarī (SUNY Series)
State University of New York Press

► भूमिका में स्पष्ट किया गया है कि पाठ बाद की पांडुलिपियों पर आधारित है।

6. Hugh Kennedy

The Prophet and the Age of the Caliphates
Routledge, 2004

► प्रारंभिक इस्लामी इतिहास के ग्रंथों की संकलनात्मक प्रकृति पर चर्चा।

3) अस-सीरत-अन-नबविया — इब्न हिशाम / इब्न इस्हाक़

7. Alfred Guillaume

The Life of Muhammad
(Translation of Ibn Ishaq / Ibn Hisham)
Oxford University Press, 1955

► مترجم की भूमिका में मूल इब्न इस्हाक़ के पाठ के लुप्त हो जाने और इब्न हिशाम द्वारा की गई संशोधनों का स्पष्ट स्वीकार।

8. Patricia Crone

Meccan Trade and the Rise of Islam
Princeton University Press, 1987

► सीरत के प्राचीन और भरोसेमंद स्रोत होने पर गंभीर प्रश्न।

9. Michael Cook

Muhammad
Oxford University Press, 1983

► सीरत के स्रोतों की कालगत देरी और ऐतिहासिक समस्याओं पर संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली चर्चा।

4) सामान्य (Manuscripts & Early Islamic Textual History)

10. François Déroche

The Qur'an: A New Introduction

Edinburgh University Press, 2019

► प्रारंभिक इस्लामी पांडुलिपियों और पाठ-प्रसारण (textual transmission) के सिद्धांत।

11. John Wansbrough

Quranic Studies

Oxford University Press, 1977

► इस्लामी ग्रंथों के क्रमिक विकास और पुनः-संपादन पर क्लासिक अध्ययन।

12. Fred M. Donner

Narratives of Islamic Origins

Darwin Press, 1998

► प्रारंभिक इस्लामी कथाओं और उनके देर से ठोस रूप लेने (late crystallization) पर शोधपरक बहस।

आधुनिक अकादमिक शोध के अनुसार:

सहीह बुखारी, तारीख-उल-तबरी और अस-सीरत-अन-नबविया जैसी महत्वपूर्ण इस्लामी मूल कृतियाँ, लेखकों के अपने हाथ से लिखी हुई या उनके समकालीन पांडुलिपियों के रूप में संरक्षित नहीं रहीं।

और ये ग्रंथ:

- बहुत बाद की सदियों में
- इसनादी (रावियों पर आधारित),
- संपादकीय,
- और नकल-नवीसी (copying)

के कई चरणों से गुजरकर

अपनी वर्तमान शकल में हमारे पास पहुँचे हैं।

(Brown 2009; Robinson 2003; Guillaume 1955)

❖ (3) सज़ित-ए-इब्न इस्हाक़ और तारीख-ए-तबरी

इस्लाम नामी

इमारत

जिस

सज़ित पर

खड़ी है

उसके

बारे में

हैरान करने वाले

खुलासे

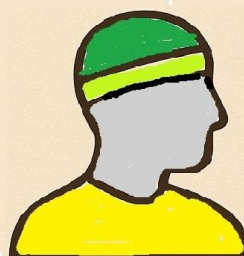
Historically observable evolution of Muhammad

Original
Muhammad

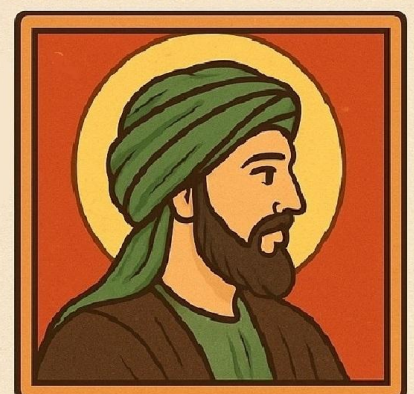


Quthm

Umayyad
Muhammad



Abbasid
Muhammad



✗ इब्न इस्हाक़ (मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन यसार) की मूल किताब कहीं मौजूद नहीं

✗ जिसे सबसे पहली लिखित ऐतिहासिक सः॒ कहा जाता है, वह दरअसल

इब्न हिशाम द्वारा अपनी ओर से संशोधित और बदली हुई **روایت** है —

और वह भी उनके अपने समय की मूल पांडुलिपि नहीं

✗ तबरी (Al-Tabari) की भी अपने समय की मूल लिखावट उपलब्ध नहीं

शुरुआत में मुहम्मद एक धुंधले और कम-विवरण वाले पात्र थे;

उमय्यद दौर में केवल एक राजनीतिक संदर्भ;

और अब्बासी युग में

उन्हें सः॒, हदीस, चमत्कारों और क़ानून की भारी परतों के नीचे

दुनिया का सबसे पवित्र देवतुल्य व्यक्तित्व बना दिया गया।

इतिहास में जो केवल एक इंसान था,

उसे राजनीतिक सत्ता ने

आस्थाओं की पौराणिक कथा में बदल दिया।

नतीजा ✦

यानी जिसे सः॒-ए-नबी कहा जाता है,

वह दरअसल अब्बासी युग में गढ़ी गई एक विस्तृत कहानी है —

न कि इतिहास की कोई मूल और प्रमाणिक गवाही।

❖(4) फ़िक्ह — यानी शरीअत के क़ानूनों की शुरुआत

फ़िक्ही स्रोतों की प्राथमिकता का अभाव — एक बुनियादी ऐतिहासिक समस्या

इस्लामी फ़िक्ह को आमतौर पर

एक सतत, सुरक्षित और प्रारंभिक युग से चली आ रही

अकादमिक परंपरा के रूप में पेश किया जाता है।

लेकिन जब इस दावे को

ऐतिहासिक और पांडुलिपीय मानदंडों पर परखा जाता है,

तो एक गहरा शून्य सामने आता है।

हकीकत यह है कि:

इस्लामी फ़िक्ह के चार बड़े स्थापकों में से

किसी एक की भी मूल, स्वलिखित (autograph) पुस्तक

आज दुनिया में मौजूद नहीं।

(1) इमाम अबू हनीफ़ा (वफ़ात 150 हिज़्री)

- अबू हनीफ़ा से जोड़ी जाने वाली कोई भी फ़िक़्ह कीताब या लिखित संग्रह सीधे तौर पर सुरक्षित नहीं।
- उनकी फ़िक़्ह हमें केवल:
 - बाद के शागिर्दों
(अबू यूसुफ़, मुहम्मद अल-शैबानी, हसन बिन ज़ियाद)
 - और उनसे भी बाद के फ़ुक़हा के माध्यम से मिलती है।
- यानी:
फ़िक़्ह-ए-हनीफ़ी, अबू हनीफ़ा की नहीं,
बल्कि बाद की संपादकीय परंपराओं की उपज है।

(2) इमाम मालिक बिन अनस (वफ़ात 179 हिज़्री) और अल-मुवत्ता

- मुवत्ता की कोई मूल लिखित पहली प्रति मौजूद नहीं।
- मुवत्ता के:
 - दर्जनों अलग-अलग प्रकार के “रिवायती संस्करण” पाए जाते हैं
 - जिनमें:
 - अहादीस
 - फ़िक़्ह राय
 - अध्यायों की व्यवस्था तक अलग-अलग है
- आधुनिक शोध के अनुसार:
 - मुवत्ता दरअसल एक विकासशील पाठ (evolving text) है
 - जो दशकों तक बदलता रहा
 - और जिसमें निरंतर जोड़-घटाव होते रहे

(3) इमाम मुहम्मद बिन इदरीस अश-शाफ़ई (वफ़ात 204 हिज़्री)

- शाफ़ई की फ़िक़्ह हमें:
 - *अल-रिसाला*
 - और *किताबुल-उम्म*
के ज़रिये मिलती है, लेकिन:
- इन पुस्तकों के:
 - प्रारंभिक मसौदे (original drafts) उपलब्ध ही नहीं

- जो वर्तमान पाठ हैं:
 - वे बाद की प्रतियों
 - और उनकी नकल-नवीसी पर आधारित हैं
- इसके अतिरिक्त:
 - इमाम शाफ़ई के
पुराने और नए मतों का अंतर
स्वयं इस बात का प्रमाण है कि
फ़िक़ह का गठन
बाद के समयों में होता रहा।

4) इमाम अहमद बिन हनबल (वफ़ात 241 हिज़्री)

- अहमद बिन हनबल ने:
 - फ़िक़ह को लिखने के बजाय **मौखिक रूप से सुनाने** को प्राथमिकता दी।
- इमाम अहमद से संबंधित प्रसिद्ध किताब “*मुस्नद अहमद*”:
 - स्वयं उनकी रचना नहीं,
 - बल्कि उनके शागिर्दों और अनुयायियों द्वारा **संग्रहित कथाएँ** हैं।
- इमाम अहमद के:
 - कोई व्यक्तिगत फ़िक़ही नोटबुकस
 - कोई व्यवस्थित कानूनी पाठ
मौजूद नहीं।

शोध-संबंधी निष्कर्ष (Methodological Conclusion)

इस पूरे परिदृश्य से कुछ अनिवार्य तथ्य स्पष्ट होते हैं:

1. **इस्लामी फ़िक़ह का कोई मूल पाठ अपने संस्थापक/लेखक के हाथ से लिखित नहीं।**
2. फ़िक़ही सामग्री:
 - **बाद की सदियों में**
 - शागिर्दों, अनुयायियों, स्कूलों और राज्जिक समर्थन के तहत **संग्रहित, चयनित और व्यवस्थित** की गई।
3. फ़िक़ह वास्तव में:
 - सीधे तौर पर “नबी या सहाबी युग की दस्तावेज़” नहीं,
 - बल्कि **अब्बासी दौर के शैक्षिक और राजनीतिक वातावरण** की उपज है।
4. अतः:
 - फ़िक़ह को **दैवी या निश्चित ऐतिहासिक प्रणाली** के रूप में न देखकर,

- इसे एक विकासशील, मानव निर्मित और संपादकीय परंपरा के रूप में समझना अधिक अकादमिक है।

✦ इसे कहने का सही तरीका होगा कि इस्लामी फ़िक्ह “संरक्षित रूप में नहीं पहुंची”, बल्कि बाद में निर्मित और व्यवस्थित की गई, और यही इसका ऐतिहासिक अध्ययन का आधार होना चाहिए।

प्रमुख संदर्भ (Selected References)

- Joseph Schacht, *The Origins of Muhammadan Jurisprudence*, Oxford
- Wael B. Hallaq, *The Origins and Evolution of Islamic Law*
- Harald Motzki, *The Formation of Islamic Law*
- Patricia Crone, *Roman, Provincial and Islamic Law*
- Jonathan Brown, *Hadith: Muhammad's Legacy in the Medieval and Modern World*
- Christopher Melchert, *The Formation of the Sunni Schools of Law*

नतीजा ✦:

इसका मतलब है कि इस्लामी फ़िक्ह की सारी सामग्री पूरी तरह बाद में लिखी, तैयार और व्यवस्थित की गई।

(5) इस्लामी इतिहास के प्रारंभिक और मूल केंद्रों की स्थिति

इस्लामी परंपराओं के अनुसार:

- मक्का, मदीना, बद्र, ऊहुद, खंदक, खैबर, हनिन, यमामा, मुठा और यरमुक जैसी जगहें
 - वे निर्णायक केंद्र हैं जिनके चारों ओर इस्लाम का पूरा इतिहास घूमता है।
 - जहां:
 - एक महान धार्मिक आंदोलन ने जन्म लिया,
 - संघर्षों और लड़ाइयों का सिलसिला चला,
 - राजनीतिक और धार्मिक सत्ता स्थापित हुई,
 - एक नई सभ्यता और संस्कृति की नींव पड़ी।

लेकिन जब इन स्थानों को पुरातात्विक (Archaeology), ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography), और समकालीन लिखित स्रोतों (Contemporary Records) की कसौटी पर परखा जाता है, तो एक असाधारण और चौंकाने वाला दृश्य सामने आता है:

- इस्लाम की पहली डेढ़ सदी (7वीं-आरंभिक 8वीं सदी) से संबंधित इन सभी प्रमुख स्थलों पर:
 - ✗ कोई पहचान योग्य पुरातात्विक अवशेष नहीं
 - ✗ कोई समकालीन लेखन, शिलालेख या अंकन (Inscription) नहीं
 - ✗ कोई मस्जिद या पूजा स्थल, जिसे शुरुआती इस्लामी दौर से जोड़ा जा सके, नहीं
 - ✗ कोई शहरी अवसंरचना (सड़क, बाजार, कार्यालय, मदरसा) नहीं
 - ✗ कोई वित्तीय, सैन्य या प्रशासनिक रिकॉर्ड नहीं
 - ✗ कोई समकालीन इस्लामी दस्तावेज़ नहीं

यह शून्यता सिर्फ संयोग या दुर्घटना नहीं है,

बल्कि इतिहासशास्त्र में इसे एक असामान्य विसंगति (abnormal anomaly) माना जाता है।

पुरातात्विक विसंगति की विशेषता

- दुनिया की लगभग हर छोटी-बड़ी धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक आंदोलन ने अपने पीछे कुछ न कुछ सामग्री संस्कृति (Material Culture) छोड़ी है, जैसे कि:
 - यहूदी धर्म → हिब्रू शिलालेख, सिक्के, बीत टिफेला, बीत कनेसत
 - ईसाई धर्म → क्रॉस के चिन्ह, गिरजाघर, कैथेड्रल, ग्रीक/लैटिन मूल लेख
 - सासानी और बीजान्टाइन साम्राज्य → शाही शिलालेख, सिक्के, कार्यालय, खाता-बही

लेकिन इस्लाम के बारे में विशेष रूप से:

- मक्का और मदीना
 - अब्बासी दौर से पहले कोई स्पष्ट शहरी नक्शा, सजावट या लिखित प्रमाण नहीं
- युद्ध स्थल (बद्र, ऊहुद, खंदक)
 - किसी भी युद्ध का समकालीन संकेत, खाई, किला या सैनिक अवशेष नहीं
- विजयों के स्थान (यर्मुक, मुठा)
 - इस्लाम से संबंधित कोई शिलालेख या सरकारी प्रतीक नहीं

सवाल और विरोध

यदि वास्तव में यह सब महान और निर्णायक घटनाएँ यहां हुईं,

तो इसका सामग्री और भौतिक प्रमाण कहाँ है?

- आधुनिक शोधकर्ता इसे अक्सर “सन्नाटा शताब्दी (Silent Century)” कहते हैं।
- इसका मतलब यह है कि जो दौर इस्लामी परंपराओं में अत्यंत सक्रिय और निर्णायक बताया गया है,

वह इतिहास और पुरातत्व के दृष्टिकोण से पूरी तरह मौन है।

यह मौनता:

- केवल इस्लामी परंपराओं के भीतर के बयान से टकराती नहीं है,
- बल्कि इतिहासलेखन के सामान्य सिद्धांतों के अनुरूप भी नहीं है।

तुलनात्मक सारणी (Comparative Table)

तुलनात्मक पहलू	इस्लाम (7वीं-आरंभिक 8वीं सदी)	अन्य सभ्यताएँ (यहूदी, ईसाई, यूनान, रोम, फारस, मिस्र, भारत, चीन)
समकालीन लिखित स्रोत (Primary Texts)	✗ कोई सुरक्षित मूल पाठ मौजूद नहीं	✓ पर्याप्त समकालीन ग्रंथ, शिलालेख, फरमान, पांडुलिपियाँ
संस्थापक/केंद्रीय व्यक्तित्व का ऑटोग्राफ (Autograph)	✗ नबी मोहम्मद से संबंधित कोई लेखन सुरक्षित नहीं	✓ बुद्ध, प्लेटो, अशोक, रोमन सम्राट, चीनी सम्राटों के लेख/फरमान
पुरातात्विक अवशेष (Archaeology)	✗ मक्का, मदीना, बद्र, ऊहुद आदि शांत/अविकसित	✓ मंदिर, शहर, शिलालेख, सिक्के, मकबरे, इमारतें
लेख/शिलालेख (Inscriptions)	✗ पहली सदी हिजरी से कोई स्पष्ट इस्लामी शिलालेख नहीं	✓ हिब्रू, यूनानी, लैटिन, फारसी, संस्कृत, चीनी शिलालेख
सिक्के (Coinage)	✗ प्रारंभिक इस्लामी सिक्के धार्मिक पहचान से रहित	✓ प्रत्येक सभ्यता के सिक्के धार्मिक व राजनीतिक पहचान रखते थे
पूजा स्थल (Early Religious Buildings)	✗ पहली सदी की निश्चित मस्जिदें मौजूद नहीं	✓ मंदिर, चर्च, पगोडा, ज़िगुराट, स्तूप
कानूनी व प्रशासनिक रिकॉर्ड	✗ कोई समकालीन सरकारी कार्यालय या रजिस्टर नहीं	✓ रोमन कानून, फारसी कार्यालय, चीनी सालनामे
युद्ध स्थलों के अवशेष	✗ बद्र, ऊहुद, खंदक, यरमुक — कोई भौतिक निशान नहीं	✓ यूनानी, रोमन और फारसी युद्ध स्थलों के अवशेष सुरक्षित
ऐतिहासिक सततता (Continuity)	✗ 100–150 वर्षों का स्पष्ट अंतराल	✓ लगातार लिखित और भौतिक सततता
परंपरा का संकलन	⚠ अधिकतर अब्बासी दौर में व्यवस्थित	✓ कालानुसार क्रमिक संकलन
गैर-धार्मिक समकालीन प्रमाण	✗ नगण्य	✓ कई स्वतंत्र और बाहरी स्रोत
कथानक बनाम प्रमाण (Narrative vs. Evidence)	📖 कथानक मजबूत, प्रमाण बेहद कमजोर	📖 कथानक और प्रमाण संगत

तुलनात्मक निष्कर्ष (Analytical Summary)

- दुनिया की हर सभ्यता ने अपने प्रारंभिक दौर की लिखित, भौतिक और भौगोलिक प्रमाण छोड़े।
- केवल प्रारंभिक इस्लाम ऐसा है जहाँ इतिहास का निर्णायक समय पुरातात्विक और समकालीन लिखित स्रोतों के दृष्टिकोण से मौन/खामोश है।
- इस्लाम ने अपने प्रारंभिक अतीत को केवल मौखिक परंपराओं के सहारे छोड़ा, जबकि अन्य सभ्यताएँ अपने अतीत को पत्थर, लकड़ी, लेखन, शिलालेख और अवशेषों में संरक्षित करती रही।

संभवतः शैक्षिक व्याख्याएँ (Scholarly Explanations)

1) इस्लामी परंपराओं का बाद में संकलन (Late Formation of Tradition)

- आधुनिक शोधकर्ताओं की मान्यता है कि जैसी इस्लामी परंपराएँ आज हैं, वे नबी या प्रथम पीढ़ी की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति नहीं करती।
- बल्कि बाद की सदियों में व्यवस्थित और पवित्र रंग में तैयार की गई ऐतिहासिक संरचना हैं।

विशेषताएँ:

- पहली और दूसरी सदी हिजरी तक:
 - धार्मिक कथानक बहुत प्रवाही और असंगठित था।
 - घटनाओं की कोई एकीकृत स्वरूप नहीं थी।
- तीसरी सदी हिजरी तक:
 - पूर्व की कथाओं को केंद्रित, व्यवस्थित और पवित्र रूप दिया गया।
 - विभिन्न कथाओं में से केवल एक को सही इतिहास माना गया।

प्रमुख विद्वान:

- John Wansbrough — *Qur'anic Studies*
- Patricia Crone — *Meccan Trade and the Rise of Islam*
- Michael Cook — *Hagarism*

निष्कर्ष: अधिकांश इस्लामी परंपराएँ पश्चगामी प्रतिपादन (retrojection) हैं:

- यानि बाद के धार्मिक और राजनीतिक विचारों को अतीत में स्थानांतरित करना।

2) भूगोलिक उत्पत्ति के विकल्प (Alternative Geographic Origins)

- कुछ आधुनिक शोधकर्ताओं का मानना है कि इस्लाम की प्रारंभिक गतिविधियाँ मक्का-मदीना के बजाय किसी अन्य भूगोल में हुईं।
- प्रमुख शोधक:
 - Yehuda D. Nevo
 - पुरातात्विक और शिलालेखीय आधार पर मानते हैं कि:

- 7वीं सदी के अरब धार्मिक अभिव्यक्ति में “इस्लाम” एक पूर्ण प्रणाली के रूप में स्पष्ट नहीं था।
- वर्तमान मक्का का कोई विशेष स्थान नहीं था।
- अरब में एकेश्वरवाद पहचान धीरे-धीरे विकसित हुई, बाद में इसे मक्का-मदीना से जोड़ा गया।

○ **Dan Gibson**

- भौगोलिक विश्लेषण के अनुसार:
 - प्रारंभिक क़िब्ला मक्का की ओर नहीं, बल्कि उत्तर अरब/दक्षिणी शाम की दिशा में था।
 - मक्का की केंद्रीयता बाद में स्थापित की गई।
 - इस्लाम की प्रारंभिक संरचना वर्तमान मक्का-मदीना के बजाय किसी अन्य क्षेत्र में हुई।
 - अब्बासी खलीफ़ा ने मक्का-मदीना को केंद्रीय धार्मिक कथानक में समाहित किया।
 - ओटोमन काल और आधुनिक राज्य व्यवस्थाओं ने इसे स्थिर और पवित्र रूप में स्थापित किया।

ये विचार विवादास्पद हैं, लेकिन ये प्रारंभिक अवशेषों, क़िब्ला असंगतियों और भूगोलिक खामोशियों की व्याख्या के लिए वैकल्पिक और समझने योग्य शैक्षिक मॉडल प्रदान करते हैं।

3) अब्बासी दौर में मक्का-मदीना का पुनः विन्यास (Abbasid Reconfiguration of Sacred History)

- आधुनिक शोधकों का लगभग सर्वसम्मति विचार है कि अब्बासी दौर वह मुख्य चरण था जब:
 - इस्लाम का इतिहास, सيرة, हदीस और फ़िक्ह एक व्यवस्थित और केंद्रीय “सरकारी कथानक” में परिवर्तित हुआ।

मुख्य पहलू:

- मक्का और मदीना को:
 - एकल पवित्र केंद्र के रूप में प्रस्तुत करना
- नबी की जीवन कहानी को:
 - राज्य-संस्थापक, योद्धा, विजेता और कानूनदाता के रूप में ढालना
- वंश, पुण्य और पवित्रता को:
 - राजनीतिक वैधता (Legitimacy) से जोड़ना

इस दौर में सामने आते हैं:

- السيرة النبوية की ابن هشام
- تاريخ الرسل والملوك की امام طبري

- सभी मस्जिदों की हदीस की पुस्तकें (सहिह सिट्टा सहित)
जबकि इन ग्रंथों के मूल ऑटोग्राफ और समकालीन लेख अनुपस्थित हैं।

4) राजनीतिक और धार्मिक आवश्यकताओं के तहत “शून्यता और मौन” को कथाओं से भरना
प्रारंभिक इस्लाम की दो शताब्दियों की ऐतिहासिक शांति:

- पुरातात्विक अवशेषों की कमी
- समकालीन गैर-इस्लामी संदर्भों की गंभीर कमी
- लिखित रिकॉर्ड का अभाव

यह एक गंभीर ऐतिहासिक शून्यता पैदा करता है।

अब्बासी राज्य के लिए यह शून्यता:

- धार्मिक एकता के लिए बड़ी चुनौती
- राजनीतिक स्थिरता और वैधता के लिए खतरा
- खलीफा की वैधता और प्राधिकरण के लिए गंभीर कमी

इस शून्यता को कथाएँ, पवित्र अवशेष, चमत्कार और वंशावली से भर दिया गया।

वैज्ञानिक निष्कर्ष (Synthesis)

1. प्रारंभिक इस्लामी इतिहास प्रत्यक्ष मूल ग्रंथों पर आधारित नहीं, बल्कि बाद में संकलित परंपराओं पर आधारित है।
2. मक्का-मदीना की केंद्रीयता संभावित रूप से राजनीतिक निर्माण है।
3. अब्बासी दौर वास्तव में इस्लामी इतिहास का “असामान्य रचनात्मक चरण” है।
4. अतीत की मौनता स्वयं एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण है।

आधुनिक विद्वान सुझाव देते हैं कि इस्लामी परंपराओं को सिर्फ धार्मिक विश्वास के आधार पर नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, ग्रंथीय और पुरातात्विक दृष्टिकोण से पढ़ा जाना चाहिए।

खज़ाना-ए-मदीना और हरे गुंबद का मामला

- मौजूदा हरे गुंबद के नीचे कथित रूप से रसूल ﷺ, अबूबकर और उमर के शव हैं।
- परंतु कोई समकालीन, स्वतंत्र और गैर-धार्मिक पुरातात्विक या शिलालेख प्रमाण मौजूद नहीं।
- मूल ढांचा प्रारंभिक कुछ सदियों तक लकड़ी का साधारण कमरा था।
- 1817 में इसे ओटोमन सुल्तान महमूद सानी ने हरे गुंबद के रूप में निर्मित किया।
- इसलिए वर्तमान संरचना और इसे लेकर विश्वास बाद की कालखंडीय निर्माण है, वास्तविक सातवीं सदी का प्रमाण नहीं।

मीसाक़-ए-मदीना (Constitution of Medina)

- दावा: पहली लिखित संवैधानिक प्रथा जिसे नबी ﷺ ने मदीना में स्थापित किया।

- वास्तविकता:
 - कोई मूल पांडुलिपि मौजूद नहीं।
 - सबसे पुराना संदर्भ: इब्न इशाक (150 हिजरी / 767 ई.), फिर इब्न हिशाम (218 हिजरी / 833 ई.)।
 - घटना (622 ई.) और लिखित स्रोत के बीच कम से कम 150–200 वर्षों का अंतराल।
- निष्कर्ष: मीसाक-ए-मदीना का कोई प्रारंभिक और मूल स्रोत नहीं, यह बाद में संकलित परंपरागत ग्रंथ है।

रसूल ﷺ के नाम पत्र (Letters to Kings)

- दावा: रोमन, फारसी, हबशी, मिस्र आदि के शासकों को भेजे गए।
- वास्तविकता:
 - कोई भी मूल पत्र सातवीं सदी का सुनिश्चित रूप से मौजूद नहीं।
 - जो उदाहरण मिलते हैं, वे या तो बाद की प्रतियां हैं या धार्मिक स्मृति/देवotional relics।
 - मुहर (محمد) रसूल अल्लाह की कोई समकालीन पुष्टि नहीं।
- निष्कर्ष: ये सब बाद की इस्लामी परंपरा का हिस्सा हैं, सातवीं सदी के प्रत्यक्ष स्रोत नहीं।

सारांश निष्कर्ष

1. नबी ﷺ से संबंधित सभी प्रमुख स्रोत (कुरआन, हदीस, सीरत, इतिहास, फिक्रह) के मूल और रचनाकार द्वारा लिखित ग्रंथ अनुपलब्ध हैं।
2. दूसरी सभ्यताओं के पास:
 - ठोस शिलालेख, पत्थर/लकड़ी की संरचनाएँ, दीवारों और चट्टानों पर लेख, मूल पांडुलिपियाँ, सरकारी फरमान, पुरातात्विक अवशेष, पूजा स्थल आदि सुरक्षित हैं।
3. इस्लाम का प्रारंभिक दौर (150–200 वर्ष) ऐतिहासिक दृष्टि से “ब्लैक होल” कहलाता है।

महत्वपूर्ण विद्वान:

Yehuda D. Nevo, Patricia Crone, Gerd R. Puin, Michael Cook, Gerald Hawting, Dan Gibson, Fred M. Donner, Angelika Neuwirth, Robert G. Hoyland, John Wansbrough, Stephen J. Shoemaker, Nicolai Sinai

निष्कर्ष: आज जिस इस्लाम को समझा जाता है, वह दूसरी या तीसरी पीढ़ी की परंपराओं पर आधारित है, न कि प्रारंभिक स्रोतों पर।

इस्लाम की प्रारंभिक ऐतिहासिक समीक्षा – संक्षिप्त सारांश

1. हदीस (Hadith)

- प्रमुख संग्रह: सहीह अल-बुखारी
- वास्तविकता:
 - बुखारी का मूल हस्तलिखित (autograph) ग्रंथ या हमसंग पांडुलिपि उपलब्ध नहीं।

- वर्तमान संस्करण छठी-सातवीं शताब्दी में छात्रों और नासखों द्वारा संकलित।
- विभिन्न संस्करण (फुरबरी, हमावी आदि) में सांकेतिक मतभेद हैं।
- निष्कर्ष: बुखारी हदीस हमसंग मूल पांडुलिपि पर आधारित नहीं, बल्कि दो-तीन शताब्दियों बाद संकलित परंपरा है।
- स्रोत: Jonathan Brown (2009), Harald Motzki (2002), G.H.A. Juynboll (1981)

2. सैरत/इतिहास (Sira & History)

- प्रमुख ग्रंथ:
 1. सैरत-ए-नबी (इब्न हिशाम) – इब्न हिशाम ने इब्न इशाक की गुम सामग्री से नया ग्रंथ बनाया।
 - बहुत सामग्री हटाई या संशोधित की गई, मूल इब्न इशाक का ग्रंथ उपलब्ध नहीं।
 2. तारीख-उल-उम्मम वाल-मुलूक (अल-ताबरी)
 - कोई मूल पांडुलिपि उपलब्ध नहीं; वर्तमान संस्करण छठी-सातवीं शताब्दी की नकलें।
- निष्कर्ष: प्रारंभिक इस्लामी इतिहास असली स्रोतों पर नहीं, बल्कि बाद की संस्करणात्मक और संशोधित कथाओं पर आधारित है।
- स्रोत: Guillaume (1955), Crone & Cook (1987), Michael Cook (1983)

3. फिक्ह/शरीअह (Fiqh/Islamic Law)

- चार प्रमुख मफ़्ती (हवली): अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ी, अहमद बिन हनबल
- वास्तविकता:
 - कोई भी मूल हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध नहीं।
 - उनके विचार छात्रों, अनुयायियों और बाद के विद्वानों द्वारा संकलित।
 - मुआतः
 - अबू हनीफ़ा की फिक्ह केवल छात्रों के माध्यम से।
 - मालिक का मौत्ता विकसित और विविध संस्करणों में।
 - शाफ़ी के ग्रंथ (अल-रिसाला, किताबुल-उम्म) मूल पांडुलिपि अनुपलब्ध।
 - अहमद बिन हनबल का मसंद उनके छात्रों द्वारा संकलित।
- निष्कर्ष: प्रारंभिक फिक्ह उत्कृष्ट मौलिक दस्तावेज़ पर आधारित नहीं, बल्कि बाद की विकसित और राजनीतिक रूप से संगठित परंपरा है।
- स्रोत: Joseph Schacht, Wael B. Hallaq, Patricia Crone, Jonathan Brown

4. प्रारंभिक ऐतिहासिक मौन (Historical Silence / Archaeological Black Hole)

- मक्का, मदीना, बद्र, उहुद, खंदक आदि प्रारंभिक इस्लामी स्थल पुरातात्विक प्रमाण विहीन।
- कोई समकालीन गैर-इस्लामी रिकॉर्ड, कुर्बानी स्थल, लिखित दस्तावेज़ या मुद्राएँ नहीं।
- मीसाक-ए-मदीना और नबी से संबद्ध संदेश/पत्र का कोई मूल स्रोत उपलब्ध नहीं।
- निष्कर्ष:
 - प्रारंभिक 150–200 वर्षों की ऐतिहासिक शांति (Black Hole) स्पष्ट है।
 - इस अवधि की घटनाएँ समकालीन प्रमाणों से समर्थित नहीं, केवल बाद में निर्मित परंपरागत कथाओं और हदीस पर आधारित।
- स्रोत: Yehuda D. Nevo & Judith Koren, Patricia Crone & Michael Cook, Dan Gibson, Fred M. Donner, Robert Hoyland

सारांश एवं तुलनात्मक विश्लेषण

1. सभी प्रमुख इस्लामी स्रोत (कुरआन, हदीस, सैरत, इतिहास, फिक्ह) के मूल पांडुलिपियाँ अनुपलब्ध।
2. प्रारंभिक इस्लामी इतिहास का अधिकांश हिस्सा बाद की शताब्दियों में संकलित, संशोधित और संगठित।
3. अन्य सभ्यताओं (यहूदी, ईसाई, यूनान, रोम, फारस, भारत, चीन) के पास मूल ग्रंथ, पुरातात्विक अवशेष, लेख, सिक्के, अभिलेख मौजूद।
4. इस्लाम का प्रारंभिक दौर, 150–200 वर्ष, इतिहास में “ब्लैक होल” कहलाता है।
5. नतीजा: धार्मिक विश्वास और ऐतिहासिक प्रमाण अलग हैं; ऐतिहासिक अध्ययन के लिए केवल वास्तविक ग्रंथीय और पुरातात्विक प्रमाण मान्य हैं।

इस्लाम की प्रारंभिक ऐतिहासिक समीक्षा – संक्षिप्त सारांश (Updated)

1. हदीस (Hadith)

- प्रमुख संग्रह: सहीह अल-बुखारी
- वास्तविकता:
 - बुखारी का मूल हस्तलिखित ग्रंथ या हमसंग पांडुलिपि उपलब्ध नहीं।
 - वर्तमान संस्करण छठी-सातवीं शताब्दी में छात्रों और नासखों द्वारा संकलित।
 - विभिन्न संस्करण (फुरबरी, हमावी आदि) में सांकेतिक मतभेद।
- उदाहरण: हुम्माम बिन मनब्बा की कथित “सहीफा” भी मूल ग्रंथ नहीं, बल्कि 130–150 वर्ष बाद की नक़ल और मसंद अहमद में शामिल रोवायात।
- निष्कर्ष: हदीस संग्रह मूल हस्तलिखित पर आधारित नहीं, बल्कि बाद की शताब्दियों में संकलित और व्यवस्थित।
- स्रोत: Jonathan Brown (2009), Harald Motzki (2002), G.H.A. Juynboll (1981)

2. सैरत/इतिहास (Sira & History)

- प्रमुख ग्रंथ:
 1. **सैरत-ए-नबी (इब्न हिशाम)** – इब्न हिशाम ने इब्न इशाक की गुम सामग्री से नया ग्रंथ बनाया।
 - मूल ग्रंथ उपलब्ध नहीं; बहुत सामग्री हटाई या संशोधित।
 2. **तारीख-उल-उम्मम वाल-मुलूक (अल-ताबरी)**
 - कोई मूल पांडुलिपि उपलब्ध नहीं; वर्तमान संस्करण छठी-सातवीं शताब्दी की नकलें।
- निष्कर्ष: प्रारंभिक इतिहास मूल स्रोतों पर नहीं, बल्कि बाद की संशोधित कथाओं पर आधारित।
- स्रोत: Guillaume (1955), Crone & Cook (1987), Michael Cook (1983)

3. फिक्ह/शरीअह (Fiqh/Islamic Law)

- चार प्रमुख मफ़्ती: अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ी, अहमद बिन हनबल
- वास्तविकता:
 - कोई भी मूल हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध नहीं।
 - उनके विचार छात्रों, अनुयायियों और बाद के विद्वानों द्वारा संकलित।
- निष्कर्ष: प्रारंभिक फिक्ह मौलिक दस्तावेज़ पर आधारित नहीं, बल्कि बाद की विकसित और राजनीतिक रूप से संगठित परंपरा।
- स्रोत: Joseph Schacht, Wael B. Hallaq, Patricia Crone, Jonathan Brown

4. प्रारंभिक ऐतिहासिक मौन (Historical Silence / Archaeological Black Hole)

- स्थल: मक्का, मदीना, बद्र, उहुद, खंदक आदि प्रारंभिक इस्लामी स्थल पुरातात्विक प्रमाण विहीन।
- कोई समकालीन गैर-इस्लामी रिकॉर्ड, कुर्बानी स्थल, लिखित दस्तावेज़ या मुद्राएँ नहीं।
- मीसाक-ए-मदीना और नबी से संबद्ध संदेश/पत्र का कोई मूल स्रोत उपलब्ध नहीं।
- निष्कर्ष: 150–200 वर्ष की ऐतिहासिक शांति (Black Hole) स्पष्ट।
- स्रोत: Yehuda D. Nevo & Judith Koren, Patricia Crone & Michael Cook, Dan Gibson, Fred M. Donner, Robert Hoyland

5. आधुनिक शोध और निष्पक्ष दृष्टिकोण

- आधुनिक शोधकर्ताओं ने “ब्लैक होल” की पुष्टि की और आधुनिक ऐतिहासिक विधि के आधार पर प्रश्न उठाए।
- ये वैज्ञानिक नहीं किसी धर्म का विरोध, बल्कि अनुसंधान और सबूत आधारित विश्लेषण करते हैं।

- अंतर:
 - धार्मिक विश्वास → ईमान, अल्लाह की शक्ति, कुरआन की रक्षा
 - ऐतिहासिक अध्ययन → वास्तविक ग्रंथ, पांडुलिपि, पुरातात्विक प्रमाण, समकालीन दस्तावेज़
- निष्कर्ष: इस्लामी कथाएँ सामान्यतः बाद की परंपराओं पर आधारित, ऐतिहासिक प्रमाण सीमित।
- विशेष नोट: हुम्माम बिन मनब्बा की कथित “सहीफ़ा” 7वीं शताब्दी का मूल ग्रंथ नहीं, बल्कि 10वीं–11वीं शताब्दी की नकल।

6. सारांश और तुलनात्मक निष्कर्ष

पहलू	प्रारंभिक इस्लाम (7वीं–8वीं शताब्दी)	अन्य सभ्यताएँ
मूल ग्रंथ	✗ उपलब्ध नहीं	✓ मूल पांडुलिपियाँ, कुर्बानी, अभिलेख
हस्तलिखित/autograph	✗ नबी, मफ़ती का उपलब्ध नहीं	✓ बुद्ध, अफ़लातून, अशोक, रोमन सम्राट
पुरातात्विक प्रमाण	✗ मक्का, मदीना, युद्ध स्थल शून्य	✓ मंदिर, शहर, सिक्के, अभिलेख
समकालीन लिखित दस्तावेज़	✗ अनुपलब्ध	✓ फरमान, अभिलेख, पांडुलिपि
ऐतिहासिक सततता	✗ 100–150 वर्ष का ब्लैक होल	✓ निरंतर दस्तावेज़ीय और पुरातात्विक प्रमाण

मुख्य निष्कर्ष:

1. प्रारंभिक इस्लामी स्रोत (हदीस, सैरत, इतिहास, फ़िक्ह) मौलिक पांडुलिपि पर आधारित नहीं।
2. प्रारंभिक 150–200 वर्षों का इतिहास अदृश्य और संदिग्ध, केवल बाद में व्यवस्थित कथाओं के आधार पर।
3. धर्म और विश्वास के लिए कथाएँ पर्याप्त, लेकिन ऐतिहासिक अध्ययन के लिए अपर्याप्त।
4. आधुनिक शोधकर्ता तथ्यात्मक और स्रोत-संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाते हैं।

प्रारंभिक इस्लामी इतिहास: हदीस, सैरत, फ़िक्ह और ऐतिहासिक शून्यता का संक्षिप्त सारांश

1. हदीस (Hadith)

- प्रारंभिक स्रोत: सहीह अल-बुखारी, मसंद अहमद
- वास्तविकता:
 - कोई मूल हस्तलिखित ग्रंथ या हमसंग पांडुलिपि उपलब्ध नहीं।

- हदीसों छात्रों और अनुयायियों द्वारा बाद में संकलित, लगभग 130–150 वर्षों के अंतराल के बाद।
- उदाहरण: हुम्माम बिन मनब्बा की कथित “सहीफ़ा” भी मूल नहीं, बल्कि मसंद अहमद में शामिल बाद की नकल।
- निष्कर्ष: हदीस का मौलिक प्रमाण नहीं, केवल बाद की पारंपरिक व्याख्या मौजूद।
- स्रोत: Jonathan Brown, Harald Motzki, G.H.A. Juynboll

2. सैरत/इतिहास (Sira & Early History)

- प्रारंभिक ग्रंथ: इब्न इशाक/इब्न हिशाम
- वास्तविकता:
 - मूल ग्रंथ अनुपलब्ध, इब्न हिशाम ने सामग्री संपादित की।
 - मदीना, मक्का, युद्ध स्थल आदि के पुरातात्विक प्रमाण नहीं।
- **Historical Black Hole**: 150–200 वर्ष की मौन अवधि, जिसमें कोई समकालीन गैर-इस्लामी स्रोत, दस्तावेज़ या प्रशासनिक रिकॉर्ड नहीं।
- राजनीतिक और कबीलाई संघर्षों के कारण:
 - सदी की शुरुआत में सत्ता का संघर्ष और जमीनी अशांति।
 - सत्ता पर कब्जा पहले, इतिहास बाद में लिखा गया।
- स्रोत: Crone & Cook, Fred M. Donner, Yehuda D. Nevo & Judith Koren, Dan Gibson

3. फ़िक़ह/शरीअह (Fiqh)

- चार प्रमुख मफ़्ती: अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ी, अहमद बिन हनबल
- वास्तविकता:
 - कोई मूल लेख या फ़िक़ह का दस्तावेज़ नहीं।
 - उनके विचार बाद के शताब्दियों में छात्रों और अनुयायियों द्वारा संकलित।
- निष्कर्ष: प्रारंभिक फ़िक़ह मौलिक दस्तावेज़ पर आधारित नहीं, बल्कि बाद की विकसित और राजनीतिक रूप से संगठित परंपरा।
- स्रोत: Joseph Schacht, Wael Hallaq, Patricia Crone

4. प्रारंभिक ऐतिहासिक मौन (Historical Silence)

- स्थल: मक्का, मदीना, बद्र, उहुद, खंदक, यरमुक आदि
- कोई समकालीन लिखित या पुरातात्विक प्रमाण नहीं।
- मीसाक-ए-मदीना, नबी से संबद्ध पत्र/संदेश का कोई मूल संस्करण उपलब्ध नहीं।
- परिणाम: 150–200 वर्ष का “Black Hole”।

- कारण:
 - सत्ता हस्तांतरण का राजनीतिक संघर्ष।
 - प्रारंभिक मुस्लिम समुदाय में संस्थागत और प्रशासनिक ढांचे की कमी।
 - सत्ता और राजनीतिक प्राथमिकताओं ने **दस्तावेज़ निर्माण को बाधित** किया।
- **स्रोत:** Patricia Crone, Michael Cook, Yehuda D. Nevo, Robert Hoyland

5. आधुनिक शोध और निष्कर्ष

- आधुनिक विद्वान: Yehuda D. Nevo, Patricia Crone, Michael Cook, Dan Gibson, Fred Donner, John Wansbrough, Robert Hoyland
- दृष्टिकोण: **साक्ष्य और स्रोत आधारित ऐतिहासिक विश्लेषण**, न कि धार्मिक विश्वास।
- निष्कर्ष:
 1. प्रारंभिक स्रोत (हदीस, सैरत, इतिहास, फ़िक्ह) **मौलिक पांडुलिपियों पर आधारित नहीं**।
 2. 150–200 वर्षों का कालखंड **ऐतिहासिक दृष्टि से मौन और संदिग्ध**।
 3. धर्म और विश्वास के लिए कथाएँ पर्याप्त, पर **ऐतिहासिक अध्ययन के लिए अपर्याप्त**।
 4. **अब्बासी दौर** में संकलन और आधिकारिक इतिहास की रचना।

6. सारांश तालिका (Comparative Summary)

पहलू	प्रारंभिक इस्लाम	अन्य सभ्यताएँ (यहूदी, रोम, ग्रीक, फर्सी, चीन)
मूल ग्रंथ	✗ उपलब्ध नहीं	✓ मूल पांडुलिपियाँ, अभिलेख, सिक्के
हस्तलिखित / Autograph	✗ नबी, मफ़्ती का उपलब्ध नहीं	✓ बुद्ध, अफ़लातून, रोमन, अशोक आदि
पुरातात्विक प्रमाण	✗ मक्का, मदीना, युद्ध स्थल शून्य	✓ मंदिर, शहर, सिक्के, अभिलेख
समकालीन दस्तावेज़	✗ अनुपलब्ध	✓ फरमान, पांडुलिपि, सरकारी अभिलेख
ऐतिहासिक सततता	✗ 100–150 वर्ष का Black Hole	✓ निरंतर दस्तावेज़ीय और पुरातात्विक प्रमाण

निष्कर्ष

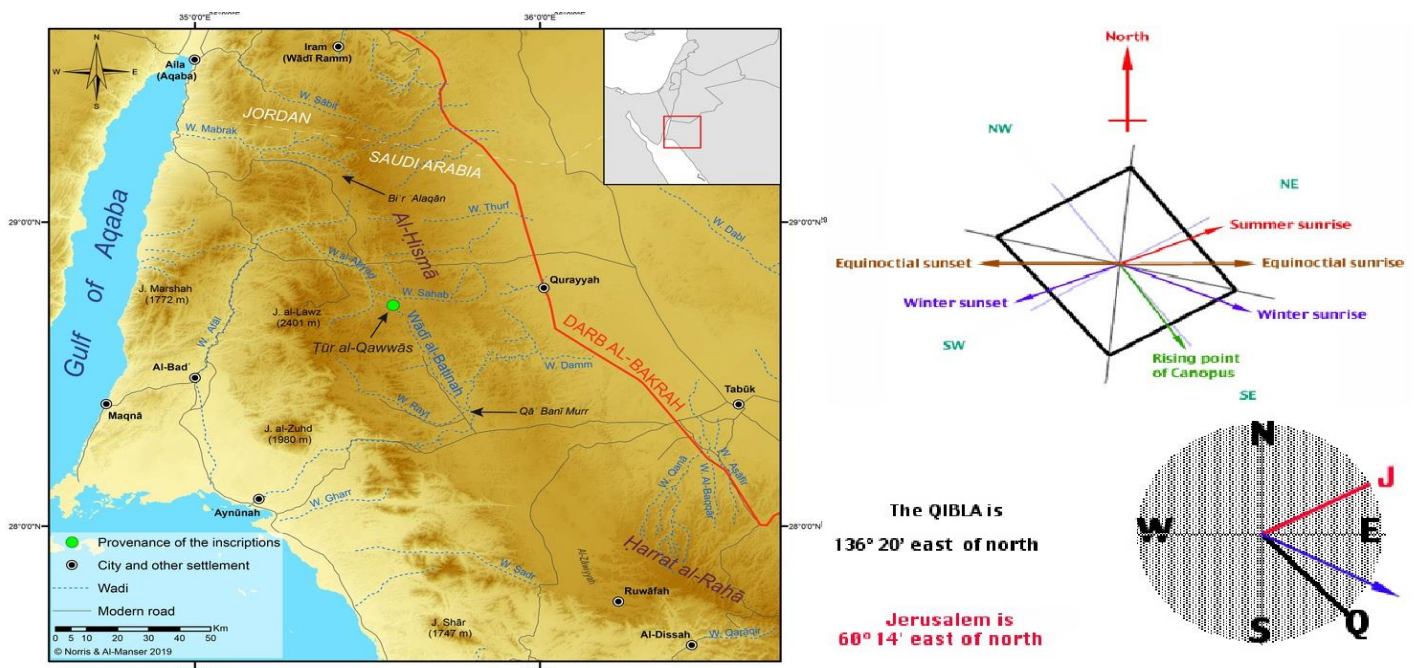
- प्रारंभिक इस्लामी ग्रंथ, हदीस, सैरत, फ़िक्ह **मौलिक पांडुलिपि पर आधारित नहीं**, केवल बाद की परंपरा और अब्बासी दौर की आधिकारिक निर्माण।
- प्रारंभिक 150–200 वर्ष **ऐतिहासिक दृष्टि से Black Hole**, सत्ता संघर्ष और राजनीतिक प्राथमिकताओं के कारण।

- आधुनिक शोध ऐतिहासिक प्रमाणों, पांडुलिपियों और पुरातात्विक दृष्टि से तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक इस्लामी इतिहास: लेखन का मौन और राजनीतिक-पारंपरिक प्रभाव

1. प्रारंभिक लेखन का संकट

- सातवीं और आठवीं शताब्दी ईस्वी — इस्लाम के उद्भव और विस्तार का समय।
- लेकिन मौलिक और पुरातात्विक प्रमाणों की कमी:
 - कोई पूर्ण किताब
 - कोई व्यवस्थित फिक्रह संग्रह
 - कोई संकलित हदीस संग्रह
 - कोई सम्पूर्ण सैरत या इतिहास
 - कोई सरकारी अभिलेख
 - और स्वयं पैगंबर या खलीफ़ाओं का कोई मौलिक कुरआन
- जो कुछ मिलता है, वह या तो खंडित रूप में है या बाद में संपादित और संशोधित।
- प्रश्न: क्या प्रारंभिक लेखन कभी मौलिक रूप में मौजूद था? या राजनीतिक कारणों से नष्ट कर दिया गया?



2. पारंपरिक बहाना और आधुनिक अनुसंधान

- पारंपरिक स्रोत: प्रारंभिक पांडुलिपियाँ युद्ध, फतनों या आपदाओं के कारण नष्ट हुईं।
- आधुनिक विद्वान (Crone, Cook, Nevo, Donner) यह सवाल उठाते हैं कि:
 - यदि एक व्यापक धार्मिक-नैतिक सभ्यता विकसित हो रही थी, तो उसके प्रारंभिक ज्ञान का संरक्षण क्यों नहीं हुआ?
 - ईसाई, यहूदी, रूम, फ़ारसी, भारतीय और चीनी ग्रंथ अधिकांशतः सुरक्षित हैं।

3. प्रमुख प्रारंभिक ग्रंथ और उनकी मौलिकता

ग्रंथ	लेखक	मौलिक स्थिति
मुअत्ता:	इमाम मालिक	मूल पांडुलिपि उपलब्ध नहीं; उपलब्ध संस्करण 4वीं–7वीं सदी के बाद की प्रतियां
किताब अल-मगाज़ी	अल-वाकिदी	मूल हस्तलिखित नहीं, बाद में संपादित

सैरत रसूलुल्लाह इब्न इशाक मूल ग्रंथ नष्ट; इब्न हिशाम ने संपादन किया

- निष्कर्ष: अधिकांश प्रारंभिक ग्रंथ बाद की अवधि में व्यवस्थित और संकलित किए गए, विशेषकर अब्बासी दौर में।

4. राजनीतिक कारण और लिखित सामग्री का नष्ट होना

- प्रारंभिक 100–150 वर्षों में सत्ता संघर्ष, गृहयुद्ध और कबीलाई टकराव।
- उमय्यद और अब्बासी बदलाव:
 - न केवल शासक परिवार बदला, बल्कि धार्मिक व्याख्या और ऐतिहासिक स्मृति भी पुनर्निर्मित हुई।
 - उमय्यद से संबंधित सभी दस्तावेज, स्मारक, पत्र, अभिलेख, यहां तक कि कुछ مصحف राजनीतिक खतरे के रूप में माने गए और हटाए गए।
- अब्बासी शासन ने:
 - हदीस संकलन को व्यवस्थित किया
 - सैरत और मगाज़ी की व्याख्या स्थापित की
 - फिक्ह को सिद्धांतों पर आधारित किया
 - कुरआन की पाठ्य और व्याख्या पर तोर और अन्य व्याख्याएँ स्थापित की
- निष्कर्ष: प्रारंभिक इस्लामी लेखन का संरक्षण राजनीतिक और वैचारिक जरूरतों के अनुसार व्यवस्थित किया गया।

5. ऐतिहासिक महत्व

- प्रारंभिक लेखन और पांडुलिपियों का अभाव केवल धार्मिक बहाना नहीं, बल्कि वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रश्नों का आधार।
- यह स्थिति, जिसे आधुनिक विद्वान “Historical Black Hole” कहते हैं, दिखाती है कि:
 - प्रारंभिक इस्लामिक कथाएँ आस्था के लिए पर्याप्त, लेकिन ऐतिहासिक विश्लेषण के लिए अपर्याप्त।
 - अब्बासी दौर ने संपूर्ण परंपरा और इतिहास का आधिकारिक स्वरूप स्थापित किया।

6. सारांश

1. प्रारंभिक 150–200 वर्षों में कोई मूल लेखन या संरक्षित पांडुलिपि उपलब्ध नहीं।
2. प्रारंभिक राजनीतिक संघर्ष और गृहयुद्ध ने लेखन और दस्तावेजों को प्रभावित किया।
3. अब्बासी शासन ने व्यवस्थित, राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्यों के अनुरूप इतिहास और हदीस तैयार की।
4. आधुनिक शोध ऐतिहासिक प्रमाण, पांडुलिपियाँ और पुरातात्विक साक्ष्य पर आधारित हैं, न कि केवल धार्मिक विश्वास पर।

प्रारंभिक इस्लाम: दस्तावेज़ी मौन और ऐतिहासिक अंतराल

1. प्रारंभिक राज्य का विलंबित गठन

- शुरुआती इस्लामी दशकों में कोई मजबूत केंद्रीय शासन नहीं था।
- क्षेत्रीय इकाइयाँ अर्द्ध-जनजातीय और असंगठित थीं।
- ब्यूरोक्रेसी, संस्थागत रिकॉर्ड और अभिलेखागार का कोई व्यवस्थित ढांचा नहीं।
- लेखन और दस्तावेज़ी संरक्षण संभावना के रूप में भी सीमित, अधिकांश ज़बानी रूप में संचरित।

2. प्रारंभिक समाज और मौखिक परंपरा (Oral Culture)

- समाज मौखिक परंपरा पर आधारित:
 - कथाएँ, हदीस, इतिहास, और धार्मिक संदेश जुबानी रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित।
 - लिखित अनुबंध और दस्तावेज़ केवल सुपरविशेषज्ञ वर्ग तक सीमित।
 - स्मृति और याददाश्त चयनात्मक और समय के साथ परिवर्तनीय (Cognitive Psychology)।
- परिणाम:
 - कथाओं में संसोधन, हेरफेर और हटाव स्वाभाविक।
 - मौखिक रूप की सटीकता और स्थायित्व नहीं।

3. राजनीतिक संघर्ष और दस्तावेज़ी नुकसान

- प्रारंभिक 100–150 वर्षों में राजनीतिक अस्थिरता, गृहयुद्ध और कबीलाई संघर्ष।
- सत्ता परिवर्तन (उमय्यद → अब्बासी) ने पूर्वी रिकॉर्ड, अभिलेख और दस्तावेज़ों को नष्ट कर दिया।
- कारण:
 - पुराने शासन को खतरा माना गया
 - धार्मिक और ऐतिहासिक सामग्री को राजनीतिक दृष्टिकोण से पुनर्निर्मित किया गया

4. अब्बासी काल में दस्तावेज़ी और धार्मिक पुनर्गठन

- अब्बासी शासन ने मजबूत राज्य और केंद्रीय नियंत्रण स्थापित किया।
- धार्मिक और ऐतिहासिक लेखन की व्यवस्थित पुनर्निर्मिति:
 - हदीस और सैरत संकलित
 - फिक्ह के सिद्धांत स्थापित
 - कुरआन की पाठ्य व्यवस्था और व्याख्या सुनिश्चित
- इस दौरान अनुकूल न होने वाली सामग्री को अप्रमाणित या नष्ट किया गया।

5. धार्मिक प्रतिष्ठा और बाद की उत्पत्ति

- प्रारंभिक सामग्री के नष्ट होने के बाद:
 - धार्मिक ग्रंथों और कथाओं को उच्च सम्मान और अलहदयता का हॉलो प्रदान किया गया।
 - मौलिक ग्रंथ पहले ही अनुपलब्ध, केवल बाद की प्रतियों और संशोधनों पर आधारित।
- आधुनिक विद्वानों का निष्कर्ष:
 - मौलिक पांडुलिपियाँ (Autograph) उपलब्ध नहीं
 - उपलब्ध सामग्री बाद की शताब्दियों में संपादित और संशोधित

6. निष्कर्ष: गंभीर ऐतिहासिक अंतराल

- प्रारंभिक इस्लामी दस्तावेज़ और पांडुलिपियों की अनुपस्थिति केवल दुर्भाग्य नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, राजनीतिक और वैचारिक कारणों का परिणाम।
- अब्बासी काल ने सांस्कृतिक और धार्मिक कथा की रूपरेखा स्थापित की, लेकिन यह असली प्रारंभिक स्रोतों का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व नहीं करता।
- इस स्थिति को आधुनिक इतिहासशास्त्र में कहा जाता है:

“The Severe Crisis of Early Islamic Documentary Absence”

निष्कर्ष: अनिवार्य शैक्षिक परिणाम

इस पूरे ऐतिहासिक परिदृश्य से कुछ अनिवार्य निष्कर्ष निकलते हैं:

1. प्रारंभिक इस्लामी परंपरा का क्रम प्रत्यक्ष, प्रामाणिक और विश्वसनीय लिखित आधार पर आधारित नहीं है।
2. जो कुछ हमारे पास है, उसका अधिकांश भाग सदियों बाद की राजनीतिक और प्रशासनिक ज़रूरतों के अनुसार संकलित और संपादित है।
3. पहले खलीफा (सदर-ए-औल) के बारे में हमारे धार्मिक विचार और विश्वास अधिकतर अब्बासी काल की राजनीतिक और व्यक्तिगत कथाओं पर आधारित हैं।

4. आधुनिक विज्ञान और ऐतिहासिक अनुसंधान के सामने, परंपरागत इस्लामी दावे किसी भी ठोस और स्थिर आधार पर खड़े नहीं होते।

अंतिम बिंदु:

यही असंगति और संकट कारण है कि हम इस्लामी परंपरा का अध्ययन **इतिहास, अनुसंधान और आलोचनात्मक दृष्टिकोण** से करें, न कि केवल परंपरागत, पूजनीय और पुष्टि-आधारित तरीके से।

प्रारंभिक सैरत और मघाज़ी: संरचना और चुनौतियाँ

परिचय:

- इस्लामी मानसिकता और पारंपरिक विश्वास का मुख्य आधार **सैरत और मघाज़ी** है।
- मुसलमानों में नबी ﷺ का जीवन, युद्ध, समझौते, सामाजिक व्यवहार और धार्मिक आदेश अधिकतर इन परंपराओं से लिए जाते हैं।
- पर आश्चर्यजनक तथ्य:
 - न तो इब्न इस्हाक की “*सैरत-उर-रसलल्लाह*” की कोई मौलिक प्रारंभिक प्रति उपलब्ध है,
 - न वाक़दी की *किताबुल मघाज़ी*,
 - न इब्न हिशाम की *अल-सैरतुन्नबविय्याह* का कोई प्रारंभिक मसौदा।
- यह कमी केवल संयोग या दुर्घटना नहीं, बल्कि यह **गंभीर और कठिन ऐतिहासिक प्रश्न** खड़ा करती है:

प्रारंभिक इस्लामी कथाओं की वास्तविक रूपरेखा और सही छवि क्या थी?

1. सैरत और मघाज़ी — इस्लामी कथानक की रीढ़

सैरत और मघाज़ी की परंपरा से निहित जानकारी:

- नबी ﷺ का व्यक्तित्व
- नबी के माता-पिता और परिवार
- नबी के पारिवारिक और निजी जीवन
- पत्नियाँ और संतान
- मक्का में इस्लामी संदेश के 13 वर्ष
- नबी के चमत्कार
- युद्ध और अभियानों का विवरण
- हिजरत (प्रवास)
- पैगम्बरी संदेश और वाही की घटनाएँ
- सहाबा की कथाएँ
- मदीना के समझौते

- यहूद और अन्य विरोधियों के साथ संघर्ष
- शरिया और नियमों के कारण और स्थितियाँ

लेकिन सबसे जटिल समस्या:

पूरा कथानक दूसरी और तीसरी हिजरी शताब्दी में बने लिखित स्रोतों पर आधारित है; पहली शताब्दी की कोई भी लिखित सामग्री मौजूद नहीं।

इसका अर्थ यह है कि नबी ﷺ के समय या तुरंत बाद लिखी कोई भी दस्तावेज़ी सामग्री उपलब्ध नहीं, जिससे वास्तविक इस्लामी कथानक की संरचना की जा सके।

2. प्रारंभिक सैरत और मघाज़ी: वास्तविक परंपरा या पुनर्निर्मित कथा?

- मुहम्मद बिन इस्हाक को पारंपरिक इस्लामी इतिहास में “सैरत का संस्थापक” माना जाता है।
- लेकिन यह उपस्थिति कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े करती है।

मुहम्मद बिन इस्हाक:

- उनके नाम से जुड़ा मूल पाठ उपलब्ध नहीं।
- आधुनिक विद्वानों के अनुसार:
 - इब्न इस्हाक ने सैरत रची, लेकिन इसका कोई मूल या समकालीन पांडुलिपि नहीं मिली।
 - जो सामग्री हमारे पास है, वह हमेशा आधारित प्रतिलिपियों और संपादित संस्करणों के माध्यम से है।
 - इब्न हिशाम के द्वारा संशोधित, संक्षिप्त और चयनित पाठ।
 - बाद के विभिन्न कथाकारों द्वारा जोड़े गए तत्व।
 - कभी हटाए गए हिस्सों को नए शैली और सामग्री के साथ शामिल किया गया।

अर्थात्: हम वास्तविक “इब्न इस्हाक की ऑटोग्राफ सैरत” नहीं पढ़ते, बल्कि बाद की शताब्दियों में पुनर्निर्मित सैरत पढ़ते हैं।

3. इब्न इस्हाक पर प्राचीन आपत्तियाँ

- यह सामान्य धारणा है कि आपत्तियाँ बाद के मुहद्दिसों की कठोरता का परिणाम थीं।
- वास्तविकता:
 - ताबईन और प्रारंभिक कथाकारों ने भी गंभीर आपत्तियाँ जताईं।
 - आरोप:
 - स्वयं कथाएँ रचना
 - बिना परिशोधन के इस्राइलीयात शामिल करना
 - अनसत्य और आम कहानियों पर भरोसा

- यह आपत्तियाँ इतनी गंभीर थीं कि मूल पाठ का लोप केवल संयोग नहीं, बल्कि चयनात्मक ऐतिहासिक प्रक्रिया (selective survival) का परिणाम लगता है।

3) इब्न हिशाम — मूल इतिहास का संपादन या व्यवस्थित पुनर्निर्माण?

- आज जो कुछ भी “अल-सैरतुन्नबविय्याह” इब्न हिशाम के नाम से प्रसिद्ध है, वह असल में:
 - अब्बासी काल में,
 - अब्बासी राज्य की वैचारिक और राजनीतिक संरक्षा के तहत,
 - इब्न हिशाम के माध्यम से व्यवस्थित रूप से तैयार किया गया पाठ है।
- इब्न हिशाम ने स्वयं ईमानदारी से स्वीकार किया कि उन्होंने:
 - "अनउचित और अनभद्र" कथाओं को हटा दिया,
 - अपवित्र, अश्लील और अस्वीकार्य बातें निकाल दीं,
 - कई कविताएँ और छंद मिटा दिए,
 - कई स्थानों को नए शैली में पुनर्व्यवस्थित किया।
- आधुनिक पाठ-विश्लेषण (Textual Criticism) की भाषा में यह Redaction, Editing, और Ideological Filtering कहलाता है।
 - यानी यह केवल प्रतिलिपि नहीं, बल्कि नव-संरचना है।

मुख्य प्रश्न:

जब मूल पाठ ही अनुपलब्ध हो और वर्तमान पाठ स्वीकारोक्ति के साथ संशोधित हो, तो इसे ऐतिहासिक वास्तविकता का मुख्य दर्पण कैसे कहा जा सकता है?

4) वाक़दी की “अल-मघाज़ी” — स्रोत या समस्या?

- मुहम्मद बिन उमर वाक़दी की किताबुल मघाज़ी को सामान्यतः:
 - युद्ध कथाओं का सबसे बड़ा स्रोत और संदर्भ, और
 - सैरत के सैन्य और युद्धात्मक पहलुओं का आधार माना जाता है।
- वास्तविकता:
 - अधिकांश मुहद्दिसों ने वाक़दी को
 - कमजोर (Da'if),
 - अप्रामाणिक, और
 - कुछ ने स्पष्ट रूप से झूठा बताया।
- महत्वपूर्ण समस्या:
 - वाक़दी की मूल पुस्तक भी कोई प्रारंभिक या समकालीन मसौदा उपलब्ध नहीं।
 - वर्तमान प्रतियाँ:
 - या तो 5वीं हिजरी शताब्दी की प्रतिलिपि,
 - या 19वीं शताब्दी में संशोधित और व्यवस्थित संस्करण।

अतः जब आधार ही कमजोर और अनिश्चित हो, तो उस पर खड़ी पूरी ऐतिहासिक इमारत अस्थिर हो जाती है।

5) अब्बासी राज्य और सैरत व मघाज़ी का राजनीतिक ढांचा

- अब्बासी खलीफाओं के स्थायित्व के साथ:
 - एक व्यवस्थित धार्मिक और वैचारिक कथानक तैयार किया गया।
 - खलीफा के अधिकार, प्रभुत्व और विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए
 - एक “योग्य और योग्य नबी” की ऐतिहासिक छवि आवश्यक थी।
- इन परिस्थितियों के कारण सैरत और मघाज़ी में एक ऐसी छवि उभरती है जो:
 - योद्धा और साहसी,
 - विजयी और प्रभुत्वशाली,
 - नियम और सिद्धांत स्थापित करने वाला,
 - और नए राज्य की नींव रखने वाला है।
- जबकि दूसरी हिजरी शताब्दी से पहले यहूदी, ईसाई और अन्य समकालीन गैर-इस्लामी रिकॉर्ड्स में यह रूप और शैली उपलब्ध नहीं है।

स्पष्ट संकेत: सैरत और मघाज़ी का बड़ा हिस्सा अब्बासी काल की आधिकारिक और वैचारिक जरूरतों के तहत पुनः व्यवस्थित किया गया।

6) प्रारंभिक शताब्दी की मौन अवधि — क्या वास्तव में कोई सैरत मौजूद थी?

- नबी ﷺ के समय और तुरंत बाद:
 - कोई व्यवस्थित सैरत या जीवनी लिखित रूप में नहीं हुई,
 - उनके जीवन की घटनाएँ और विवरण नहीं लिखे गए,
 - युद्ध और अभियानों के रिकॉर्ड संरक्षित नहीं हुए,
 - किसी सहाबी का कोई लिखित मसौदा उपलब्ध नहीं,
 - किसी सरकारी कार्यालय ने इतिहास तैयार नहीं किया।
- पहली हिजरी शताब्दी की यह लिखित मौन अवधि यह संकेत देती है कि:

प्रारंभिक इस्लामी कथानक मूलतः जुबानी परंपरा पर आधारित था, जिसे सदियों बाद राजनीतिक और आधिकारिक जरूरतों के तहत लेखित रूप में ढाला गया।

- और यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक सिद्धांत है कि:

जब मौखिक परंपरा राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्यों से जुड़ती है, तो यह इतिहास की तुलना में पवित्रता अधिक पैदा करती है।

7) आंतरिक विरोधाभास — ऐतिहासिक नहीं, बल्कि कथात्मक पाठ

सैरत और मघाज़ी के पाठों में:

- समयगत असंगतियाँ,
- भौगोलिक समस्याएँ,
- एक ही घटना के विभिन्न रूप,
- असत्य युद्ध संख्याएँ,
- चमत्कारिक कथाओं की भरमार।

यह सभी संकेत हैं कि ये पाठ आधुनिक ऐतिहासिक चेतना के अनुसार इतिहास नहीं हैं, बल्कि एक धार्मिक, कथात्मक और समय की राजनीतिक व्याख्या का हिस्सा हैं।

निष्कर्ष: “पुनर्निर्माण” का स्पष्ट निशान।

उपरोक्त सभी कारण और कारक यह संकेत देते हैं कि:

- सैरत और मघाज़ी कोई संरक्षित इतिहास नहीं हैं।
- बल्कि यह सदियों तक चलने वाले पुनर्निर्माण (Reconstruction) का परिणाम हैं, जिसमें शामिल हैं:
 - चयन (Selection)
 - हटाव (Omission)
 - जोड़ (Addition)
 - परिवर्तन (Alteration)
 - संशोधन (Editing)
 - साथ ही गहरी वैचारिक संगति।

अतः इन पाठों को प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में नहीं, बल्कि बाद के युगों की धार्मिक और राजनीतिक व्याख्या के रूप में पढ़ना ही ईमानदारी और विद्वता की मांग है।

8) आधुनिक वैज्ञानिक जगत की सहमति

अधिकांश आधुनिक शोधकर्ता इस बात पर सहमत हैं कि:

1. सैरत और मघाज़ी का प्रारंभिक मूल पाठ उपलब्ध नहीं है।
2. वर्तमान प्रतियाँ अब्बासी काल की संपादन और संकलन का परिणाम हैं।
3. ऐतिहासिक नबी की वास्तविक पहचान इन कथाओं से निर्धारित करना संभव नहीं।
4. ये पुस्तकें ऐतिहासिक प्रामाणिकता और कठोरता की तुलना में धार्मिक कथानक ज्यादा प्रस्तुत करती हैं।

यही कारण है कि आधुनिक शोध में सैरत का मुख्य बिंदु यह है कि सैरत और मघाज़ी इतिहास नहीं, बल्कि इतिहास का धार्मिक रूपांकन है।

9) निष्कर्ष

सैरत और मघाज़ी का संग्रह:

- अपने मूल स्रोत से वंचित,
- आंतरिक विरोधाभासों और असंगतियों से भरा,
- राजनीतिक रंग और शाही मामलों की मिश्रण,
- बाद के युग के संपादन का परिणाम,
- और ऐतिहासिक परीक्षण पर पूर्णतः असत्यापित दिखाई देता है।

प्रारंभिक इस्लामी युग के बारे में जानकारी के लिए इन कथाओं पर निर्भर होना ऐसा है जैसे “सदियों बाद लिखी गई कहानी को प्रत्यक्ष प्रमाण समझ लिया जाए।”

यही मुख्य कारण है कि आधुनिक विद्वान इन पाठों का अध्ययन समीक्षात्मक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से करते हैं।

हदीस की परंपरा का संपादन और ऐतिहासिक समस्याएँ

भूमिका:

इस्लामी परंपरा में हदीस को:

- धर्म की व्याख्या,
- कुरआन की स्पष्टता, और
- शरियत के व्यावहारिक रूपरेखा की आधारशिला माना जाता है।

लेकिन इतिहास की कठोर वास्तविकताएँ कुछ और ही दिखाती हैं:

- नबी ﷺ के समय कोई हदीस संग्रह नहीं लिखा गया।
- सहाबा के समय कोई व्यवस्थित और संकलित किताब मौजूद नहीं थी।
- तबईयों के समय कोई व्यवस्थित संग्रह संरक्षित नहीं हुआ।

हदीस का मूल संकलन दूसरी और तीसरी हिजरी शताब्दी में शुरू हुआ,

यानी नबी के बाद लगभग 150–200 वर्षों के अंतराल पर।

यह समयावधि स्वयं हदीस सामग्री की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्न खड़ा करती है।

1. प्रारंभिक डेढ़ शताब्दी — मौन, फैलाव और मौखिक कथाएँ

- नबी ﷺ ने हदीस लिखवाने से मना किया (कुछ कथाओं के अनुसार)।
- सहाबा ने कथाओं को लिखित रूप में संरक्षित नहीं किया।
- किसी सरकारी कार्यालय ने हदीस को व्यवस्थित करने का सिस्टम नहीं बनाया।

तबईयों के समय:

- कथाएँ मौखिक रूप में ही फैलती रहीं।
- रावियों ने अपनी समझ और स्मृति के अनुसार शब्दों में बदलाव किया।
- विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग कथानक प्रचलित हुए।

इस फैलाव और अव्यवस्था के कारण पहली हिजरी शताब्दी की कोई प्रमाणिक हदीस पुस्तक अस्तित्व में नहीं आ सकी।

यह कमी केवल संयोग नहीं, बल्कि पूरे मौखिक सांस्कृतिक ढांचे का आवश्यक और प्राकृतिक परिणाम था।

2. रावियों का संकट — व्यक्तित्व, वर्ग और विरोधाभास

- हदीस का आधार वास्तव में उसके रावियों पर है।
- लेकिन रावियों के बारे में जानकारी बहुत जटिल और सावधानीपूर्ण है:
 - रावियों के जीवन विवरण दूसरी शताब्दी के बाद संकलित।
 - उनकी ईमानदारी और सच्चाई के फैसले दो शताब्दियों बाद आने वाले मुहद्दिसों ने किए।
 - एक ही रावी को कुछ विद्वान “सच्चा” कहते हैं, कुछ “झूठा”।
 - कई रावी राजनीतिक और फिक्की जुड़ाव से प्रभावित थे।

मुख्य प्रश्न: जब रावियों की जीवनी, चरित्र और आंतरिक स्थिति सदियों बाद तय की गई हो, तो क्या उन पर भरोसा करके नबी की वास्तविक जीवनकथा तक पहुँचना संभव है?

3) कथाओं का राजनीतिक दोहन — उमय्यद और अब्बासी काल का प्रभाव

उमय्यद और अब्बासी काल में कथाओं का निर्माण:

धार्मिक कथाओं का इस्तेमाल सत्ता और राजनीतिक वैधता की सेवा में किया गया।

इस्लामी इतिहास के प्रारंभिक राजनीतिक अध्ययनों से पता चलता है कि कथाएँ केवल धार्मिक अभिव्यक्ति का साधन नहीं रही, बल्कि उन्हें सत्ताई तर्क और राजनीतिक औचित्य के लिए इस्तेमाल किया गया।

उमय्यद काल (41–132 हिजरी) — सत्ता की औचित्य और वंशानुगत अधिकार का बचाव
उमय्यद शासकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी कि खिलाफत-ए-राशिदा के चुनावी और शौराई विचार को वंशानुगत राजतंत्र में बदलने का कोई धार्मिक औचित्य पेश किया जाए।

इस उद्देश्य के लिए विशेष कथाओं और فضائل का संग्रह किया गया, जिसमें मुख्य बिंदु थे:

- **वंशानुगत खलीफ़त का धार्मिक औचित्य:**
ऐसी कथाएँ फैलायी गई जिससे यह प्रतीत हो कि सत्ता एक परिवार में जाना प्राकृतिक, वैध और ईश्वर की इच्छा के अनुसार है।
- **शाम की महिमा और श्रेष्ठता:**
चूँकि उमय्यद सत्ता का केंद्र दमिश्क था, इसलिए शाम के क्षेत्र, वहाँ के लोग और सेनाओं की कथाओं और فضائل को प्रचारित किया गया, ताकि राजनीतिक केंद्र को धार्मिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

- **उमय्यद परिवार से प्रेम और वफादारी:**

बानू उमय्यद के प्रति निकटता, उनकी आज्ञा और उनके खिलाफ विद्रोह को **विफलता और गुमराही** के रूप में प्रस्तुत किया गया, ताकि राजनीतिक विरोध को धार्मिक अपराध बनाया जा सके।

यह स्पष्ट संकेत है कि कथाओं का उपयोग **स्पष्ट रूप से राज्य के नैरेटिव** के लिए किया गया, केवल धार्मिक स्मृति के लिए नहीं।

अब्बासी काल (132 हिजरी के बाद) — कथानक बदल गया, उद्देश्य वही

अब्बासी क्रांति के बाद परिदृश्य बदल गया, लेकिन कथाओं की **राजनीतिक उपयोगिता** अभी भी बनी रही।

चूँकि अब्बासियों ने सत्ता **उमय्यदों से छीनी**, उन्हें नए **धार्मिक और नैतिक औचित्य** की जरूरत थी।

इसलिए एक नया कथानक तैयार किया गया, जिसमें मुख्य बिंदु थे:

- **अहल-ए-बैत के فضائل:**

अहल-ए-बैत से जुड़ाव को **धार्मिकता और सच्चाई का प्रतीक** बनाया गया और अब्बासियों ने इसे अपना एकमात्र वैध वारिस दिखाने का प्रयास किया।

- **अब्बासी खलीफ़त का धार्मिक श्रेष्ठता:**

कथाओं और व्याख्याओं में अब्बासी सत्ता को उमय्यदों की तुलना में **अधिक धार्मिक, अधिक अधिकारिक और नबी के निकट** बताया गया।

- **उमय्यद की निंदा:**

उमय्यद काल को अत्याचार, पाप, भ्रष्टाचार और desviancy के रूप में प्रस्तुत किया गया, ताकि पिछली सत्ता की नैतिक प्रतिष्ठा समाप्त हो जाए।

- **नबी ﷺ के वंश का राजनीतिक दोहन:**

नबी के परिवार और संबंधों को **राजनीतिक वैधता (Political Legitimacy)** के लिए इस्तेमाल किया गया, जिससे यह रिश्ता आध्यात्मिक कम और सत्ता प्राप्ति का साधन अधिक बन गया।

महज़ीन का चयन — एक मानवीय प्रक्रिया

महज़ीन ने:

- लाखों कथाएँ एकत्र कीं,
- उनमें से अधिकांश को **असत्य या मनगढ़ंत** घोषित किया,
- केवल कुछ हजार कथाओं को स्वीकार किया।

सवाल उठता है: अगर नबी से लाखों बातें जुड़ी हुई थीं, तो **स्वीकृत कथाओं पर पूर्ण विश्वास किस आधार पर** किया गया?

महज़ीन के निर्णय प्रभावित थे:

- उनके व्यक्तिगत विवेक और आलोचनात्मक स्वाद,
- उनके युग के वैचारिक प्रवृत्तियाँ,
- उनकी स्वाभाविक झुकाव और मतविरोधी प्रवृत्तियाँ,
- उनके राजनीतिक और प्रशासनिक माहौल।

इसलिए विभिन्न मत्हिन के संग्रह में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

- व्यापक असहमति
- कथाओं में शब्दों का भिन्न प्रयोग
- एक-दूसरे के विरोध में कथाएँ
- विरोधाभासी सामग्री

5) शब्दों का परिवर्तन — कथाओं और समझ के बीच अंतर

हदीस की सबसे बड़ी जटिलता यह है कि:

- नबी के स्वयं शब्द सुरक्षित नहीं, न लिखित न मौखिक।
- हदीस रावियों का सारांश या अर्थ है।

रावियों ने हदीस सुनाते समय:

- अपनी स्मृति और समझ के अनुसार शब्दों का उपयोग किया,
- जिससे अर्थ बदल जाता,
- संदर्भ अस्पष्ट रहता और
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि गुम हो जाती।

मत्हिन इसे “बिल-मअना” हदीस कहते हैं, जिसका मतलब यह है कि यह एक ऐसी पारंपरिक संग्रह है जिसमें रावियों की मानसिकता और स्मृति अधिक झलकती है, मूल घटनाओं का कम।

६। हदीस संग्रह — देर से संकलित और मानवीय हस्तक्षेप की अधिकता

प्रमुख संग्रह:

- जामी‘ अल-बुखारी (संकलन लगभग 230–250 हिजरी)
- जामी‘ मुस्लिम
- सुनन अल-अरबअह
- मुअत्ता (वर्तमान संस्करण मूल ऑटोग्राफ का बिल्कुल प्रतिबिंब नहीं है)

ये सभी नबी के समय से: कम से कम दो सौ साल की अवधि में राजनीतिक प्रोत्साहन के प्रभाव में संकलित हुए।

क्या इतनी लंबी अवधि तक मौखिक परंपराएँ सुरक्षित रह सकती थीं? मानव इतिहास इस दावे का कोई व्यावहारिक उदाहरण नहीं देता। इसलिए आधुनिक शोध सही ढंग से यह प्रश्न उठाते हैं:

क्या ये हदीस नबी के वास्तविक जीवन के असली संकेत और प्रमाण हम तक पहुँचा पाई हैं, या ये सभी बाद के काल की धार्मिक संरचना का परिणाम हैं?

७। हदीस में आंतरिक विरोधाभास — ऐतिहासिक और तार्किक कठिनाइयाँ

हदीस संग्रह में:

- समय और क्षेत्र की पहचान में समस्याएँ
- रवियों के नाम में अंतर
- ग्रंथों में स्पष्ट विरोधाभास
- घटनाओं का मनमाना विवरण
- अलौकिक और चमत्कारिक तत्व
- अतार्किक निर्देश और आदेश
- भौगोलिक और ऐतिहासिक घटनाओं से असंगति

ये सभी इस बात का संकेत हैं कि हदीस संग्रह असल में एक “धार्मिक व्याख्यान” है, न कि कोई प्रमाणित ऐतिहासिक दस्तावेज़।

८। आधुनिक शोध में हदीस — एक आलोचनात्मक अध्ययन

विश्व के आधुनिक शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि:

1. हदीस की संकलना बहुत देर से हुई
 2. नबी के समय कोई भी लिखित परंपरा सुरक्षित नहीं थी
 3. रवियों का जीवन और स्थिति बाद में लगभग निर्धारित की गई
 4. बाद के समय के राजनीतिक माहौल और प्रशासनिक नीतियों ने हदीस की सामग्री को प्रभावित किया
 5. हदीस में कोई ऐतिहासिक एकरूपता नहीं, बल्कि कथात्मक विविधता मौजूद है
 6. ये संग्रह धार्मिक गुणों के लिए तो उपयोगी हो सकते हैं, पर ऐतिहासिक प्रमाण के लिए नहीं
- इसलिए आधुनिक शोध में हदीस को केवल धार्मिक परंपरा माना जाता है, कोई ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं।

९। निष्कर्ष

हदीस परंपरा की पूरी संरचना:

- मौखिक संप्रेषण
- राजनीतिक प्रभाव
- मानवीय चयन
- देर से संकलन
- आंतरिक विरोधाभास

के आधार पर खड़ी है। इसका अनुसंधान यह बताता है कि हदीस “नबी की असली आवाज या कथन” नहीं है, बल्कि सदियों बाद रवियों से सुनकर तैयार किया गया एक धार्मिक और फिक्की व्याख्यान है।

सरकारी संरक्षण में व्याख्यान की संरचना के लिए अब्बासी खलीफ़ाओं ने:

- मुहद्दिसों को धन और वेतन दिए
- फ़किहों को काज़ी अल-क़ज़ात के पदों पर नियुक्त किया
- इतिहासकारों से “वांछित इतिहास” लिखवाया
- मुफ़सिरों के माध्यम से विशिष्ट व्याख्यात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया

इससे एक सरकारी धार्मिक व्याख्यान तैयार हुआ, जो:

- अब्बासी ख़िलाफ़त को “शरीअत के अनुसार श्रेष्ठ” साबित करता था
 - पूर्व उमेवी काल को नैतिक और धार्मिक रूप से कमतर और संदिग्ध बनाता था
 - नबी, अल-अल-बैत और शरीअत की व्याख्याएँ प्रस्तुत करता था जो राज्य के हितों के अनुकूल हों
- अधिकांश अलिम — मौन या समझौता

सच्चाई यह भी है कि:

- कई अलिमों ने संघर्ष के बजाय समझौते या सुलह को प्राथमिकता दी
- दरबार से दूर रहने का मतलब आर्थिक हानि, जेल या मृत्यु हो सकता था
- परिणामस्वरूप, अधिकांश अलिमों ने या तो मौन किया, या केवल उन बहसों को उठाया जो राजनीतिक शक्ति को चुनौती नहीं देते थे

इस प्रकार, इस्लाम नामक धर्म धीरे-धीरे राज्य के हाथ में एक नैतिक और कानूनी उपकरण बनता चला गया।

कहा जा सकता है कि अब्बासी काल में धार्मिक विज्ञान का बहुत बड़ा हिस्सा सीधे या परोक्ष रूप से राज्य की सत्ता, राजनीतिक हितों और शाही वैधता के अधीन हो गया था।

अध्याय (5) — अब्बासी संकलन पद्धति और धार्मिक व्याख्यान का पुनर्निर्माण ■

भूमिका:

अब्बासी ख़िलाफ़त ने इस्लामी इतिहास, हदीस, सैरत, फ़िक़ह और धार्मिक विश्वासों पर जो अमिट छाप छोड़ी, वह केवल राजनीतिक नहीं थी, बल्कि बौद्धिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, आस्थात्मक और सांस्कृतिक भी थी।

— आज जो इस्लाम दुनिया भर में प्रचलित है, उसके मूल रूप और आधार अब्बासी काल में संवारकर तैयार किए गए।

उसी अवधि में:

- कुरआन की पाठों को सरकारी रूप दिया गया
- सैरत को पूरी तरह नया स्वरूप दिया गया
- हदीस का चयन और सरकारी छंटाई हुई
- फ़िक़ही स्कूलों का उदय हुआ
- धार्मिक विश्वासों की प्रणाली व्यवस्थित की गई

- राजनीतिक विचारों और सरकारी जरूरतों पर धार्मिक रंग चढ़ाया गया
- अतः एक व्यापक और सर्वव्यापी धार्मिक ढांचा अस्तित्व में आया

इस प्रकार, अब्बासी दौर इस्लामी सोच के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बन गया, जिसके बिना आज का प्रचलित इस्लाम कल्पनातीत है।

1. अब्बासी क्रांति — केवल राजनीतिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक बौद्धिक योजना और कार्यात्मक उपलब्धि

अब्बासियों की उमय्यदों पर विजय केवल सत्ता का हस्तांतरण नहीं थी, बल्कि पूरे सांस्कृतिक और धार्मिक व्याख्यान का परिवर्तन था।

अब्बासियों के सामने तीन मुख्य चुनौतियाँ थीं:

1. अपनी राजनीतिक सत्ता को धार्मिक वैधता प्रदान करना
2. उमय्यद काल के रिकॉर्ड और व्याख्यानों का नाश करना
3. नई धार्मिक पहचान स्थापित करना जो पूरी उम्मत को अपने पीछे ले जाए

इन चुनौतियों का सामना केवल राजनीतिक प्रयासों से संभव नहीं था।

बल्कि इसके लिए एक मजबूत और अजेय धार्मिक ढांचा अति आवश्यक था।

अतः उन्होंने “नए धार्मिक ढांचे” को तैयार करने का संकल्प लिया।

2. अब्बासियों का उद्देश्य — धार्मिक अधिकार का मूल केंद्र अपने हाथ में लेना

इस्लामी परंपरा में सबसे बड़ी शक्तियाँ:

- अल्लाह
- रसूल
- किताब
- उम्मत

अब्बासी खलिफों ने अपनी रणनीति के तहत इन चार शक्तियों को अपने नए धार्मिक ढांचे में ढाल लिया:

- अल्लाह का विचार → पूर्ण सर्वोच्च, शासक के फैसलों का समर्थक
- रसूल का विचार → राजनीतिक नेता, योद्धा, विजेता, शरिआह
- किताब का विचार → सरकारी मसहफ़ की आधिकारिक पाठ
- उम्मत का विचार → राजनीतिक केंद्र के अधीन, एक खिलाफ़त की आवश्यकता

इस असाधारण योजना के तहत धार्मिक अधिकार सरकारी राज्य के हाथ में केंद्रित कर दिए गए।

और अंततः, प्रचलित इस्लाम राजनीतिक व्यवस्था और संविधान का अविभाज्य हिस्सा बन गया।

3. सैरत और इतिहास का नया निर्माण — अब्बासी बौद्धिक कार्यशाला

अब्बासी काल में:

- इब्न हिशाम ने इब्न इशाक के पाठ को “साफ” किया

- तबरी ने इतिहास को नए अंदाज में संकलित किया
 - कबीलों की परंपराओं को छाना गया
 - नबी की सैरत को राज्य की जरूरतों के अनुसार नया स्वरूप दिया गया
- ये सभी “कथात्मक पुनर्निर्माण” के उदाहरण हैं। प्रमाण बताते हैं कि:
- नबी को “विजयी शासक” के रूप में प्रस्तुत किया गया
 - युद्ध, संधियों और विजय की घटनाओं को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया
 - हज़ारों चमत्कार और करामात शामिल किए गए
 - राजनीतिक विरोधियों (यहूद, मुनाफ़िक़, बाहरी) की असली छवि बदल दी गई
 - इस्लाम को सैन्य और राजनीतिक आंदोलन के रूप में उजागर किया गया

अब्बासी द्वारा प्रस्तुत यह छवि प्रथम सदी के गैर-मुस्लिम स्रोतों से मेल नहीं खाती।

अतः यह कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि अब्बासियों का स्वनिर्मित निर्माण और व्याख्या है।

4. हदीस का संकलन — अब्बासी राज्य का सबसे शक्तिशाली उपकरण

हदीस का व्यापक संकलन इसी दौर में हुआ।

इसके पीछे तीन मुख्य प्रेरक तत्व और उद्देश्य थे:

- ✓ फ़िक्रही मतभेद समाप्त करना
- ✓ धार्मिक एकता स्थापित करना
- ✓ राज्य के विचारों को शरिआह की वैधता दिलाना

इन उद्देश्यों के लिए:

- लाखों हदीसों संकलित की गईं
- फिर लाखों को अस्वीकार भी किया गया
- मुहद्दिसों ने अपने सिद्धांत स्वयं तय किए
- अंततः कुछ संग्रह चयनित हुए

हदीस को इस प्रकार तैयार किया गया कि:

- खलीफ़ा की आज्ञा “धार्मिक आदेश” बन गई
- जिहाद और विजय की धार्मिक व्याख्या स्थापित हुई
- विपरीत राजनीतिक समूहों के खिलाफ हदीस तैयार की गईं
- सुन्नी और शी'अ व्याख्यान अलग कर दिए गए

इस प्रकार हदीस केवल धार्मिक नहीं, बल्कि राजनीतिक उपकरण भी बन गई।

5. फ़िक्रह का संकलन — संप्रदायिक प्रवृत्तियाँ और अब्बासी नीतियाँ

अब्बासी दौर में:

- حنفی — नुअमान बिन थाबित
- मालिकी — मालिक बिन अनस

- शाफी — मुहम्मद बिन इद्रीस

- हंबली — अहमद बिन हनबल

जैसे फ़कीहों के संप्रदायिक और विचारधारात्मक स्कूल उभरे।

लेकिन एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनके फ़िक़ही रुझान का अधिकांश हिस्सा अब्बासी खलिफ़ाओं की नीतियों की ओर झुका हुआ था।

इसके उदाहरण:

- हुदूद और तआज़ीरात

- इरटिदाद (धर्मत्याग)

- जिहाद/युद्ध

- दासता

- जिज़िया

- राजनीतिक आज्ञाकारिता

- बागियों का संहार

ये सभी हुदूद और कानून राज्य की जरूरतों के तहत बनाए गए। मतलब यह कि राजनीति ने फ़िक़ह को आकार दिया, फिर वही फ़िक़ह राज्य को मज़बूत बनाती रही।

6. आस्थाओं की प्रणाली — इल्मुलकलाम और वैचारिक संगठन

अब्बासी दौर में आस्थाओं के दो प्रमुख प्रवाह बने:

- मुआतज़िला (तर्कपरक)

- अहल-ए-हदीस (परंपरापरक)

मुआतज़िला ने:

- कुरआन को मखलूक (सृष्टि) कहा

- अल्लाह के न्याय और तर्क पर जोर दिया

अहल-ए-हदीस ने:

- अल्लाह की विशेषताओं को स्पष्ट अर्थों में लिया

- परंपरा को तर्क पर प्राथमिकता दी

यह संघर्ष अब्बासी दौर का सबसे बड़ा वैचारिक युद्ध था।

अंततः राज्य ने अहल-ए-हदीस के व्याख्यान को प्राथमिकता दी और इस प्रकार सुन्नी आस्थाओं का सरकारी रूप अस्तित्व में आया।

7. अब्बासी दृष्टिकोण — “अल्लाह, रसूल, किताब, उम्मत” सब राज्य के व्याख्यान के अधीन

अब्बासी रणनीति यह थी कि:

- अल्लाह → खिलाफ़त के फैसलों का समर्थन

- रसूल → राजनीतिक नेतृत्व का मॉडल

- किताब → सरकारी मानक मस्हफ़
- उम्मत → अब्बासी केंद्र के अधीन

इस प्रकार सरकारी राज्य धार्मिक पवित्रता का अधिकारी बन गया।

इस्लामी इतिहास में पहली बार: राज्य धर्म का अधीनस्थ नहीं, बल्कि राज्य धर्म की व्याख्या का केंद्र बन गया।

अंततः यही वह बिंदु है जहां से “प्रचलित इस्लाम” का असली रूप सामने आया।

8. इस्लामी विज्ञानों की अधिकांश शाखाएँ — अब्बासी दौर की वसंत ऋतु

- कुरआन की पाठ
- तफ़सीर
- हदीस
- फ़िक्ह
- अुसूल-ए-फ़िक्ह
- आस्थाएँ
- तसव्वुफ़
- शब्दकोश
- बोलचाल और साहित्य

इन علوم की व्यवस्थित تدوين अब्बासी खिलाफ़त की देखरेख में हुई।

यानी: आज जो इस्लामी संरचना हमारे सामने है, उसके मूल स्तंभ अब्बासीयों ने तैयार किए।

अगर वास्तव में कोई व्यवस्थित रूप मौजूद भी था, तो वह हमें नहीं मिला — पहली सदी का इस्लाम।

और जो आज पहुँचा है, वह असल में अब्बासीयों की स्थापित सांस्कृतिक और धार्मिक संरचना का परिणाम है।

9. निष्कर्ष — अब्बासी काल:

- इस्लामी इतिहास का सबसे अधिक निर्मित और व्यवस्थित दौर
- धर्म के सामंजस्यपूर्ण व्याख्यानों की मूल संरचना इसी दौर में बनाई गई
- हदीस, सैरत, फ़िक्ह, आस्थाएँ इसी विचारधारात्मक ढांचे में ढले
- राजनीतिक उद्देश्य और महत्वाकांक्षाओं ने धार्मिक व्याख्या पर गहरा प्रभाव डाला
- परिणामस्वरूप, सरकारी राज्य ने खुद को धर्म की सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्थापित किया

निष्कर्ष: इस्लाम का वर्तमान रूप “प्राकृतिक” नहीं, बल्कि “ऐतिहासिक रूप से योजनाबद्ध निर्माण” है, जिसमें अब्बासी राज्य की शक्ति निर्णायक और निर्णायक रही।

भूमिका:

कुरआन मुसलमानों के लिए अल्लाह का सबसे सुरक्षित और अंतिम शब्द माना जाता है। लेकिन इसके ऐतिहासिक और लिखित सफ़र का अध्ययन करने पर पता चलता है कि:

- ✓ कुरआन का प्रारंभिक लिखित रूप क्या था — किसी को नहीं पता
- ✓ पहला मसहफ़ किस रूप में था — किसी को नहीं पता
- ✓ कितने पाठ प्रचलन में थे — गंभीर मतभेद मौजूद
- ✓ पाठ कैसे उत्पन्न हुए — इतिहास पूरी तरह मौन
- ✓ सरकारी मसहफ़ कब और कैसे बना — परंपराएँ अस्पष्ट
- ✓ मौजूदा पाठ का मानक किसने निर्धारित किया — इसमें भी मतभेद

इन असमंजस पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि कुरआनी पाठ का इतिहास एक गतिशील, जटिल और लंबी विकास प्रक्रिया का परिणाम है, न कि “23 वर्षों में अचानक अवतरित होकर सुरक्षित हो जाने” का पारंपरिक दावा।

अब्बासी दौर में, जब इस्लामी परंपराओं के स्तंभ — सैरत, मगाज़ी, हदीस, फ़िक्ह, उसूल-ए-फ़िक्ह और इतिहास — राज्य की देखरेख में व्यवस्थित और मानकीकृत किए जा रहे थे, और जब कुरआनी पाठ अभी अंतिम रूप से फ़ीज़ नहीं हुआ था, तो यह मानना तार्किक है कि मदीनी संग्रह में सीमित लेकिन उद्देश्यपूर्ण संपादन आवश्यक रूप से हुआ होगा।

इस संभावना को अस्वीकार करने के लिए कोई ठोस ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद नहीं है, क्योंकि:

- हमारे पास कोई प्री-अब्बासी पूर्ण मसहफ़ उपलब्ध नहीं
- ना कोई "अविवादित बेसलाइन टेक्स्ट" मौजूद है जिससे वर्तमान पाठ की तुलना करके यह सिद्ध किया जा सके कि क्या मूल था और क्या बाद में जोड़ा या हटाया गया

जब कोई मूल मानक मौजूद नहीं है, तो यह सवाल स्वतः उठता है कि अब्बासी दौर में पूर्ण नियंत्रण और व्याख्यान शक्ति रखने वाले कौन पूछताछ करता?

ऐसे हालात में यह कहना कि मदीनी "कर्पस" पूरी तरह अप्रभावित और अछूता रहा, केवल एक आस्थागत अनुमान हो सकता है, लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से यह सत्यापित तथ्य नहीं।

इस संदर्भ में, मदीनी हिस्सों में कुछ महत्वपूर्ण स्थानों पर — जैसे शब्द “मुहम्मद” के सीमित और लक्षित परिवर्धन — को अब्बासी संपादन नीति से जोड़कर देखना ऐतिहासिक रूप से जायज़ है।

अगर यह ऐतिहासिक रूप से मान्यता प्राप्त है कि हज़रत उस्मान ने अपने मसहफ़ को सरकारी दर्जा दिलाने के लिए अन्य सभी समांतर हस्तलिखित संस्करणों को समाप्त किया, तो यह सवाल सही है कि अब्बासी, जो राजनीतिक सत्ता, राज्य व्यवस्था, वैचारिक जागरूकता और व्याख्यानिक शक्ति में उस्मानी काल से कहीं अधिक मजबूत थे, आखिर क्यों मदीनी संग्रह में उद्देश्यपूर्ण और सीमित संपादन नहीं कर सकते थे?

विशेष रूप से जब कि अब्बासी दौर से पहले कुरआन किसी सर्वसम्मत, स्थिर और अंतिम रूप में मौजूद नहीं था, और उमय्यद मस्हफ़ को अब्बासी अभिजात वर्ग न केवल संदिग्ध बल्कि अपनी नई सत्ता के लिए राजनीतिक खतरा मानता था।

यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें मदीनी सूरतों — विशेष रूप से अनफ़ाल, तौबा, मुहम्मद, मुम्तहना, निसा और माईदा — का आंतरिक पाठ्य विश्लेषण किया जाता है।

ये मकी संग्रह से शैली, भाषा, विषय और वैचारिक तनाव के दृष्टिकोण से स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देते हैं।

इनमें संबोधन व्यक्तिगत से अधिक संगठित समुदाय की ओर है, नैतिक उपदेश की बजाय कानूनी आदेश, युद्ध और शांति के नियम, आंतरिक दुश्मनों की पहचान, राजनीतिक निष्ठा, सामाजिक व्यवस्था, शक्ति के प्रयोग का औचित्य और राज्य की सर्वोच्चता जैसे विषय प्रचुर मात्रा में हैं।

भाषा में स्पष्टता, कठोरता और भेदभाव की तीव्रता है, वाक्य संरचना अधिक आदेशात्मक और नियम-निर्माण वाली है, और शैली ऐसी प्रतीत होती है जैसे सत्ता में बनी हुई संस्था अपने अधिकार को सुरक्षित, वैध और विस्तारित करने के चरण में हो।

हालाँकि, इस संभावना के पक्ष में कोई निश्चित, प्रत्यक्ष और दस्तावेज़ी प्रमाण फिलहाल उपलब्ध नहीं है, लेकिन ऐतिहासिक संकेत, राजनीतिक संदर्भ, पाठ्य अंतर और अब्बासी दौर में धार्मिक परंपराओं के स्तंभों की व्यवस्थित सृष्टि इस संभावना को न केवल विचार योग्य बल्कि गंभीर शोध के योग्य बनाती है।

और यही वह बिंदु है जहाँ सवाल केवल आस्था से बाहर निकलकर इतिहास, पाठ्य और राजनीति के आपसी संबंध पर केंद्रित और सुदृढ़ हो जाता है।

1. कुरआनी प्रारंभिक पाठ का संकट — पहली सदी में ऐतिहासिक रूप से पूर्ण मौन

इस्लाम की पहली सदी में:

- कोई सैरत मौजूद नहीं थी
- कोई हदीसी संग्रह मौजूद नहीं था
- कोई तफसीर मौजूद नहीं थी
- और अत्यंत चौंकाने वाली बात, कोई पूर्ण कुरआन भी मौजूद नहीं था

जो सबसे प्राचीन पांडुलिपियाँ आज दुनिया के विभिन्न संग्रहालयों में हैं — समरकंद, इस्तांबुल, काहिरा, दमिश्क, बगदाद आदि — वे:

- दूसरी सदी हिजरी के बाद की हैं

या

- आंशिक रूप से बचे हुए टुकड़े या खंड हैं

उदाहरण के लिए:

- सना के दो-पाठ वाले मसौदा

- टुबनजन के असंबद्ध खंड
- पेरिस और सेंट पीटर्सबर्ग के विभिन्न पृष्ठ
- बर्मिंघम का दो-पृष्ठीय हस्तलिखित

ये सभी न केवल अधूरे हैं, बल्कि पाठ और सामग्री में भिन्नता और मतभेद भी रखते हैं।

यह वास्तविकता उस कल्पनात्मक विश्वास को कमजोर कर देती है कि:

“कुरआन एक पूर्ण, संकलित और एकरूप रूप में नबी के समय से अल्लाह की विशेष सुरक्षा में आज तक पहुंचा है।”

2. साहाबा के मसाहिफ — पाठ्य मतभेद की गहरी जड़ें

प्राचीन इस्लामी परंपरा स्वयं बताती है कि:

- ✓ इब्न मसऊद का मसहफ़
- ✓ उबै बिन काब का मसहफ़
- ✓ सालेम मौला अबू हज़ीफ़ा का मसहफ़
- ✓ मुआज़ बिन जिबल का मसहफ़
- ✓ खुदीज़ा और फातिमा के सहीफे
- ✓ हफ़सा बिनत उमर का मसहफ़

ये सभी आपस में एक-दूसरे से अलग थे।

इन मतभेदों में शामिल थे:

- शब्दों में अंतर
- वाक्यों में अंतर
- आयतों की संख्या में अंतर
- आयतों की क्रमबद्धता में अंतर
- सूरहों की संख्या, उनके नाम और उनकी व्यवस्था में अंतर
- कुनूत जैसी प्रार्थनाओं को कुरआन का हिस्सा मानना आदि

उदाहरण:

- इब्न मसऊद ने “फातिहा” और “तीन कुल” को सूरह नहीं माना
- उबै बिन काब के मसहफ़ में दो अतिरिक्त प्रार्थनाएँ थीं
- कुछ मसाहिफ़ का क्रम आज के मसहफ़ से भिन्न था

इन मतभेदों को बाद में बड़े पैमाने पर मिटाने की कोशिशें हुईं, लेकिन शोधकर्ता मानते हैं कि ये मतभेद कुरआन के प्रारंभिक इतिहास का वास्तविक चेहरा हैं।

3. उस्मानी मसहफ़ — सरकारी संकलन या सरकारी एकरूपता?

प्राचीन परंपराओं में आता है कि:

“उस्मान ने सभी मसाहिफ को जलाकर एक सरकारी पाठ लागू किया।”

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु:

1. यह कार्य किसी wahy (वहय) का परिणाम नहीं था, बल्कि उस समय के खलीफा का राजनीतिक और व्यक्तिगत निर्णय था।
2. यह पाठ बिना इ‘रब और निशानों के था — यानी पढ़ने के कई संभावनाएँ और विकल्प मौजूद थे।
3. उस्मानी मसहफ़ कहलाने वाला कोई भी प्राचीन संस्करण आज कहीं उपलब्ध नहीं है।

जो हमें मिलता है, वह:

- दूसरी सदी के अंत में तैयार किए गए हस्तलिखित
- या बाद के कलाकारों के हाथों बने लिखित संस्करण

इससे स्पष्ट होता है कि: “उस्मानी मसहफ़” केवल एक राजनीतिक एकता का साधन था, न कि कुरआनी पाठ का अंतिम और दिव्य मानक।

4. कुरआनी लिखावट — बिना हम्ज़ा, बिना निशानों और बिना इ‘रब के

इसलिए कई पाठ उत्पन्न हुए।

उस्मानी मसहफ़ का सबसे बड़ा संकट यह था कि:

- ✓ इसमें कोई बिंदु नहीं थे
- ✓ कोई हरकत या इ‘रब नहीं था
- ✓ हम्ज़ा, तशदीद, मद्ध, इमाला नहीं थे
- ✓ विराम चिह्न बहुत बाद में जोड़े गए

इसका मतलब है कि एक ही “रसम” से दस, बीस, तीस विभिन्न पाठ निकल सकते थे।

और वास्तविकता यह है कि, पाठों की पूरी संरचना उसी बिना-बिंदु वाली “रसम” के विभिन्न पाठों पर आधारित है।

छोटा सा उदाहरण:

- “تَقْتُلُونَ”
- “يُقْتُلُونَ”
- “تَقْتُلُ”
- “نَقْتُلُ”
- “يُقَاتِلُ”
- “نَقَاتِلُ”
- “يُقَاتِلُونَ”

ये सभी एक ही “रसम” से निकलते हैं, लेकिन अर्थ, आदेश और भावार्थ में पूरी तरह भिन्न हैं। यह संकट कुरआन के “एकमात्र दैवीय पाठ” होने के दावे को अत्यंत चुनौतीपूर्ण बना देता है।

5. क़िरआतों का इतिहास — व्यापक प्रसार से एकल मानक तक

पारंपरिक दावा है कि:

“क़िरआतें 'तवातुर' के साथ प्रेषित हुईं।”

लेकिन वास्तविक और ऐतिहासिक सचाई यह है:

- ✓ पहली दो सदियों में क़िरआतें असीमित थीं
- ✓ हर शहर की अपनी क़िरआत थी
- ✓ कारी अपने शिक्षक की बिना-बिंदु वाली लिखावट पढ़ता था
- ✓ शब्दों में अंतर आम था
- ✓ इमाला, फतह, इदगाम, अब्दाल में व्यापक भिन्नताएँ थीं

यह क़िरआती फैलाव इतना व्यापक और जटिल था कि:

अबु बक्र मुहम्मद बिन हसन इब्न मुजाहिद के समय (तीसरी सदी हिजरी तक) कोई भी एकीकृत और निश्चित क़िरआत मौजूद नहीं थी।

6. क़िरआत का सरकारी मानक — इब्न मुजाहिद का महत्वपूर्ण निर्णय

तीसरी सदी हिजरी में इब्न मुजाहिद ने:

- केवल सात क़िरआतों को “स्वीकृत” घोषित किया
- बाकी सभी क़िरआतों को अमान्य, दुर्लभ और अविश्वसनीय कहा

यह चयन:

- न तो वाही पर आधारित था
- न ही किसी दिव्य मार्गदर्शन पर
- न ही साहाबा के निर्णय पर

बल्कि:

यह पूरी तरह एक सामान्य मानव और सरकारी चयन था!

इसके बाद:

- दस क़िरआतें, फिर
- बीस तरीके, फिर
- चालीस, फिर
- सत्तर, और दो सौ से अधिक तरीके उत्पन्न हुए।

यानी: कुरआन की क़िरआत का “अंतिम और निश्चित मानक” पूरी तरह एक मानव विकासात्मक प्रक्रिया का परिणाम है, न कि कोई ठोस या दैवीय आदेश।

7. अब्बासी मानक — कुरआन की खाली रसम को व्याकरण और इ‘रब के माध्यम से सरकारी रूप देना

अब्बासी दौर में:

- रसम (लिपि) को सरकारी रूप दिया गया
- व्याकरण (नहव) को संकलित किया गया
- इ‘रब और हरकतों का व्यवस्थित रूप स्थापित किया गया
- शब्दावली को मानकीकृत / टेक्स्टुअल रूप दिया गया

सिबवीह, खलील बिन अहमद, यूनुस बिन हबीब, अबू खताब अखफ़श, ईसा बिन उमर जैसे व्याकरणज्ञों ने:

कुरआन की क़िरआत के नियम और प्रावधान तय किए, और उन्हीं के अनुसार कुरआन पढ़ा जाने लगा।

यानी:

- ✓ पहले खाली पाठ मौजूद था
 - ✓ फिर नियम और प्रावधान बनाए गए
 - ✓ फिर उस खाली पाठ को बनाए गए नियमों के अनुसार पढ़ा जाने लगा
- हालांकि यह प्रक्रिया विपरीत होनी चाहिए थी यदि कुरआन वास्तव में “लिसानु अ‘रबी मुभीन” में था।

8. मसाहिफ और क़िरआतों की एकरूपता — केवल बाहरी नमूना, न कि ऐतिहासिक साक्ष्य

आज दुनिया में प्रचलित कुरआन:

- एक सरकारी क़िरआत (हफ़स)
- एक व्याकरणिक प्रणाली
- एक मानक रसम
- एक बिंदु प्रणाली
- इ‘रब और हरकतों के साथ

लेकिन वास्तविक और ऐतिहासिक तथ्य यह हैं कि:

- ✓ पहली सदी में कुरआन कई रूपों में था
 - ✓ दूसरी सदी में रसम विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग हो गया
 - ✓ तीसरी सदी में क़िरआतें असीमित हो गईं
 - ✓ और अंततः चौथी सदी में राज्य ने क़िरआत का एक मानक सरकारी स्तर पर लागू किया
- यानी: वर्तमान कुरआन की एकरूपता कोई दैवीय अल्हामी एकरूपता नहीं है, बल्कि राज्य की आवश्यकता के तहत एक राजनीतिक और फ़िक्की एकरूपता है।

9. निष्कर्ष

कुरआन के औपचारिक पाठ और क़िरआतों की ऐतिहासिक स्थिति यह दर्शाती है कि:

- ✓ कुरआन 23 वर्षों में “एक बार में” अवतरित नहीं हुआ
- ✓ कुरआन के मक्का और मदनी हिस्से कई चरणों और स्तरों से लगातार गुजरे
- ✓ कुरआन का वर्तमान पाठ विकासशील, मानव निर्मित और सरकारी हस्तक्षेपों का परिणाम है
- ✓ क़िरआतों की असीमता, मौखिक परंपराओं की अनिवार्य और अपरिहार्य उपज है
- ✓ बिना-बिंदु वाली रसम ने अनगिनत क़िरआतों को जन्म दिया
- ✓ अब्बासी दौर ने कुरआन की क़िरआत को वर्तमान मानक रूप में स्थिर कर दिया

निष्कर्ष: प्रचलित कुरआन कोई सुरक्षित रूप से संरक्षित पाठ नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक ग्रंथ है जो मानवीय संकलन और विकास के लंबी प्रक्रियाओं से गुजरकर वर्तमान रूप में पहुँचा है।

क्रिस्त (7) — इस्लामी علوم की स्थापना में अब्बासी प्रभाव: तफ़सीर, फ़िक्ह, अकीदा और शब्दावली



प्रस्तावना:

आज इस्लामी दुनिया में जो कुछ “उलूम-ए-इस्लामिया” के नाम से प्रचलित है —

तफ़सीर, फ़िक्ह, उसूल-ए-फ़िक्ह, इल्म-ए-क़लाम, शब्दावली, नहव, बलद्त, सीरत, हदीस, अकीदा, इतिहास, इल्म-ए-रिजाल, इसनाद, क़िरआत, तसाव्वुफ़, फ़लसफ़ा, कानून, अर्थशास्त्र आदि — ये सभी विज्ञान स्तंभों की तरह एकीकृत होकर एक समग्र और व्यवस्थित संरचना का रूप ले चुके थे। लेकिन जब इन विज्ञानों की चरणबद्ध ऐतिहासिक समीक्षा की जाती है, तो एक चौंकाने वाली वास्तविकता सामने आती है:

- ✓ इन सभी विज्ञानों की व्यवस्थित संकलन और संरचना केवल अब्बासी दौर में हुई
 - ✓ इससे पहले इन विज्ञानों की कोई व्यवस्थित रूपरेखा मौजूद नहीं थी
 - ✓ अब्बासी राज्य ने इन विज्ञानों को अपने राजनीतिक हितों और धार्मिक उद्देश्यों के लिए आकार दिया
 - ✓ वर्तमान इस्लामी सोच का प्रस्तावित और योजनाबद्ध ढांचा इसी दौर में विकसित हुआ
- इस प्रकार, अब्बासी दौर इस्लामी मस्तिष्क की रचना का वह कालखंड है जहाँ:

“इस्लाम” धर्म से कहीं अधिक “सिस्टम” के रूप में अस्तित्व में आता है।

1. तफ़सीर-ए-कुरआन — परंपरा से राज्य तक

इस्लाम के प्रारंभिक दौर में:

- कुरआन की कोई लिखित तफ़सीर नहीं थी
- कोई विस्तृत व्याख्या मौजूद नहीं थी
- न तो साहाबा से कोई व्यवस्थित तफ़सीर मिली
- न तो ताबिउन के पास कोई पूर्ण संग्रह था

तफ़सीर की व्यवस्थित संरचना वास्तव में अब्बासी दौर में शुरू हुई।

कुछ प्रमुख झलकियाँ:

● **इमाम इब्न जरीर अल-तबरी की तफ़सीर**

यह पहली समग्र और व्यवस्थित तफ़सीर है।

यह तफ़सीर अब्बासी विचारधारा के अनुसार लिखी गई:

- खिलाफ़त का राजनीतिक पवित्रकरण
- युद्ध और संघर्ष का धार्मिक औचित्य
- “उलुव-उल-अमर की आज्ञा” की व्याख्या
- यहूद और नासारा के खिलाफ तीव्र दृष्टिकोण
- विजेता राजनीति को वाही की व्याख्या के माध्यम से पवित्रता देना

तबरी से पहले कोई ऐसी विस्तृत तफ़सीर मौजूद नहीं थी।

● **तफ़सीर में इस्राएलियात**

अब्बासी दौर में तफ़सीर में यहूदी और ईसाई कथाओं का समावेश हुआ।

चूँकि राज्य को “वर्णनात्मक कहानियाँ और पौराणिक कथाएँ” चाहिए थीं,

इसलिए ऐतिहासिक और गैर-ऐतिहासिक दोनों प्रकार की कथाएँ तफ़सीर में शामिल की गईं।

● **राज्य की आधिकारिक आवश्यकताएँ**

अब्बासी खलिफ़ा चाहते थे कि:

- कुरआन उनके राजनीतिक उद्देश्य का समर्थन करे
- आम जनता कुरआन के अर्थ को अब्बासी दृष्टिकोण से देखे और समझे
- विरोधियों के लिए कठोर आयतें प्रमुख हों
- अब्बासी “दिव्य और अल्हामी वैधता” सिद्ध हो

इस प्रकार तफ़सीर-ए-कुरआन एक **राजनीतिक तफ़सीर** बन गई।

2. फ़िक्रह और उसूल-ए-फ़िक्रह — मत आधारित संरचना और राज्य की आवश्यकता

आज इस्लामिक फ़िक्रह का जो प्रणाली है —

नमाज़ के तरीके, रोज़े, विरासत, निकाह, तलाक़, हुदूद, क़सास, जिहाद, जज़िया आदि —

ये सभी नबी या साहाबा द्वारा लिखे गए नहीं हैं, बल्कि अब्बासी दौर के फ़िक्रही स्कूलों का परिणाम हैं।

✓ हनफी

✓ मालिकी

✓ शाफ़ई

✓ हम्बली

ये चारों फ़िक्रही स्कूल अब्बासी दौर में उभरे और पूरी तरह व्यवस्थित हुए।

दो मुख्य उद्देश्य:

1. राज्य की स्वायत्त कानूनी प्रणाली को मजबूत करना
2. धार्मिक मतभेद समाप्त करके एक केंद्रीकृत फिक्कह को बढ़ावा देना

फिक्कह के मुख्य सिद्धांत:

- इज्मा (सहमति)
- क्रियास (तर्क)
- इस्तिहसान (अनुकूलता)
- मसालेह-ए-मर्सला (सार्वजनिक हित)
- सददुज-ज़राय (स्रोतों की रोक)

ये सभी अवधारणाएँ अब्बासी दौर में उत्पन्न हुई और औपचारिक रूप से स्थापित की गईं।

• फिक्कह में राजनीतिक प्रभाव

- विद्रोहियों की हत्या के आदेश
- खलीफ़ा की आज्ञापालन
- जिहाद का विचार
- मूर्तियों और مرتद के लिए दंड
- दासता और वेश्या के नियम
- जज़िया के कठोर प्रावधान

ये सभी फिक्कही ज्ञान में राज्य की विचारधारा का प्रतिबिंब हैं।

• फिक्कह एक दैवीय नहीं, बल्कि पूरी तरह मानव निर्मित

फिक्कह की सभी किताबों में मतभेदों का तूफ़ान यह दर्शाता है कि:

“फिक्कह मूलतः मानव की इज्तिहाद है, किसी वाही का बंधा हुआ नहीं।

3. इल्म-ए-क़लाम — ईमानी विश्वासों की व्यवस्थित स्थापना

मौजूदा इस्लाम के बुनियादी विश्वास:

- तक्दीर (भाग्य)
- अल्लाह के गुण
- कुरआन की सृष्टि
- अज़ूबे (मौज़िज़ात)
- शफ़ाअत (सिफ़ारिश)
- पाप और मुक्ति
- क़ब्र का अज़ाब
- क्रियामत के चरण

ये सभी विश्वास भी अब्बासी दौर में व्यवस्थित रूप से स्थापित हुए।

● मुतज़िला

- तर्क को आधार बनाना
- कुरआन को मखलूक मानना
- अल्लाह के न्याय और बुद्धिमत्ता पर चर्चा

● अहल-ए-हदीस

- परंपरा (रिवायत) को तर्क पर प्राथमिकता देना
- अल्लाह के गुणों को बाहरी अर्थों में लेना

नोट: अब्बासी दौर के अंतिम समय में यही दृष्टिकोण प्रमुख बन गया।

● अशआरा

- बाद में उन्होंने मुतज़िला और अहल-ए-हदीस के बीच का मार्ग अपनाया।

इस विश्वासों की पूरी संरचना में:

- ✓ धार्मिक कारक — कम
- ✓ राजनीतिक कारक — अधिक

दिखाई देते हैं।

4. शब्दावली और नहव — कुरआनी भाषा के नियम और व्याकरण बाद में विकसित

यह तथ्य अधिकांश मुसलमान नहीं जानते कि:

“अरबी भाषा के व्याकरण, कुरआन के अवतरण के समय मौजूद नहीं थे। बल्कि कुरआन के बहुत बाद में बनाए गए।”

कुरआन की पढ़ाई के लिए नियम बनाए गए, ना कि नियमों के लिए कुरआन अवतरित हुआ।

● नहवी स्कूल

दो प्रमुख स्कूल:

- बसरी स्कूल
- कुफ़ी स्कूल

अब्बासी दौर में ये दोनों नहवी स्कूल अरबी भाषा और फसाहत की मूल कुंजी बने।

● सिबवईह

- उसकी रचना "अल-किताब" अरबी व्याकरण का मूल ग्रंथ मानी जाती है।
- यह कुरआन के अवतरण के बहुत बाद की शैक्षिक कोशिश है।

● खलील बिन अहमद अल-फराहिदी

- इल्म-ए-वज़न और अर्वूद का संस्थापक
- उसने शब्दावली और शैली को व्यवस्थित किया
- ध्यान दें कि उसके बनाए नियमों के बिना कुरआन की तिलावत, किरआत और व्याख्या संभव नहीं थी।

निष्कर्ष: शब्दावली, नहव और व्याकरण कुरआन के साथ नहीं आए, बल्कि कुरआन की व्याख्या और पढ़ाई के लिए बहुत बाद में तैयार किए गए।

5. अब्बासी दृष्टिकोण — धार्मिक विज्ञानों का एक एकीकृत और समन्वित कारखाना

अब्बासी दौर में:

1. तफ़सीर
2. हदीस
3. फ़िक्ह
4. उसूल-ए-फ़िक्ह
5. शब्दावली
6. अकीदा
7. क़िरआत
8. बलाघत
9. इतिहास

ये सभी विज्ञान एक ही विचारधारा और प्रबंधन ढांचे में आकार पाते हैं।

और वह ढांचा है:

“राज्य केंद्रीकरण + धार्मिक पवित्रता + राजनीतिक आज्ञापालन”

इस ढांचे में ढलने वाले परिणाम:

- नबी का विचार — एक युद्धजीत शासक के रूप में
- कुरआन की व्याख्या — राज्य के हित के अनुसार
- हदीस का चयन — राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार
- फ़िक्ह का सिस्टम — खिलाफ़त की मजबूती के लिए
- अकीदा का सिस्टम — राजनीतिक आज्ञापालन के लिए
- शब्दावली और व्याकरण — कुरआन को “सबसे स्पष्ट” साबित करने के लिए

इस प्रकार अब्बासी दौर इस्लामी विज्ञानों का एक व्यवस्थित “कारखाना” बन जाता है।

6. क्या अब्बासी दौर के बिना वर्तमान इस्लाम की कोई रूपरेखा संभव थी?

अधिकांश आधुनिक विद्वानों और शोधकर्ताओं की प्रमुख राय:

- ✓ इस्लाम से संबंधित कोई भी मूलभूत तत्व अब्बासी दौर से पहले किसी भी निश्चित रूप में मौजूद नहीं था।
- ✓ अब्बासी दौर ने इस्लामी विज्ञानों का कोई संपूर्ण संग्रह नहीं किया, बल्कि मूल रूप से उसे रचा।
- ✓ आज हमारे पास जो इस्लाम है, वह “अब्बासियों का तैयार किया हुआ इस्लाम” है, न कि “मूल अवतरीत इस्लाम।”

अगर अब्बासी काल में व्यापक पैमाने पर संकलन, राज्यीय संरक्षण और धार्मिक विचारधारा की व्यवस्थित रचना और व्याख्या नहीं हुई होती, तो प्रचलित इस्लाम अपनी वर्तमान, सर्वव्यापी, सुव्यवस्थित और ऐतिहासिक रूप में शायद हमें उपलब्ध नहीं होता—जैसा कि उस समय कई धार्मिक, सामाजिक और वैचारिक आंदोलनों का इतिहास के पृष्ठों में खो जाना इसका प्रमाण है।

७. निष्कर्ष

इस अध्याय का मुख्य बिंदु यह है कि:

- ✓ इस्लामी विज्ञान दिव्य नहीं—इतिहासगत हैं।
- ✓ इन विज्ञानों की समग्र रचना अब्बासी काल में हुई।
- ✓ राज्यीय संरक्षण ने—वैज्ञानिक संरचना पर अपरिहार्य प्रभाव डाला।
- ✓ प्रचलित इस्लाम के पूरे वर्णन को—समय की राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार ढाला गया।
- ✓ वर्तमान इस्लामी विचार वास्तव में—अब्बासी खलीफाओं की वैज्ञानिक योजनाओं और व्यावहारिक प्रयासों का परिणाम है।

इस प्रकार पूरा “इस्लामी वैज्ञानिक विरासत” मानवीय प्रयासों और राजनीतिक प्रभावों का संयोजन है, न कि दिव्य, अवतरणीय मार्गदर्शन का स्रोत।

अध्याय ८ — प्रचलित इस्लामी वर्णन: अब्बासी निर्माण या अवतरणीय वास्तविकता? ■

परिचय:

आज दुनिया भर के मुसलमान जो “इस्लाम” अपनी पहचान, विश्वास और धार्मिक परंपरा के रूप में अपनाते हैं—

नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, फ़िक्रह, हदीस, सीरत, ख़िलाफ़त, जिहाद, शरीअत, तफ़सीर—यह सब एक संगठित, सुव्यवस्थित और नियमित “धार्मिक व्यवस्था” का अभिन्न हिस्सा हैं।

लेकिन जब इस पूरे धार्मिक तंत्र को इतिहास की कठोर कसौटी पर परखा जाता है, तो एक चौंकाने वाला प्रश्न उठता है:

? क्या यह प्रचलित धार्मिक तंत्र वास्तव में वही है जो सातवीं सदी के अरब में कभी “प्रकट” हुआ था?

या फिर यह आठवीं और नौवीं सदी के अब्बासी काल की योजनाबद्ध रचनात्मक संरचना है?

यह प्रश्न केवल अकादमिक जांच नहीं है, बल्कि यह इस्लाम के इतिहास की नींव को हिला देने वाला है। इस अध्याय में हम इसी प्रश्न का तर्कसंगत विश्लेषण करेंगे।

१. “अवतरणीय इस्लाम” और “ऐतिहासिक इस्लाम” — दो अलग रूप

आधुनिक अकादमिक अनुसंधान के अनुसार दो अलग-अलग “इस्लाम” पाए जाते हैं:

(१) कथित अवतरणीय इस्लाम

- वह इस्लाम जो कुरान अपने ग्रंथों में प्रस्तुत करता है, असल में संक्षिप्त, अत्यंत सामान्य, अस्पष्ट, गैर-संगठित और गैर-कानूनी पाठ पर आधारित है।
- जन्म से मृत्यु तक मुसलमानों के जीवन में जो प्रचलित क्रियाएँ और रीतियाँ हैं—जैसे अरबी नाम रखना, शिशु के कान में अज़ान देना, खतना, अकीका, बिस्मिल्लाह की परंपरा, सलाम करना, वज़ू, पाँच वक्त की नमाज़, रोज़ा, ज़कात, इहराम, हज, तीर्थयात्रा, काबा को चूमना, ज़मज़म का पानी पीना, इस्तिंजा, हिजाब, हदीस की पालन करना, तीन तलाक, मीराज का विश्वास, दाढ़ी रखना, मूँछ काटना, मिलाद, मिश्वाक, ईदें, फिटरा, कुर्बानी, वलीमा, तरावीह, जुम्मा का खुतबा, इक़ामत, रुक़िया, मदरसों की स्थापना, मस्जिदों का निर्माण, अज़ान, इमामत, जनाज़ा नमाज़, शव स्नान, कफन और दफ़न—इनमें से किसी एक क्रिया के लिए भी कुरान में स्पष्ट आदेश या कार्य पद्धति कहीं नहीं दी गई।

“जन्म से दफ़न तक मुसलमान जो कुछ भी करते हैं, वह सब परंपरा से है, कुरान से नहीं; यदि कुरान स्पष्ट और पूर्ण मार्गदर्शन था तो व्यावहारिक इस्लाम पूरा कुरान के बाहर क्यों बना?”

(२) इतिहास द्वारा निर्मित इस्लाम

- वह इस्लाम जो:
 - अब्बासी खलीफाओं,
 - फिक़हियों,
 - मुज्ताहिदों,
 - मुफ़सिरों,
 - मुहद्दिसों,
 - इतिहासकारों,
 - व्याकरणज्ञों और सीरत व मगाज़ी के निर्माताओं ने
 250 से 500 हिजरी के बीच पहले सृजित किया और फिर व्यवस्थित किया।
- यह इस्लाम:
 - पूर्ण फिक़ह और उसके सिद्धांत रखता है,
 - एक विस्तृत और सुव्यवस्थित शरीअत रखता है,
 - सीरत का पूर्ण ढांचा रखता है,
 - हदीस की भारी पुस्तकें रखता है,
 - कई तफ़सीर संग्रह रखता है,
 - मजबूत और व्यवस्थित अकीदत प्रणाली रखता है,
 - और अंततः खलीफ़ाई राजनीति के ऊपर धर्म का ताज पहनाता है।

अर्थात् वर्तमान प्रचलित इस्लाम = इतिहास द्वारा निर्मित इस्लाम, मूल अवतरणीय इस्लाम नहीं।

२. प्रचलित इस्लामी व्यवस्था के मूल स्तंभ और उनका ऐतिहासिक महत्व

- आज की इस्लामी व्यवस्था के मूल स्तंभ और आधार ये हैं:
(यहाँ से आगे मूल स्तंभों की सूची जारी होती है)

प्रचलित इस्लामी व्यवस्था: अब्बासी निर्माण या अवतरणीय वास्तविकता?

१. इबादत

- नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, वज़ू आदि का विवरण और कानूनी व्यवस्था अब्बासी काल में तैयार हुई।
- प्रारंभिक कुरान में केवल सामान्य उल्लेख था, लेकिन व्यावहारिक और कानूनी रूप बाद में दिया गया।

२. फ़िक़ह और कानून

- हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई और हनबली मदहब अब्बासी काल में स्थिर हुए।
- हुदूद, तज़ीरात, इर्तिदाद, जिहाद, जज़िया, गुलामी, राजनीतिक आज्ञापालन आदि राज्य की आवश्यकताओं के अनुसार तय किए गए।

३. हदीस और सीरत

- बुखारी, मुस्लिम, सनन अरबाअह, मौता आदि अब्बासी संरक्षण में संकलित हुए।
- ग्रंथ, रावी और घटनाएँ राज्य और राजनीतिक हितों के अनुसार ढाली गईं।

४. अकीदत और कलाम

- मुतज़लि, अहल-ए-हदीस और अशआरा का तंत्र अब्बासी काल में स्थिर हुआ।
- अहल-ए-हदीस का दृष्टिकोण प्रबल हुआ और सुन्नी अकीदत की सरकारी रूपरेखा स्थापित हुई।

५. कुरान और क़िरात

- प्रारंभिक पांडुलिपियाँ विखंडित और अधूरी थीं।
- उस्मानी मसहफ़ राजनीतिक एकता का साधन था; अब्बासी काल में रसम, नहव, इअरब और क़िरात का मानक प्रणाली स्थापित हुई।

६. शब्दावली, व्याकरण और البلاغة

- व्याकरण, शब्दावली और البلاغة अब्बासी काल में तैयार किए गए ताकि कुरान की क़िरात और व्याख्या संभव हो सके।

निष्कर्ष:

- वर्तमान प्रचलित इस्लामिक व्यवस्था = अब्बासी निर्माणित इस्लाम
- मूल अवतरणीय इस्लाम ≠ वर्तमान व्यापक, सुव्यवस्थित और कानूनी इस्लाम

२. प्रचलित इस्लामी व्यवस्था के मूल स्तंभ और उनका ऐतिहासिक महत्व

आज की इस्लामी व्यवस्था के मूल स्तंभ ये हैं:

1. हदीस
2. इल्म-ए-रिजाल
3. तफ़सीर
4. सीरत-ए-रसूल
5. फ़िक़ह
6. उसूल-ए-फ़िक़ह
7. इतिहास
8. अकीदत
9. इल्म-ए-क़लाम
10. शब्दकोश / लुग़त
11. कुरआन की क़िरात
12. व्याकरण / न्हव
13. खलीफ़त और जिहाद की राजनीतिक व्याख्याएँ
14. शरीअत का सुव्यवस्थित कानूनी ढांचा

मुख्य प्रश्न:

क्या ये स्तंभ कुरआन के साथ उत्पन्न हुए, या इन्हें अब्बासी दरबार ने स्थापित किया?

अनुसंधान का निष्कर्ष:

- ✓ इन स्तंभों का कोई भी मूल पांडुलिपि सातवीं सदी से मौजूद नहीं।
- ✓ इनका कोई विवरण कुरआनी पाठ में नहीं मिलता।
- ✓ प्रत्येक स्तंभ की व्यवस्थित रचना अब्बासी काल में हुई।
- ✓ ये स्तंभ अवतरणीय नहीं, बल्कि राजनीतिक संरक्षण में निर्मित ऐतिहासिक उत्पाद हैं।

3. अब्बासी काल: प्रचलित इस्लाम की असली कार्यशाला

अब्बासी राज्य के सामने तीन मुख्य चुनौतियाँ थीं:

1. राजनीतिक केंद्रीकरण
2. धार्मिक प्रतिष्ठा
3. जनता पर वैचारिक और कानूनी नियंत्रण

इसके लिए अब्बासियों ने:

- कुरआन की एक निश्चित क़िरात को सरकारी मानक बनाया।
- हदीस के नाम पर लाखों कथाओं को संग्रहित और छांटा।
- फ़िक़ह के चार मुख्य मदारिस को सरकारी मान्यता दिलाई।
- व्याकरण और नियम व्यवस्थित किए।
- सीरत-ए-रसूल का नया, सुव्यवस्थित वर्णन तैयार किया।

- जिहाद और संघर्ष की शरिया व्याख्याएँ तैयार कीं।
- अमीर-उल-मुमिनीन को अल्लाह के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया।
- दरबार को “इस्लामी विज्ञान की सबसे बड़ी नीति प्रयोगशाला” बना दिया।

४. क्या कुरआन का अवतरणीय पाठ अब्बासी निर्माण के प्रभाव में आया?

- ✓ वर्तमान कुरआन का मानक 200 हिजरी के बाद स्थापित हुआ।
- ✓ क़िरात की विश्वसनीयताएँ 300 हिजरी के बाद लिखी गईं।
- ✓ लिपि, बिंदु, हम्ज़ा, इरब, व्याकरणिक नियम सब अब्बासी काल में पूर्ण हुए।
- ✓ प्रारंभिक मक्की संग्रह में “मुहम्मद” शब्द अनुपस्थित था, जबकि मदीनी संग्रह में यह केवल 4 स्थानों पर आता है।
- ✓ शुरुआती पांडुलिपियों (सना, पेरिस, सेंट पीटर्सबर्ग, बर्मिंघम) में कई भिन्नताएँ थीं।

सवाल:

क्या आज जो कुरआन हमारे पास है, वह अवतरणीय रूप में पूरी तरह से आया है, या यह अब्बासी काल की रचनात्मक कार्यवाही का परिणाम है?

उत्तर:

“दोनों बातें आंशिक रूप से सही हैं और आंशिक रूप से अपूर्ण भी।”

मूल पाठ प्राचीन है, लेकिन वर्तमान रूप और संरचना अब्बासी काल की नई रचना का नतीजा है।

५. प्रचलित इस्लामी विचार का “राजनीतिक और सरकारी” स्वरूप — सबूत और संकेत

कई ठोस प्रमाण बताते हैं कि प्रचलित इस्लामी विचार = धर्म + राजनीति का सम्मिलन है।

अब्बासी काल की कुछ उदाहरणें:

- “इत्तिआत-ए-उलूल-अमर” की आयत का राजनीतिक इस्तेमाल
- रद्दी (مرتد) की सजा को राज्य की स्थिरता के लिए बनाया गया
- जिहाद और युद्ध को साम्राज्य विस्तार का धार्मिक आवरण दिया गया
- धिम्मी (अहले ज़िम्मा) पर जज़िया आर्थिक और सामाजिक नियंत्रण के लिए लागू हुआ
- नबी की सीरत में राजनीतिक चमत्कारों का समावेश
- बुखारी और मुस्लिम की हदीस संकलन राजनीतिक संरक्षण में हुईं
- हदीस में खलीफा का क़रीश से सम्बन्ध और अधिकार स्थापित किया गया
- अब्बासियों ने फातिमी, ख्वारिज़ और उमय्यद विचारों को दबाकर अपनी वैधता साबित की

निष्कर्ष:

प्रचलित इस्लामी विचार के स्तंभ सरकारी और राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार स्थापित किए गए।

६. क्या प्रचलित इस्लाम कोई वास्तविकता है या इतिहास निर्मित संरचना?

1. प्रचलित इस्लाम एक महान सांस्कृतिक परंपरा है, जिसे अरबों लोग अपनाते हैं।
2. लेकिन यह सीधे “अवतरणीय कुरआन” का प्रतिबिंब नहीं है।

- ✓ यह मानव प्रयासों
- ✓ राजनीतिक परिस्थितियों
- ✓ अब्बासी दरबार की नीतियों
- ✓ फिक्ह और हदीस विद्यालयों
- ✓ साहित्यिक और भाषाई संकलन का परिणाम है।

७. खंड ८ का सार — मुख्य निष्कर्ष

- ✓ प्रचलित इस्लाम का रूप अब्बासी काल में पूर्ण हुआ।
- ✓ सभी मूल विषय — हदीस, सीरत, फिक्ह, तफ़सीर, व्याकरण — इसी काल में स्थापित हुए।
- ✓ कुरआन का वर्तमान पाठ “अवतरणीय पाठ + अब्बासी संकलन” का मिश्रण है।
- ✓ वर्तमान इस्लामी विचार अवतरणीय नहीं; यह ऐतिहासिक और राजनीतिक है।
- ✓ “अवतरणीय इस्लाम” बहुत सीमित, अस्पष्ट और अव्यवस्थित था।
- ✓ जबकि प्रचलित इस्लाम एक पूर्ण, व्यवस्थित जीवन प्रणाली है, जिसे अब्बासी खलीफ़ाओं ने स्थापित किया।

निष्कर्ष:

हदीस, सीरत, और फिक्ह जैसी सभी अवधारणाएँ सीधे कुरआन से नहीं हैं, बल्कि बाद में मानव समझ, व्याख्या और विश्वासों के आधार पर विकसित हुई हैं।

नतीजा:

प्रचलित इस्लाम मूल अवतरणीय वास्तविकता नहीं, बल्कि अब्बासी काल की व्यापक और सुव्यवस्थित रचना है।

(1) कुरआन का (मज़हब) अवतरणीय ढांचा — अत्यंत सीमित और गैर-विशद

कुरआन:

- न तो सीरत देता है
- न शरिया का व्यवस्थित ढांचा
- न नमाज़ या हज के नियम
- न फिक्ही आदेश
- न खलीफ़ा
- न हदीस
- न पैगंबर की पुष्टि योग्य ऐतिहासिक जानकारी
- न मुहम्मद (इब्न अब्दुल्लाह) की मौजूदा कुरआन से सम्बद्धता

- न चमत्कारों का वास्तविक विवरण
- न सहाबा और ताबिआन का उल्लेख

निष्कर्ष: कुरआन एक व्यवस्थित धार्मिक/कानूनी पुस्तक नहीं था, बल्कि प्रतीकात्मक और काव्यात्मक शैली में संगीतमय prose का एक पाठ था।

(2) “मुहम्मद” शब्द का ऐतिहासिक महत्व — अवतरणीय नहीं

- मक्की कुरआन में यह शब्द अनुपस्थित है
- मदनी पाठों में केवल चार बार आता है
- प्रारंभिक हस्तलिपियों में विवादास्पद रूप से पाया गया
- ऐतिहासिक संदर्भ में यह एक उपाधि या विशेषण प्रतीत होता है, नाम नहीं

संभावना: इसे उपाधि के रूप में लेना वैज्ञानिक दृष्टि से संभव है, जो कई शोध द्वार खोलता है।

(3) हदीस का संसार — अब्बासी काल का मानसिक चमत्कार

- हदीस प्रणाली (संद, पाठ, रावी, इल्म-ए-रजाल, श्रेणी, जर्ह व तदील, व्याख्याएँ) 150 हिजरी तक अस्तित्व में नहीं थी।
- हदीसें राजनीतिक आवश्यकताओं के तहत बनाई गई:
 - खलीफा की वैधता
 - विरोधियों का नियंत्रण
 - विशिष्ट फिक्ही मदरसे का समर्थन
 - पैगंबर को आदर्श शासक दिखाना
 - खलीफा को पवित्र ठहराना

निष्कर्ष: हदीस = ऐतिहासिक विचार, नैतिक शिक्षा और राजनीतिक रणनीतियाँ, जिन्हें बाद में धार्मिक दर्जा दिया गया।

(4) सिरैट मुहम्मदी — ऐतिहासिक कथा, अवतरणीय सत्य नहीं

- इब्न इशाक का मूल पाठ अनुपस्थित
- इब्न हिशाम की संकलन राजनीतिक उद्देश्य से किया गया
- इसमें चमत्कार, युद्ध, मक्का-मदीना और हिजरत की घटनाएँ बाद में जोड़ी गईं
- मूल कुरआन में “सिरैट मुहम्मदी” नहीं थी

निष्कर्ष: सिरैट पैगंबर का वास्तविक जीवन नहीं, बल्कि मुसलमानों/अब्बासियों की इच्छाओं का साहित्यिक दस्तावेज़ है।

(5) इस्लामी फिक्ह — एक राजनीतिक-कानूनी ढांचा

- न कुरआन में फिक्ह

- न हदीस इसकी आधारशिला
- फतवा और शरिया राज्य व्यवस्था के लिए तैयार किए गए

उदाहरण:

- ارتداد की सजा
- حد قذف
- जज़िया
- गुलामी के नियम
- जिहाद की फिक्ह
- महिलाओं के अधिकार

निष्कर्ष: ये चारों फिक्ही मदरसे की राजनीतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों में विकसित नियम हैं।

(6) प्रारंभिक 150 वर्ष: शून्यता, अंतराल, अंधकार

- 7वीं सदी की मूल कहानी पूरी तरह गायब
- कोई मूल हस्तलिपि सुरक्षित नहीं
- समकालीन इतिहास का कोई सबूत नहीं
- पैगंबर की प्रत्यक्ष गवाही नहीं
- युद्धों का बाहरी प्रमाण नहीं
- मक्का-मदीना के भौतिक अवशेष अनुपस्थित

निष्कर्ष: इस्लाम का प्रारंभिक चरण वास्तव में एक “ऐतिहासिक डार्क ज़ोन” था।

(8) निष्कर्ष: **مَدِينَةُ الْإِسْلَام — एक महान सभ्यता, पर मानव निर्मित**

यह शोध यह नहीं कहता कि इस्लाम निरर्थक या मूल्यहीन है। बल्कि ऐतिहासिक और वास्तविक आधार पर, **مَدِينَةُ الْإِسْلَام** एक महान सभ्यता है—लेकिन यह **मानव की रचनात्मक गतिविधियों का परिणाम** है, न कि अवतरणीय, दिव्य या अलौकिक।

भविष्य की अनुसंधान संभावनाएँ:

1. कुरआन की मूल भाषा: क्या यह वास्तव में अरबी थी या सीरियाई-अरबी मिश्रण?
2. “रसूल” शब्द का वास्तविक अर्थ: क्या यह एक व्यक्ति है या सामूहिक भूमिका?
3. “मुहम्मद” शब्द — उपाधि या व्यक्तिगत नाम?
4. अब्बासियों के पूर्व-इस्लामी राजनीतिक प्रभाव
5. कुरआन और यहूदी-सामी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
6. सिरेट मुहम्मदी — केवल साहित्यिक पाठ या ऐतिहासिक तथ्य?
7. हदीस की ताद्वीन — राजनीतिक कथानक या ऐतिहासिक दस्तावेज़?

अंतिम सारांश (किस्त 9):

- कुरआन की वर्तमान रूपरेखा ऐतिहासिक, ताद्विनी और रचनात्मक प्रक्रिया का परिणाम है।
- हदीस, सिरैट, फिक्ह, तफ़सीर — सभी अब्बासी काल की रचनाएँ हैं।
- “मुहम्मद” शब्द उपाधि या विशेषण हो सकता है।
- मक्की संग्रह में यह शब्द अनुपस्थित है।
- प्रारंभिक हस्तलिपियाँ वर्तमान मानक पाठ से भिन्न हैं।
- अब्बासी इस्लाम दुनिया की सबसे सफल राजनीतिक-धार्मिक संरचनाओं में से एक है।
- धार्मिक इस्लाम = मानव निर्माण
- ऐतिहासिक इस्लाम = राजनीतिक कथानक
- अवतरणीय इस्लाम = सीमित, संक्षिप्त, अस्पष्ट और गैर-विधिक पाठ

मुख्य सवाल:

यदि मूल हस्तलिपियाँ मौजूद नहीं हैं और उपलब्ध सामग्री 300–500 साल बाद लिखी गई, तो क्या इसे “इतिहास” कहा जा सकता है या केवल “विश्वास”?

- क्या यह “दिव्य अवतरण” है या विजेता शासकों का सृजनात्मक कथानक?
- म॥॥॥ इस्लाम अवतरणीय “वही” नहीं, बल्कि अब्बासी काल की व्यापक सभ्यतावादी,
- राजनीतिक और बौद्धिक योजना का परिणाम है।

• उपसंहार / Epilogue

- यह पुस्तक किसी आस्था को तोड़ने नहीं, बल्कि इतिहास से प्रश्न करने की जुरत है। यह पाठक से विश्वास छीनने नहीं, बल्कि विवेक जगाने का आह्वान है। यदि कोई परंपरा प्रश्नों से डरती है, तो वह सत्य नहीं, सत्ता का निर्माण होती है। इतिहास वही नहीं होता जो बताया जाए, बल्कि वही होता है जो प्रमाणित हो सके। जहाँ मूल स्रोत अनुपस्थित हों, वहाँ दावे आस्था तो हो सकते हैं, इतिहास नहीं। धर्म जब प्रश्नों से ऊपर रख दिया जाए, तब वह ज्ञान नहीं, नियंत्रण बन जाता है। यह ग्रंथ उत्तर नहीं देता — यह दरवाज़े खोलता है। यह निष्कर्ष नहीं थोपता — यह सोचने की स्वतंत्रता देता है। अब निर्णय पाठक का है: क्या वह पूछेगा... या केवल मानेगा?
- क्योंकि इतिहास, अंततः, विश्वास से नहीं — प्रश्नों से आगे बढ़ता है।